MADRAS UNIVERSITY HINDI DEPARTMENT

PUBLICATION No. 2.

General Editor

Sahitya Ratna,

Dr. S. SHANKAR RAJU NAIDU, M.A., Ph.D., F.R.A.S. (London)

Honours in Hindi,

Professor & Head of the Department of Hindi,
University of Madras.

TIRUKKURAL

OF

TIRUVALLUVAR

IN

HINDI

TIRUKKURAL

OF

TIRUVALLUVAR

IN

HINDI

Sahitya Ratna,

Dr. S. Shankar Raju Naidu, M.A., Ph.D., F.R.A.S. (London),

Honours in Hindi,

Professor & Head of the Department of Hindi,

University of Madras.

FOREWORD

Dr. Sir A. Lakshmanaswami Mudaliar,

M.D., LL.D., D.Sc., D.C.L. (Oxon.), F.R.C.O.G., F.A.C.S.,

Vice-Chancellor,

University of Madras.

UNIVERSITY OF MADRAS

MADRAS

1958

मद्रास विश्वविद्यालय – हिन्दी विभाग – पुष्प २.

तिरुवळ्ळुवर

कृत

तिरुक्कुरळ

डा. सु. शंकर राजू नायुडु,
एम. ए., पी-एच. डी., एफ. आर. ए. एस. (लंदन),
साहित्य रत्न, प्रभाकर,
आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
मद्रास विश्वविद्यालय.

प्राक्कथन

सर ए. लक्ष्मणस्वामी मुदलियार,
एम. डी., एलएल. डी., डी. एससी., डी.सी.एल. (ऑक्सन), एफ़.आर.सी.ओ.जी.,
एफ.ए.सी.एस.,
वाइस चान्सलर,
मद्रास विश्वविद्यालय.

मद्रास विश्वविद्यालय,
मद्रास
१९५८

FOREWORD

ONE of the most outstanding of the Tamil classics is the Kural. The Kural contains the maxims of the Saint Tiruvalluvar, who is said to have been one of the greatest of poets and philosophers who lived about the 1st Century A.D. The message of Tiruvalluvar, as outlined in Kural, is a message for all humanity and at no time is such a message more needed than at present. The excellence of this work has been appreciated by great scholars of all lands and the Kural has been translated into many languages, outstanding of which are Latin, German, English and French.

Mr. Shankar Raju Naidu, Head of the Department of Hindi in the University of Madras, deserves the thanks of the public for having translated from the original Tamil this classic into Hindi. It is unfortunate that, while the treasures of the ancient Tamil classics are better known and better appreciated by scholars in western lands, very little attention has been paid to such works by scholars in other parts of India. It is to be hoped that this work, produced by one who is a good scholar both in Tamil and Hindi, will be appreciated by all scholars.

UNIVERSITY BUILDINGS,
CHEPAUK, MADRAS 5.
2nd May 1958.

A. L. Mudaliar,
Vice-Chancellor.

FOREWORD

ONE of the most outstanding of the Tamil classics is the Kural. The Kural contains the maxims of the Saint Tiruvalluvar, who is said to have been one of the greatest of poets and philosophers who lived about the 1st Century A.D. The message of Tiruvalluvar, as outlined in Kural, is a message for all humanity and at no time is such a message more needed than at present. The excellence of this work has been appreciated by great scholars of all lands and the Kural has been translated into many languages, outstanding of which are Latin, German, English and French.

Mr Shankar Raju Naidu, Head of the Department of Hindi in the University of Madras, deserves the thanks of the public for having translated from the original Tamil this classic into Hindi. It is unfortunate that, while the treasures of the ancient Tamil classics are better known and better appreciated by scholars in western lands, very little attention has been paid to such works by scholars in other parts of India. It is to be hoped that this work, produced by one who is a good scholar both in Tamil and Hindi, will be appreciated by all scholars.

UNIVERSITY BUILDINGS,
CHEPAUK, MADRAS 5.
2nd May 1958.

A. L. Mudaliar,
Vice-Chancellor.

प्राक्कथन

अत्युत्तम तमिऴ काव्य-ग्रंथों में से एक अतिविशिष्ट ग्रंथ है तिरुक्कुरळ। तिरुक्कुरळ में उस संत तिरुवळ्ळुवर के नीति-वाक्य हैं जो सर्वश्रेष्ठ कवियों तथा दार्शनिकों में से एक माने जाते हैं और प्रथम शताब्दी इस्वी के लगभग जीवित थे। तिरुवळ्ळुवर का संदेश जैसा कि तिरुक्कुरळ में उल्लिखित है, मानव मात्र के लिये एक महान संदेश है, और उसकी आवश्यकता आज से अधिक और कभी नहीं रही। इस ग्रंथ के गौरव की प्रशंसा सभी देशों के श्रेष्ठ विद्वान कर चुके हैं, और इसका अनुवाद अनेक भाषाओं में हो चुका है जिनमें से प्रधान हैं लैटिन, जर्मन, अंग्रेज़ी तथा फ्रेंच।

श्री शंकर राजू नायुडू ने जो मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष हैं, इस महान ग्रंथ का अनुवाद मूल तमिऴ से हिन्दी में प्रस्तुत किया है जिसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। जब कि पाश्चात्य देशों के महान विद्वानों को प्राचीन तमिऴ साहित्य भंडार के अमूल्य काव्य-ग्रंथों का अधिक परिचय प्राप्त है और वे इनका सम्मान करते हैं, भारत के अन्य भागों के मान्य विद्वानों का ध्यान ऐसे ग्रंथों की ओर बहुत कम गया है, यह दुर्भाग्य की बात है। आशा की जाती है कि यह प्रयास जो एक ऐसे व्यक्ति का है जिनको तमिऴ एवं हिन्दी दोनों में अच्छी विद्वत्ता प्राप्त है, सभी मान्य विद्वानों से सम्मानित होगा।

यूनिवर्सिटी बिल्डिंग्स,
चेपाक, मद्रास–५
२—५—१९५८

ए. एल. मुदलियार
वाइस चान्सलर

உள்ளுறை

அதிகாரம் | பக்கம்

I. அறம்

विषय सूची

*

3. இன்பம்

अध्याय पृष्ठ

३. काम

—: * :—

॥ भूमिका ॥

पॉल ब्रण्टन ने 'गुप्त भारत की खोज[1]' का वर्णन करते हुए आधुनिक भारत में जो उसे अनभिव्यक्त प्रतीत हुए, और जिन्हें वह संसार के सम्मुख उपस्थित करना चाहता था उन्हें अपने मनोनुकूल ढंग से लिपि-बद्ध किया है। परन्तु अभी तक प्राचीन भारत की खोज करके उस काल की स्थिति एवंमानव-जीवन का विश्लेषणात्मक वर्णन किसी ने नहीं किया है। यह कार्य है भी अत्यन्त दुष्कर। माना जाता है कि इसके लिए साधन या तो हड़प्पा व मोहें-जो-दड़ो आदि की खुदाई है, या प्राचीन शिलालेख व खण्डहर आदि हैं, या प्राचीन काल से आती हुई किंवदन्तियाँ व लोक-कथाएँ व गीत हैं, या वेद, पुराण, महाभारत, रामायण, तोल्काप्पियम, संघम-साहित्य आदि। प्राप्त वस्तु से ही अप्राप्त की कल्पना व गणना होती आयी है। यही वैज्ञानिक माने जाने पर भी वस्तुतः यह प्राणाली यथेष्ट नही है। यह कहना उपयुक्त ही है कि प्रकाश के कारण ही हमें अन्धकार का अनुभव होता है; यह कहना ठीक ही है कि अज्ञान के कारण ही ज्ञान का भान होता है; यह कहना उचित ही कि सद्गुण के कारण ही दुर्गुण से हम दूर जाने की इच्छा करते हैं; यह कहना माननीय ही है कि सुख का अनुभव करने के पश्चात् ही कोई दुख से मुँह मोड़ता है; यह कहना युक्तियुक्त ही है कि मृत्यु को देखकर ही मानव जीवन की ओर अधिकाधिक आकर्षित होता है, परन्तु यह भी सम्भव है कि कोई प्रकाश में इतना तन्मय हो जाय कि उसे अन्धकार का विचार ही न उत्पन्न हो, अज्ञान में इतना ग्रस्त हो जाय कि ज्ञान का उसे भान ही न हो, सद्गुणसम्पन्न इतना हो कि दुर्गुण उसे कहीं न दिखायी पड़े, सुख में इतना डूबा हो कि उसे दुख का पता ही न चले, और मृत्यु को देखकर इतना विचलित हो जाय कि उसे जीवन ही मिथ्या प्रतीत

---

1. 'Search in Secret India'—Paul Brunton

होने लगे। तात्पर्य यह कि व्यक्त के आधार पर किया गया अव्यक्त का अन्वेष आंशिक होता है, अपूर्ण होता है और कभी-कभी अनुचित व अप्राकृतिक भी। यह विश्लेषण प्राचीन भारत के सम्बन्ध में प्राप्त साधनों पर पूर्णतः घटता है। अभी तक प्राचीन भारत का या तो आंशिक ज्ञान प्राप्त हुआ है या अनुचित रूप देकर उसे अभिव्यक्त कर दिया गया है। कारण यही प्रतीत होता है कि प्राप्त विषयों में मानव का मन इतना बँध गया कि वह उसके पीछे की बात देखने का परिस्थितिवश साहस ही नहीं कर पाता। प्राप्त विषय को प्रस्तुत रूप में किसने, क्यों और कैसे रक्खा, इसका विचार स्पष्टतः कोई कर नहीं पाता। कोई कहता है कि अपने स्वार्थ के लिए रक्खा, कोई कहता है कलाकार अदृष्ट रूप से आ मिले, कोई कहता है प्राकृतिक शक्तियों ने तोड़-फोड़कर वह रूप दे दिया, तो कोई कहता है ईश्वर ने लोक-हितार्थ वैसा कर दिया। परन्तु बात यह है कि मानव ने जान-बूझकर प्रस्तुत रूप प्रदान किया है, मनोनुकूल ढंग से सब का निश्चय किया है, परिस्थितवश प्राप्त वस्तुओं को भिन्न-भिन्न रूपों में देखने का प्रयत्न किया है, विभिन्न वर्णों के चश्मों को पहनकर विभिन्न वस्तुओं को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखकर अपने-अपने निष्कर्षों को अभिव्यक्त किया है। अन्यथा एक ही विषय पर विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत कैसे होते, एक ही विषय को लेकर विभिन्न विचारों पर पहुँचकर वाक्-युद्ध क्यों करते?

मानव-जीवन की यथार्थता को सूचित करते हुए विभिन्न भाषाओं में विभिन्न रूपों में विचारकों ने अपने-अपने भाव अभिव्यक्त किये हैं। ये साधारणतः तात्कालिक परिस्थितियों के फलस्वरूप उद्भवित जन-कल्याण के लिए निर्मित भाव-विशेष हैं जो जनता के विकास में यथेष्ट रूप से साधक सिद्ध हुए हैं; परन्तु वे ही भाव-विशेष विभिन्न युद्धों के लिए तथा वैमनस्य उत्पन्नकरने में भी साधक सिद्ध हुए हैं जिनके कारण जन-कल्याण व लोक-विकास में यथेष्ट बाधा उपस्थित हो चुकी है। संसार के साहित्य में ऐसे ग्रन्थ विरले ही हैं जिनके

रचयिताओं ने प्राप्त से अप्राप्त की ओर जाने के अतिरिक्त अपने विचार-क्षेत्र को इतना विशाल बनाया हो कि देश-काल के बन्धनों से हटकर सभी देशों तथा कालों के लिए समानतः उचित व युक्तियुक्त सिद्ध हुआ हो। भारत में ऐसे कतिपय विचारक हो चुके हैं जिन्होंने इस ढंग से अपने विचारों को व्यक्त किया है। वे मानवमात्र के लिए सदा माननीय महत्तम आदर्श स्थापित कर गये हैं। इन्हीं विरले व्यक्तियों में से एक थे तिरुवल्लुवर जिन्होंने वस्तुतः वास्तविक भारत को अभिव्यक्त किया है। प्राचीन भारत की खोज करने पर यही विचार-विशेष गुप्त रूप से सर्वत्र व्याप्त प्रतीत होगा। वस्तुतः इसे मानवमात्र की सभ्यता की शास्वत ग्रन्थिका कह सकते हैं। यदि कहा जाय कि संसार की मानव-संस्कृति का मूल-सूत्र तिरुवल्लुवर के 'तिरुक्कुरळ्' में निहित है तो युक्तियुक्त ही होगा।

* * *

'तिरुक्कुरळ्' तमिष़ साहित्य का गौरव है और भारतीय साहित्य का भव्य भूषण है। विश्व साहित्य में इसका एक विशेष स्थान है। संस्कृत साहित्य में जो स्थान वेद व भगवद्गीता को प्राप्त है वही स्थान तमिष़ साहित्य में तिरुक्कुरळ् को प्राप्त है।[1] इसे 'तमिष़ वेद'[2] भी कहते हैं। यह एक अत्यन्त समादृत ग्रन्थ है। इसमें उल्लिखित तत्वों को हृदयंगम करने के पश्चात् कोई भी व्यक्ति इसकी महानता पर विश्वास किये बिना नहीं रह सकता।

---

1. "The Tirukkural of Tiruvalluvar is the pride of South India. What the Bhagvatgita is to the Sanskritist, the Tirukkural is to the Lover of Tamil". Sri V. R. Ramachandra Dikshitar's 'Tirukkural' with English Translation (p. IX) Preface.

2. 'தமிழ் மறை'—மறை के शाब्दिक अर्थ हैं—रहस्य, वेद, उपनिषद्, आगम्, आश्रय आदि। Tamil Lexicon, p. 3124, 3125).

तिरुक्कुरळ् के शब्द सौन्दर्य एवं अर्थ गाम्भीर्य का सुन्दर सामंजस्य सहृदय पाठक को स्वभावत: भावमग्न एवं रसमग्न कर देता है।

तिरुक्कुरळ् के अनेक नाम प्रचलित हैं जिनमें से एक 'तिरुवळ्ळुवर' भी है जो इसके लेखक का भी नाम है। वस्तुत: यह उचित ही है क्योंकि दोनों में इतना अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है, इतनी अभिन्नता है कि वे एक दूसरे से पृथक् नहीं किये जा सकते। तिरुक्कुरळ् तिरुवळ्ळुवर की एकमात्र कृति है। तिरुवळ्ळुवर के जीवन में तिरुक्कुरळ् पूर्णत: ठीक उतरता है। तिरुवळ्ळुवर को ही तिरुक्कुरळ् के लिए आदर्श रूप में ले सकते हैं। तिरुवळ्ळुवर का जीवन ही 'तिरुक्कुरळ्' था। तिरुवळ्ळुवर ही तिरुक्कुरळ् थे और वे आज हमारे सम्मुख एक ग्रन्थ के रूप में उपस्थित हैं और सदा रहेंगे। तिरुक्कुरळ् ही तिरुवळ्ळुवर है।

तिरुवळ्ळुवर का वास्तविक नाम अज्ञात है। कबीर, सूर, तुलसी आदि के समान अपने काव्य में इन्होंने अपने नाम को 'जड़ा' नहीं है। 'तिरु' एक आदरसूचक उपसर्ग मात्र है, और 'वळ्ळुवर'[1] उनकी जन्मगत एक अत्यन्त निम्न-कोटि की जाति का नाम है। विद्वानों का विचार है कि इन दो शब्दों के संयोग से ही कवि का प्रस्तुत नाम प्रचलित हुआ। सन्त कवि कबीर के समान ही इनके जन्म के सम्बन्ध में भी अनेक प्रकार की किंवदन्तियां प्रचलित हैं।[2]

---

1. வள்ளுவன் (वळ्ळुवन) 1. A paraiya caste, the members of which are royal drummers, and priests for paraiyas. 2. One who foretells events by Omens. 3. An officer who proclaims the king's commands. 4 The author of 'Kural' (Tamil Lexicon, P 3552).

2. "A wild and utterly incredible tradition assigns him a Brahmin father and a low caste mother.." G. U. Pope, 'The Sacred Kural', P. ii. Introduction.

तिरुक्कुरळ् के प्रारम्भिक छन्द के आधार पर इनके माता-पिता का नाम 'आदि-भगवन' माना जाता है। छन्द यह है :—

"अकर मुदल वेझुत्तेल्ला मादि
भगवन् मुदट्रे युलहु।"

वस्तुत: निश्चित् रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता। इतना अवश्य ज्ञात है कि वे कबीर के ही समान जुलाहे का कार्य करते थे और उन्होंने मद्रास नगर के पर्यन्तभाग मयिलापुर (मयिल=मोर, पुर=नगर) की एक कुटि में सपत्नीक सानन्द जीवन व्यतीत किया। यह स्थान समुद्र तट के अति निकट होने के कारण इनका अनेक विदेशियों से मिलना-जुलना रहता था। साथ-साथ दक्षिण भारत का यह एक प्रधान स्थान होने के कारण सभी प्रकार के लोगों का यहाँ आना-जाना सदैव रहा जिससे इनका सम्पर्क तात्कालिक सभी विचार-धाराओं के विभिन्न व्यक्तियों से बना रहा। हिन्दू, जैन, बौद्ध आदि मत के विभिन्न सिद्धान्त इनको ज्ञात थे और उनके दैनिक-जीवन से ये पूर्ण परिचित थे। इसी कारण से इनकी विचार-धारा अत्यन्त व्यापक हो सकी।

इस प्रकार जीवन व्यतीत करते हुए तिरुवळ्ळुवर ने अपने एक मात्र ग्रन्थ 'तिरुक्कुरळ्' की रचना की, कदाचित् पड़ोसियों की प्रार्थना पर, जैसाकि कुछ लोग मानते हैं। 'कुरळ्'[1] का मूल अर्थ है 'छोटा'। यह एक छोटे छन्द का भी नाम है जिसमें दो चरण होते हैं। प्रथम में चार சீர் 'पद' व 'गण' होते हैं तथा द्वितीय में केवल तीन। इसकी रचना का नियम अत्यन्त क्लिष्ट है। एक कुरळ् में एक भाव-विशेष पूर्णत: निहित रहता है। 'तिरु' एक आदर-सूचक

1. குறள் 'Kural'—1. Shortness, dwarfishness; 2. Dwarf, about 2 ft. high; 3. Imp, goblin; 4. Smallness, 5. A line consisting of two 'Cir'; 6. Distich of a 'Venba' metre, the first line consisting of four and the second of three feet; 7. Tirukkural—(Tamil Lexicon PP. 1046-47)

प्रत्यय, एवं 'कुरळ्' एक छन्द का नाम होने के कारण इस ग्रंथ का नाम तिरुक्कुरळ् पड़ा। ग्रन्थ का क्या नाम रक्खा कवि ने, यह अज्ञात है। यह एक नीति ग्रन्थ है जिसमें कुल १३३० कुरळ् हैं। आश्चर्य की बात यह है कि एक का भी पाठ-भेद प्रचलित नहीं है और ग्रन्थ जिस रूप में आज उपस्थित है वही उसका मूल रूप था, यद्यपि ग्रन्थकर्ता एवं ग्रन्थ के मूल नाम अप्राप्य हैं। ग्रन्थ के तीन खण्ड हैं—धर्म, अर्थ, एवं काम (अरम्, पोरुळ्, इन्बम्); और इनमें क्रमशः ३८, ७० एवं २५ अध्याय हैं तथा प्रत्येक अध्याय में १० कुरळ् हैं। 'धर्म' में प्रस्तावना के रूप में सर्वेश-स्तुति से प्रारम्भ करके 'मोक्ष' (वीडु) की भी अप्रत्यक्ष रूप से सूचना देते हुए गार्हस्थ्य-धर्म एवं सन्यास-धर्म के स्पष्टीकरण के पश्चात् एक अध्याय में कर्म सिद्धान्त को भी व्यक्त कर दिया गया है। 'अर्थ' में सम्राट् व शासन, अमात्य व राजनीति के विभिन्न अंग तथा शासक व शासित के शेष कार्यों का विशद वर्णन किया गया है। 'काम' में प्रेमी-प्रेमिका के पूर्वराग व गुप्त प्रेम तथा सतीत्व का, अर्थात् सम्भोग तथा वियोग शृंगार का पुंखानुपुंख रूप से चित्रण किया गया है। इस प्रकार कवि ने अपनी कृति में मानव के व्यक्तिगत, गार्हस्थ्य एवं सामूहिक जीवन के आदर्श को प्रस्तुत करने का सफल प्रयत्न किया है। इससे स्वतः सिद्ध हो जाता है कि तिरुवळ्ळुवर एक आदर्शवादी दार्शनिक, राजनीति-विदग्ध तथा उत्तम कोटि के रसिक भी थे।

तिरुवळ्ळुवर ने अपने जीवन में इस कृति में कथित सब आदर्शों को कार्य रूप में परिणत कर दिखाया है। इनके गार्हस्थ्य-जीवन के सम्बन्ध में अनेक कथाएँ प्रसिद्ध हैं। वासुकी इनकी पत्नी का नाम था। विवाह के पूर्व वासुकी के पिता ने तिरुवळ्ळुवर के आदर्श-जीवन से प्रभावित होकर अपनी पुत्री को तिरुवळ्ळुवर से अर्धांगिनी के रूप में ग्रहण कर लेने की अभ्यर्थना की। तिरुवळ्ळुवर ने एक बालू के पुलिन्दे की ओर सूचित करते हुए अपनी स्वीकृति इस शर्त पर दी कि यदि वह इसे पकाकर उसे भात बना दे तो मैं पाणिग्रहण

के लिए प्रस्तुत हूँ। वासुकी ने आत्म-विश्वास के बल पर वैसा ही करके मानो यह सिद्ध कर दिया कि तिरुक्कुरळ् में जो कहा गया है—

> 'ईश न, नित उठ पूजे पति को,
> बरसो कह दे तो बरसे।'[1] (१-६-५)

सत्य है।

विवाह के उपरान्त एक दिन कोई एकव्यक्ति जिसे यह सन्देह था कि एक साधारण जुलाहा इतना श्रेष्ठ कैसे हो सकता है, इनके पास आया और उसने प्रश्न किया—"गार्हस्थ्य-जीवन श्रेष्ठ है या सन्यास?" इसका शब्दों में उसे कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। तिरुवळ्ळुवर के गार्हस्थ्य-जीवन के निरीक्षण से ही उत्तर प्राप्त करने के लिए उसे छोड़ दिया। कुछ समय पश्चात् जब वासुकी कुएँ से पानी खींच रही थी, इन्होंने उसे बुलाया। वासुकी जल से पूर्ण पात्र को कुएँ में ही आधी खिंची छोड़कर तुरन्त अपने पति के सम्मुख आ उपस्थित हुई। वह पात्र उसी अवस्था में वासुकी के लौटने पर मिला! और एक बार जब प्रातःकाल के समय ठण्डा भात[2] खाते-खाते इन्होंने कहा कि भात बहुत गरम होने के कारण मुँह एक जलने लगा, वासुकी बिना किसी हिचकिचाहट के तुरन्त पंखा झलने लगी। दिन प्रकाशपूर्ण मध्याह्न के समय कपड़ा बुनने का काम करते हुए अपनी ढरकी को गिराकर उसे खोजने के लिए इन्होंने दीपक मांगा तो वासुकी ने बिना कुछ पूछे-ताछे दीपक ला दिया। इस प्रकार की अनेक अन्य घटनाओं को देखकर प्रश्न का उत्तर आपसे आप प्रश्नकर्ता को प्राप्त हो गया कि ऐसी पत्नी हो तो गार्हस्थ्य श्रेष्ठ है, अन्यथा सन्यास[3]।

---

1. தெய்வந் தொழாஅள் கொழுநற் றொழுதெழுவாள்
   பெய்யெனப் பெய்யு மழை."—(குறள 1-6-5).
2. देखिये—पृ० ४४१—'विश्ववाणी', दिसम्बर १९४६.
3. சற்றேனும்--ஏறுமாறாக விருப்பாளே யாமாயின்
   கூறாமற் சன்னியாசங் கொள்." (தனிப்பா. 1-95-14)
   तनिक भी—हो विषम पत्नी तो बिन कह ग्रहण कर सन्यास।

कविवर की अर्धांगिनी के अवसान के समय की एक अद्भुत् घटना अति प्रसिद्ध है। मृत्यु-शैय्या पर लेटी हुई वासुकी को अपनी ओर असाधारण रूप से चिन्तामग्न नेत्रों के साथ अवलोकन करते हुए देखकर तिरुवल्लुवर ने उसका कारण पूछा। वासुकी ने सविनय उत्तर देते हुए अत्यन्त मृदुल स्वर में कहा—'विवाह के उपरान्त प्रथम भोज के समय ही आपने मुझे एक आज्ञा दी थी कि भोजन के समय एक सूई और एक छोटे पात्र में स्वच्छ जल रख दिया करो—और मै वैसा करती आयी। पर मैं उसका मर्म अभी तक न समझ सकी क्योंकि आपने कभी उनका प्रयोग नहीं किया।" तिरुवल्लुवर ने उत्तर दिया—"वे इसलिए कि यदि कोई चावल का कण पृथ्वी पर गिर पड़े तो सूई से उठाकर स्वच्छ जल में शुद्ध कर लिया करूँ।" उत्तर से सन्तुष्ट हो वासुकी स्वर्ग सिधारी। इनसे इतना अवश्य सिद्ध होता है कि तिरुवल्लुवर के आदर्श महान् थे और प्राचीन तमिष़ संस्कृति का स्तर अत्यन्त श्रेष्ठ था।[2]

विद्वानों का विचार है कि तिरुवल्लुवर ईसा की द्वितीय शताब्दी में अवतरित हुए। श्री के. एन. शिवराज पिल्लै का मत है कि ईसा की प्रथम शताब्दी में इनका जन्म हो चुका था। श्री टी. एस. कन्दसामी मुदलियार की युक्तियुक्त सम्मति यह है कि ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी ही तिरुवल्लुवर का समय है।[2] डा. जि. यू. पोप तिरुक्कुरळ् में कतिपय ईसाई सिद्धान्तों को जो

1. "Sir A. Grant treating of Greek morality, 'before the birth of Moral Philosophy' says truly: 'It is obvious that such a code as this could only arise among an essentially moral and noble race.' This is precisely what I claim for the Tamil speaking peoples, and on the same ground, we shall not do all the good we might do among them till we unreservedly recognise this."—(P. xii) 'Introduction' to 'The Sacred Kural' by Dr. G. U. Pope.

2. 'देखिये—आराय्च्चि मुन्नुरै'—"तिरुक्कुरळ्—परिमेलष़हरुरै"—पृ० ९

साधारण मानव-जीवन के ही सिद्धान्त हैं—यत्रतत्र देखकर उनके आधार पर कल्पना करते हैं कि इसके रचयिता का काल आठ और दस सौ ईस्वी के बीच कहीं रहा होगा[1] और अपने अभिप्राय को सिद्ध करने के लिए कोई विशिष्ट कारण देना उन्होंने अनिवार्य नहीं समझा। श्री वी. आर. रामचन्द्र दीक्षितर का दृढ़ विचार है कि ग्रन्थ-रचना व ग्रन्थकार का काल ईसा पूर्व द्वितीय अथवा प्रथम शताब्दी ही है।[2] तिरुवळ्ळुवर का काल कुछ भी क्यों न हो, वे कवि शिरोमणि 'तिरुक्कुरळ्' जैसे ग्रन्थ की रचना करके काल की परिधि को लाँघकर अमर हो गये हैं।

साधारणतः संसार में मानव के अस्थायी भौतिक शरीर के अवसान के पश्चात् ही स्थाई यश-शरीर दृष्टिगोचर होता है। भवभूति ने जो उत्तर-राम-चरित को देखते हुए महाकवि कालिदास से भी श्रेष्ठ ठहराये जाते हैं[3], इसी कारण कहा था—

"ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां,
जानन्तु ते किमपि, तान् प्रति नैष यत्नः।
उत्पस्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा
कालोह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥"

मालती माधव १—६

---

1. "I think between A. D. 800 and 1000 is its probable date"—P. iv Introduction to 'The Sacred Kural' by G. U. Pope.

2. "It is now nearly twenty years since I published my 'Studies in Tamil Literature and History', where I have assigned the first or Second Century B. C. as the date of its (Tirukkural's) composition. I find no reason to change that view." P. ix, Preface to 'Tirukkural with English Translation' by Sri V. R. Ramachandra Dikshitar, M. A., Professor of Indian History and Archaeology, University of Madras.

3. "उत्तरे राम चरिते भवभूतिर्विशिष्यते।"

परन्तु तिरुवळ्ळुवर के यश-शरीर का प्रकाश उनके जीवन-काल में ही प्रज्ज्वलित हो उठा था। उनके समकालीन नक्कीरर, चात्तनार, कपिलर, परणर आदि अनेक तमिष़ महाकवियों ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। भगवान शिव की कविता के दोष को, उनके ज्वलन्त तृतीय नेत्र को प्रत्यक्ष करने पर भी निडर होकर, "तृतीय नेत्र को दिखाने पर भी दोष दोष ही है"[1] ऐसा शिव के ही सम्मुख कहने का सामर्थ्य जिस कवि-शिरोमणि नक्कीरर में था, उन्होंने भी तिरुवळ्ळुवर की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। इनके अतिरिक्त केरळ्-सम्राट् चेंगुट्टुवन के अनुज तथा चिलप्पदिहारम् महाकाव्य के रचयिता श्री इळंगोवडिहळ् तथा अन्यान्य अनेक श्रेष्ठ कवियों ने हृदय से इनकी प्रशंसा के गीत गाये हैं। तमिष़ के प्रसिद्ध आलोचक एवं लेखक श्री चेल्वकेशवराय मुदलियार ने तिरुवळ्ळुवर को तमिष़ की 'गति-द्वै'[2] में से एक माना है। अनेक भारतीय एवं पाश्चात्य भाषाओं व साहित्यों के अध्ययन के पश्चात् आधुनिक तमिष़ साहित्य के कवि-सम्राट् स्वर्गीय श्री सुब्रह्मण्य भारती ने कहा है कि तिरुवळ्ळुवर जैसे श्रेष्ठ कवि को और कहीं नहीं देखा।[3] तिरुवळ्ळुवर का स्थाई यश इसीसे

---

1. "நெற்றிக கண்ணைக காட்டினும் குற்றம் குற்றமே"—நககீரர்.

2. "தமிழககுக கதியாவாா இருவா எனச சில புலவர் புகழ்வதுணடு. கதி எனபதில் க:ாணைக கம்பநாட்டாழ்வாருக்கும், தி:ாணைத திருவள்ளுவருககும ஞாபக சூத்திரமாகக கொள்ளல் வேணடும."–P. 7. 'Tiruvalluvar' by Sri Chelvakesavaroya Mudaliar M. A.

3. "யாமறிநத புலவரிலே கம்பனைப்போல்
வள்ளுவர்போல் இளஙகோவைப் போல்,
பூமிதனில யாஙகணுமே பிறநததில்லை,
உண்மை வெறும் புகழச்சி இல்லை."

जो ज्ञात हैं कविगण मुझे, उनमे न कम्बर के समान,
तिरुवळ्ळुवर के सम न, अथवा कवि इळङ्गो के समान।
जन्मे न इस भू पर कहीं भी आज तक इनके समान,
नहि डींग कोरी, सत्य है यह सन्तवाणी के समान॥

सिद्ध हो जाता है कि उनके समय में तथा तदनन्तर प्रकट सभी श्रेष्ठ रचनाओं में तिरुक्कुरळ् की सुगन्धि व सौष्ठव स्पष्टत: सम्पृक्त हुआ है। कहने का तात्पर्य यह है कि तमिष़ के तुलसी कविवर कम्बर जैसे श्रेष्ठ प्राचीन महाकवियों से लेकर आधुनिक काल के 'भूषण' श्री सुब्रह्मण्य भारती तक सभी ने तिरुक्कुरळ् के छन्दों को उसी रूप में एक पुष्प के समान, अथवा उसके एक खण्ड को पंखड़ी के समान स्वरचित काव्य कृति रूपी सुन्दर सरस-माला में पिरोया है जिससे वह कृति तिरुक्कुरळ् के उत्तम सौरभ से सुरभित हो उठी है।

कवियों द्वारा तिरुक्कुरळ् के प्रथम-स्वीकरण (अरंगेट्रम्) के सम्बन्ध में एक अपूर्व कथा प्रचलित है। तिरुवळ्ळुवर के समय में पाण्ड्य प्रदेश की राजधानी मदुरा में तमिष़ के कवियों का एक 'संगम्'[1] था जो प्रागैतिहासिक काल से कार्य करता आ रहा था। इसमें यह प्रथा थी कि कवि के काव्य-सौष्ठव को मापने के लिए अलौकिक शक्ति से युक्त, पानी पर तैरते हुए एक शिव-प्रदत्त तख्ते (संगप्पलहै)[2] पर उसकी कृति को रखकर उसका मूल्यांकन किया जाता था। ऐसा

---

1. तमिष़ का प्रथम सगम् प्रागैतिहासिक काल मे ४४४० वर्ष तक रहा जिसमे कुल ५४९ कविगण सम्मिलित थे। ८९ सम्राटों का आश्रय इस सगम् को प्राप्त हुआ था। द्वितीय सगम् ने ३७०० वर्षों तक कार्य किया। इसमे कुल ३७०० कवियों ने भाग लिया, और ५९ सम्राटों का आश्रय इसे प्राप्त हुआ। प्रस्तुत सघम् तृतीय था जिसमे कुल ४९ सदस्य थे। ४४९ कवियो ने अपनी रचनाएँ स्वीकरणार्थ समर्पित कीं। इस संगम् के अन्त का कारण कुछ लोग तिरुवळ्ळुवर-कृत तिरुक्कुरळ् की अवहेलना ही मानते हैं, जब कि प्रथम दो सगम् की समाप्ति का कारण जल-प्रलय माना जाता है।

2. சங்கப்பலகை (संगप्पलहै)—Miraculous seat capable of accommodating only deserving scholars, believed to have been granted by Siva at Madura, to the Sangam Poets.

कहा जाता है कि जब तिरुक्कुरळ् अन्य ग्रन्थों के साथ उस "संगप्पलहै" पर रखा गया तो अन्य सभी ग्रन्थ जल में निमज्जित हो गये, और केवल तिरुक्कुरळ् ही जल के ऊपर तैरता रहा। इस कथा में सत्य का अंश चाहे कितना ही क्यों न हो, पर यह अवश्य माननीय है कि इसकी तुलना में तात्कालिक अन्य कोई कृति नहीं ठहरती। यह अपने ढंग की एक ही कृति है। कविवर परणर ने तिरुक्कुरळ् की तुलना वामनावतार से की है। भगवान ने वामनावतार लेकर दो ही पग में सम्पूर्ण विश्व को नाप डाला था। इसी प्रकार 'पौने दो चरणों' का प्रत्येक कुरळ् एक भाव-लोक को अपने में अन्तर्लीन किये हुए है। दूसरे एक सत्कवि ने तिरुक्कुरळ् में विभिन्न विषयों की विशदता को अलौकिक काव्यगत सौन्दर्य से पूर्ण[1] व्यक्त किया हुआ पाकर कहा है :—

सभी अर्थ इस में समाप्त,
जो इस में है न, नहीं अन्यत्र ॥[2]

यहाँ "अर्थ" से वही भाव है जो "वागर्थाविव सम्पृक्तौ, वागर्थ प्रतिपत्तये" के "अर्थ" से है।

तिरुक्कुरळ् पर "क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति। तदेव रूपं रमणीयतायाः॥" वाला सिद्धान्त पूर्णतः घटित होता है। जितना ही इसमें पैठकर अर्थ गाम्भीर्य का अन्वेषण करते हैं उतना ही नवीन अर्थ का प्रकाश निस्सृत होता हुआ प्रकट होता है। यह प्रकाश पाठक में उसके ज्ञान, अनुभव एवं व्यक्तिगत विचार-धारा की

---

1. "Musaco Contingens Cuncta lopre" *i. e.*, "touching all things with poetic Grace"—G. U. Pope.

2. "எல்லாப் பொருளும் இதன்பாலுள ; இதன்பால்
இல்லாத எப்பொருளும் இல்லையால்."

(மதுரைத் தமிழ்நாயனார்.)

गम्भीरता के अनुपात में होता है। इसकी एक विशेषता यह है कि इसके भाव गम्भीर व नितनूतन होते हुए भी अत्यन्त सरल एवं स्पष्ट हैं।

तिरुक्कुरळ् एक मुक्तक काव्य है। इसका प्रत्येक पद पृथक्-पृथक् मोती के सदृश विशिष्ट व्यक्तित्व से युक्त है। प्रत्येक पद स्वतन्त्र रूप से पूर्ण अर्थ का द्योतक है। ऐसा होते हुए भी इसकी रचना में आद्योपान्त एक सम्बन्ध सूत्र व धारावाहिकता भी है, जो यह सिद्ध करती है कि यह एक संग्रह ग्रन्थ नहीं, अपितु एक पूर्ण क्रमबद्ध रचना है। इसका प्रत्येक अध्याय पूर्वोक्त अध्याय से, एवं प्रत्येक पद पूर्वोक्त पद से विकसित ज्ञात होता है। दूसरे शब्दों में इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यह मोक्ष प्राप्ति के लिए एक प्रशस्त सोपान है जिसके तीन खण्ड हैं—धर्म, अर्थ एवं काम। इसका एक-एक पद उस प्रशस्त सोपान का एक-एक पद है। जिस प्रकार सोपान का प्रत्येक पद अपने में पूर्ण होता हुआ भी निम्न पद के पश्चात् एवं आगामी पद के पूर्व होता है और इस प्रकार एक क्रम-बद्धता रहती है, उसी प्रकार तिरुक्कुरळ् के पदों में भी एक क्रम-बद्धता, एक नियम व भावों का क्रमिक विकास हम देख सकते हैं।

तिरुक्कुरळ् एक 'सामान्य नीति-ग्रन्थ'[1] है। यह किसी मत-विशेष, काल-विशेष अथवा स्थान-विशेष का ग्रन्थ नहीं है। यह ग्रन्थ हिन्दू, जैन, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम आदि सभी से समादृत हुआ है। जिस प्रकार यह ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में समादृत हुआ था, उसी प्रकार आज भी हो रहा है, और सदा होता रहेगा। सभी मनुष्य समान रूप से इसका अध्ययन व सम्मान करते हैं। भारत में ही नहीं प्रत्युत पाश्चात्य एवं प्राच्य देशों में भी इसका नाम सादर लिया जाता है। इसी हेतु यह रचना 'सम-धर्म-ग्रन्थ'[2] की संज्ञा से, और

1. பொது நீதி நூல்—Common Ethical Code
2. 'சமயப் பொது நூல்'

इसके रचयिता 'दैविक कवि', 'भगवान', व 'पिता'[1] आदि नामों से स्मरण किये जाते हैं। इसमें जो तत्त्व व्यक्त किये गये हैं वे सभी मनुष्यों, देशों व कालों के लिए सत्य ठहरते हैं। अतः इसे "सत्य वचन"[2] की संज्ञा से भी सम्मानित किया जाता है।

यद्यपि तमिष़ भाषा में आचरण एवं नीति के ग्रन्थ अनेकानेक हैं, तथापि उनमें तिरुक्कुरळ् का स्थान कुछ विलक्षण ही है। निकटतः दो सहस्राब्दियों के पूर्व रचित ऐसा अपूर्व काव्य-ग्रन्थ कदाचित् अन्य किसी भाषा-साहित्य में अप्राप्य है। इन सबका यही कारण है कि यह ऐसा विशिष्ट नीति-ग्रन्थ है जो भाव, भाषा एवं साहित्यिक सौंदर्य से पूर्ण है, और जिसके साधु-लेखक ने मनुष्य के सामान्य आचरण एवं व्यवहार भूमि पर अवस्थित होकर अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा एवं सुविशाल विचार-धारा से प्रेरित सर्वग्राह्य मानव-धर्म के तत्वों को सुन्दर समास शैली में स्पष्टतः व्यक्त किया है। अनेकानेक गम्भीर भाव-चित्रों को अपने मानस-पटल पर अंकित करके उन्हें उसी रूप में न्यूनातिन्यून शब्दों में चित्रित करने में तिरुवळ्ळुवर विश्व साहित्य में अद्वितीय हैं[3]। कोई भी सहृदय पाठक तिरुक्कुरळ् को आद्योपान्त पढ़कर उनके तत्त्वों को हृदयंगम करने के पश्चात् उक्त कथन की सत्यता को माप सकता है। कवि इडैक्काडर ने ठीक ही कहा है :—

'सरसों को छिद, सत सागर भर,
काटै मध्य कुरळ्।'[4]

---

1. 'தெய்வப் புலவா', 'நாயனா'

2. 'பொய்யா மொழி.' "செயயா மொழிககும் திருவளளுவர் மொழிந்த
பொய்யா மொழிககும் பொருள் ஒன்றே." (வெள்ளி வீதியார்)

3. "It is truly an apple of gold in a net-work of silver."
(P. vi—Introduction to 'The Sacred Kural' by G. U. Pope)

4. "கடுகைத துளைத்தேழ் கடலைப் புகட்டிக
குறுகத தரித்த குறள." (இடைக்காடா)

इस समालोचना-सूक्ति को शिथिल मानकर सरस्वती का साक्षात् अवतार मानी जानेवाली तमिष़ कवयित्री अव्वयार ने कुरळ् की अपार शक्ति का अवलोकन करके कहा—

'अणु को ही छिद, सत सागर भर,
काटै मध्य कुरळ् ।'[1]

हिन्दी साहित्य के प्रेमी कविवर बिहारीलाल के दोहों में उपस्थित "गागर में सागर" के गुण से परिचित ही हैं। बिहारी के दोहों के सम्बन्ध में कहा गया है—

"सतसैया के दोहरे, अरु नावक के तीर।
देखत के छोटे लगैं, घाव करैं गम्भीर ॥"

यही गुण हम तिरुवळ्ळुवर में अत्यधिक मात्रा में पाते हैं।

विचार स्वातन्त्र्य की भावना इस नीति-ग्रन्थ की अपनी एक अनुपम विशिष्टता है। ध्यान देने का विषय है कि यह कोई परम्परागत अथवा एक-पक्षीय धर्म-ग्रन्थ तो है ही नहीं। सम्पूर्ण ग्रन्थ में रचयिता ने अपने विभिन्न विचारों को स्पष्टतः व्यक्त करके अन्तिम निर्णय का अधिकार पाठक को ही दे दिया है। कवि ने स्वयं ही कहा है—

जो भी सुनें किसी भी जन से,
उसमें सत्य निरखना ज्ञान।[2]

---

1. "அணுவைத துளைத்தேழ் கடலைப் புகட்டிக்
குறுகத தரித்த குறள்." (ஔவையார்)

2. "எப்பொருள் யார்யார்வாயக் கேட்பினு மப்பொருண்
மெய்ப்பொருள் காண்ப தறிவு."

(2-43-3)

तिरुवळ्ळुवर कहते हैं कि कोई व्यक्ति कितना ही महान् क्यों न हो, मानव को चाहिए कि उसके विचारों को ध्यान से सुनकर उन पर स्वयं चिन्तन एवं मनन करे, और सत्य मात्र को स्वीकार करे। तात्पर्य यह है कि कथित विषय का विवेचन स्वयं भी अपनी बुद्धि से करके वास्तविकता की छान-बीन करे, और युक्तियुक्त हो तो उस पर विश्वास लावे, अन्यथा नहीं। यही ज्ञान कहलाता है। अन्धानुकरण अज्ञान का चिह्न है। कबीर ने भी कहा है—

"लेना होय सो लेय ले,
कही-सुनी मत मान।"

एक दूसरे स्थान में तिरुवळ्ळुवर ने यहाँ तक कह दिया है—

किसी वस्तु का गुण कुछ भी हो,
उसमें सत्य निरखना ज्ञान।[1]

सारांश यह है कि तिरुवळ्ळुवर ने व्यक्तिगत विचारों को मानव के सम्मुख उपस्थित करके, अपनी बुद्धि के आधार पर उन पर मनसा-वाचा-कर्मणा आचरण करने की सम्मति दी है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में कहीं भी धार्मिक अथवा अन्य किसी प्रकार के प्रमाण की छाप[2] नही लगायी है। यह वर्तमान काल के प्रजातन्त्र-वाद के दृष्टिकोण से भी युक्तियुक्त सिद्ध होता है।

तिरुक्कुरळ् एक नीति-ग्रन्थ है जिसमें पुरुषार्थों का विशद विवेचन एवं स्पष्टीकरण हुआ है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—इन चारों पुरुषार्थों में से कवि ने केवल प्रथम तीन का ही प्रत्यक्ष रूप से वर्णन किया है। चौथे पुरुषार्थ—मोक्ष—का शब्दों में विशद वर्णन दो कारणों से नहीं किया है। प्रथम यह कि यदि

---

1. "எப்பொரு ளெத்தன்மைத தாயினு மப்பொருண்
மெய்ப்பொருள் காண்ப தறிவு". (2-36-5.)

2 "Stamp of Religion or any other type of Sanction."

कोई व्यक्ति धर्म, अर्थ एवं काम का अपने जीवन में तिरुक्कुरळ् में कहे अनुसार व्यवहार करेगा तो चौथा पुरुषार्थ उसे आप से आप प्राप्त हो जाएगा। तत्पश्चात् वह स्वयं उसका अनुभव भी कर लेगा, और साथ-साथ यह भी कि वह अव्यक्त अवस्था अवर्णनीय है।[1] दूसरा कारण यह है कि जिसे यह पुरुषार्थ प्राप्त हो जाय, वह इसका अपने मुख से वर्णन नहीं करेगा; और जो इसका वर्णन करे, उसे वास्तव में इसका अनुभव नहीं हुआ समझना चाहिए।[2] कबीर ने कहा ही है—

"जो देखे सो कहे नहीं, कहे सो देखे नाहिं।
सुने सो समझावे नहीं, नैन-जीभ-कन काहिं॥"

अतः तिरुवळ्ळुवर ने मोक्ष पर किसी अध्याय की रचना नहीं की है। पर हाँ, प्रस्तावना के चार अध्यायों में इस चतुर्थ पुरुषार्थ के सम्बन्ध में अप्रत्यक्ष रूप से सूचना मात्र दे दी है[3] और तद्हेतु जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को लेकर एक सामान्य मानव-धर्म-पथ का उल्लेख कर दिया है।

---

1. "अविगत गति कछु कहत न आवे।
   ज्यों गूंगेहि मीठे फल को रस अन्तरगत ही भावे॥
   परम स्वाद सब ही जु निरन्तर अमित तोष उपजावे।
   मन बानी को अगम अगोचर सो जाने जो पावै॥"

   —सूरदास

2. "He who has seen will not say,
   He who says, has not seen."

3. "வீடொன்று பாயிரம் நான்கு" (சிறுமேதாவியார்)
   अर्थात् 'मोक्ष इक प्रस्तावना चार।' तात्पर्य यह कि प्रथम चार अध्यायों को एक पृथक खण्ड 'मोक्ष' पर मानने से तिरुक्कुरळ् मे चार खण्ड—क्रमशः मोक्ष, धर्म, अर्थ एवं काम पर चारों पुरुषार्थों के हो जाते हैं। इस प्रकार तिरुक्कुरळ् 'चतुर्पुरुषार्थ-निरूपण ग्रन्थ' है।

तिरुक्कुरळ् में धर्म के जिज्ञासुओं के लिए, अर्थ (राजनीति) विभाग के छोटे-बड़े सभी कार्य-कर्त्ताओं के लिए व ज्ञान के अन्वेषकों के लिए ही नहीं, अपितु काव्य व काम-रस के इच्छुकों के लिए भी मनोवांछित सामग्री यथेष्ट मात्रा में प्राप्त हो सकती है। यह उत्तम जीवन का उत्तम पथ-प्रदर्शक है। अतः हम कह सकते हैं कि तिरुक्कुरळ्—

धर्म के जिज्ञासुओं को धर्म-ग्रन्थ महान है,
राजनीति विदग्ध को यह राज्य-ग्रन्थ महान है।
ज्ञान का जो भान चाहें, ज्ञान-ग्रन्थ महान है,
काव्य-रस के रसिक जन को काव्य-ग्रन्थ महान है॥

प्रेम-रस के पाठकों को प्रेम-ग्रन्थ महान है,
ब्रह्म-सुख-खोजी को ब्रह्मानन्द-ग्रन्थ महान है॥
जीवनोत्तम पथ-प्रदर्शन हेतु ग्रन्थ महान है,
दिव्य - विद्या - ज्ञानार्जन हेतु ग्रन्थ महान है॥

दो०—तिरुक्कुरळ् पथ के पथिक, होंगे यहाँ सानन्द।
उन्हें प्राप्त होगा वहाँ, निज पद ब्रह्मानन्द॥

तिरुक्कुरळ् एवं उसके लेखक तिरुवळ्ळुवर के अनेक नाम हैं जिनमें नौ प्रधान हैं। वे हैं—

ग्रन्थ के नाम	लेखक के नाम
(१) तिरुक्कुरळ्	तिरुवळ्ळुवर
(२) मुप्पानूल्	नायनार
(३) उत्तरवेदम	देवर
(४) देय्वनूल्	मुदर्पावलर
(५) तिरुवळ्ळुवर	देय्वप्पुलवर

(६)	पोय्यामोषि	नान्मुहनार
(७)	वायुरै वाष़्त्तु	मातानुवंगी
(८)	तमिष़ मरै	चेन्नाप्पोदार
(९)	पोदु मरै	पेरुनावलर

* * *

वस्तुत: तिरुक्कुरळ् का कोई अनुवाद उसके सम्पूर्ण काव्य-सौष्ठव को व्यक्त नहीं कर सकता।[1] वैसे इस ग्रन्थ का अनुवाद अनेक भाषाओं में हो चुका है। भारतीय व अंग्रेज़ी के अतिरिक्त अन्य अनेक पाश्चात्य भाषा साहित्यागार इस ग्रन्थ-रत्न के भाषान्तर से समृद्ध किये जा चुके हैं। केवल अंग्रेज़ी में इसके बारह अनुवाद हो चुके हैं जिनमें पादरी श्री जी. यू. पोप, वा० वे० सु० अय्यर, वी. आर. रामचन्द्र दीक्षितर आदि के प्रमुख हैं। श्री एम. एरियल ने फ्रेंच में इसका अति सुन्दर अनुवाद किया है। डॉ० ग्रॉल ने जर्मन तथा लैटिन भाषाओं में सन् १८५६ में अनुवाद करके क्रमश: लैप्ज़िग तथा लन्दन से प्रकाशित किया है। इटालियन फ़ादर वेस्की जिन्होंने अपना नाम 'वीरमामुनिवर', 'धैर्यनाथ स्वामी' व 'इस्माती सन्यासी' रखकर भारतीय वेश-भूषा में तिरुच्चिराप्पळ्ळी के निकटवर्त्ती एक नगर में चालीस वर्ष रह कर तमिष़ भाषा के विशद अध्ययन के पश्चात् तिरुक्कुरळ् का लैटिन भाषा में अनुवाद तथा तमिष़ भाषा तथा साहित्य पर अन्य अनेक ग्रन्थों की भी रचना की, विशेष प्रशंसा के पात्र हैं। इन अनुवादकों ने तमिष़ को ही नहीं, अपितु अपनी भाषा को भी प्रशोभित किया, और उसी के साथ-साथ तिरुक्कुरळ् के दिव्य सन्देश को संसार के विभिन्न देशों तक पहुँचाने में सफलता प्राप्त की।

---

1. "No Translation can express its charming effect."—P. vi. Introduction to the Sacred Kural—by G. U. Pope

इस ग्रन्थ के भाष्य तमिष़ में ही बारह से अधिक लिखे जा चुके हैं। प्रत्येक में एक विशिष्ट विचार-धारा को प्रतिबिम्बित होते हुए हम स्पष्टतः देख सकते हैं। इसके अनुवाद अन्य तीनों द्राविडीय भाषाओं में हो चुके हैं। तेलुगु में श्री वेंकटराम विद्यानन्द ने 'त्रिवर्ग दीपिका' के नाम से आकस्मिक स्वर्गवास के कारण केवल प्रथम दो खण्डों का पद्यानुवाद प्रस्तुत किया है। कन्नड में श्री नरसिंहाचार्य 'नीति मंजरी' के नाम से सम्पूर्ण ग्रन्थ का सुन्दर भाषान्तर तीन शताब्दियों के पूर्व ही कर गये हैं, और अभी श्री एल. गुण्डप्पा का भी संपूर्ण भाषानुवाद प्रकाशित हो चुका है। मलयाळम् में श्री परमेश्वरन् पिळ्ळै ने 'रत्न उद्धारकम्' के नाम से प्रथम दो खण्डों का भाषानुवाद किया है। इतर भारतीय भाषाओं में से बंगाली में डा० नलिनी मोहन सानियाल ने स्वर्गीय श्री वा० वे० सु० अय्यर के अंग्रेज़ी अनुवाद के आधार पर प्रसिद्ध भाषा-शास्त्रज्ञ डा० सुनिति कुमार चटर्जी के प्राक्कथन के साथ सुन्दर अनुवाद प्रस्तुत किया है। हिन्दी में श्री क्षेमानन्द राहत द्वारा चुने हुए ८९ अध्यायों का तथा प्रो० बी. डी. जैन द्वारा तीनों खण्डों का अंग्रेज़ी से भाषानुवाद हो चुका है।

प्रस्तुत अनुवाद में मैंने तिरुक्कुरळ् के तमिष़ भाष्यों पर, विशेष रूप से परिमेलऴगर के भाष्य पर तथा अन्य टीकाओं व भाषानुवादों पर ध्यान रखते हुए तिरुक्कुरळ के विशेषज्ञों से स्थान-स्थान पर परामर्श प्राप्त करके मूल तिरुक्कुरळ का अनुसरण करने का प्रयत्न किया है।

अपने आदरणीय वाइस चान्सलर सर ए० लक्ष्मणस्वामी मुदलियार जी को इस ग्रंथ का प्राक्कथन प्रदान करने के लिये मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता सादर समर्पित करता हूँ।

मद्रास विश्वविद्यालय,
मद्रास
१-६-१९५८

सु. शंकर राजू नायुडु

திருக்குறள்

तिरुक्कुरळ्

1. அறம்

१. धर्म

திருக்குறள்

I. அறத்துப்பால்

1. பாயிரவியல்

1. கடவுள் வாழ்த்து

1. அகர முதல எழுத்தெல்லாம் ஆதி
   பகவன் முதற்றே உலகு.

2. கற்றதனால் ஆய பயனென்கொல் வாலறிவன்
   நற்றாள் தொழாஅர் எனின்.

3. மலர்மிசை ஏகினான் மாணடி சேர்ந்தார்
   நிலமிசை நீடுவாழ் வார்.

4. வேண்டுதல் வேண்டாமை இலான் அடிசேர்ந்தார்க்கு
   யாண்டும் இடும்பை இல.

5. இருள்சேர் இருவினையும் சேரா இறைவன்
   பொருள்சேர் புகழ்புரிந்தார் மாட்டு.

6. பொறிவாயில் ஐந்தவித்தான் பொய்தீர் ஒழுக்க
   நெறிநின்றார் நீடுவாழ் வார்.

7. தனக்குவமை இல்லாதான் தாள்சேர்ந்தார்க் கல்லால்
   மனக்கவலை மாற்றல் அரிது.

8. அறவாழி அந்தணன் தாள்சேர்ந்தார்க் கல்லால்
   பிறவாழி நீந்தல் அரிது

9. கோளில் பொறியிற் குணமிலவே எண்குணத்தான்
   தாளை வாணங்காத் தலை

10. பிறவிப் பெருங்கடல் நீந்துவர் நீந்தார்
    இறைவன் அடிசேரா தார்.

तिरुक्कुरळ्

१. धर्म

१. प्रस्तावना

१. सर्वेश स्तुति

१. सभी अक्षर-मालाएँ 'अ' अक्षर को प्रथमतः धारण की हुई हैं। सभी लोक 'आदि भगवान्' को ही प्रथमतः धारण किये हुए हैं।

२. विशुद्ध-ज्ञान रूप सर्वेश्वर के श्री चरणों की सेवा के बिना सारा विद्यार्जन व्यर्थ ही है।

३. पुष्पों पर गमन करनेवाले (अथवा सभी के हृदय-कमल में उपस्थित) उस सर्वेश के पदों के उपासक (आनन्द) भूमि पर सदा दीर्घायुष्मान होंगे।

४. इच्छा व अनिच्छा से रिक्त सर्वेश की शरण जो ग्रहण करते हैं, उन्हें किसी प्रकार का कष्ट बाधित नहीं कर सकता।

५. सर्वेश के सुयश का सदा सप्रेम गान करनेवाले अज्ञान से उत्पन्न, उभय कर्मों से मुक्त रहेंगे।

६. पंचेन्द्रियों के उद्गारों को भस्मीभूत कर सर्वेश के सत्य-मार्ग के जो निरन्तर अनुगामी होते हैं, उन्हें स्थायी सद्गति प्राप्त होती है।

७. उस अनुपम परम पुरुष के पदों में पहुँचे बिना मन की चिन्ता कभी मिट नहीं सकती।

८. सदा शीतल व शान्त रहनेवाले उस धर्म-सिन्धु के चरणों की वंदना नहीं की तो भव-सागर से बेड़ा पार होना नितान्त असम्भव है।

९. अष्ट-गुणों से युक्त सर्वेश्वर के चरणों में जो शीश न झुके, उसे बस, शक्तिहीन इन्द्रिय के समान ही समझो।

१०. वे ही संसार-सागर से तरेंगे जो ईश्वर के श्री चरणों में स्थिर ...था तरना असम्भव ही है।

2. வான் சிறப்பு

11. வான்நின்று உலகம் வழங்கி வருதலால்
தான்அமிழ்தம் என்றுணரற் பாற்று.

12. துப்பார்க்குத் துப்பாய துப்பாக்கித் துப்பார்க்குத்
துப்பாய தூஉம் மழை.

13. விண்இன்று பொய்ப்பின் விரிநீர் வியனுலகத்து
உள்நின்று உடற்றும் பசி.

14. ஏரின் உழாஅர் உழவர் புயல்என்னும்
வாரி வளங்குன்றிக் கால்.

15. கெடுப்பதூஉம் கெட்டார்க்குச் சார்வாய்மற் றாங்கே
எடுப்பதூஉம் எல்லாம் மழை.

16. விசும்பின் துளிவீழின் அல்லால்மற் றாங்கே
பசும்புல் தலைகாண்பு அரிது.

17. நெடுங்கடலும் தன்நீர்மை குன்றும் தடிந்தெழிலி
தானல்கா தாகி விடின்.

18. சிறப்பொடு பூசனை செல்லாது வானம்
வறக்குமேல் வானோர்க்கும் ஈண்டு.

19. தானம் தவம்இரண்டும் தங்கா வியன்உலகம்
வானம் வழங்காது எனின்.

20. நீர்இன்று அமையாது உலகெனின் யார்யார்க்கும்
வான்இன்று அமையாது ஒழுக்கு.

२. वर्षा वैशिष्ट्य

११. संसार का अस्तित्व वर्षा पर आधारित होने के कारण वही संसार की सुधा कहलाने योग्य है।

१२. जीवमात्र के लिए उपयुक्त भोज्य पदार्थों की सृष्टि करके वर्षा स्वयं भी उनके लिए भोजन (जल) बन जाती है।

१३. ऋतुकालीन वर्षा न हो तो महासागरों के मध्य उपस्थित इस पृथ्वी के सभी जीवों को क्षुधा सदा सतायेगी।

१४. वर्षा रूपी आय में यदि कमी पड़ी तो कृषक कृषि-कर्म नहीं करेंगे।

१५. (न बरस कर) किसी व्यक्ति का नाश ही नहीं, अपितु (खूब बरस कर) गिरे हुए व्यक्ति का विकास करने की शक्ति भी वर्षा में है।

१६. वर्षा का जल-बिन्दु पड़े बिना, किसी स्थान पर हरित-तृण की नोक के भी दर्शन दुर्लभ होते हैं।

१७. यदि जलद अपने आपको क्षीण करके बरसना बन्द कर दे तो असीम समुद्र भी सूख जायगा।

१८. यदि वर्षा न हो तो संसार में सम्मान के साथ होनेवाली देव-पूजा बन्द हो जायगी।

१९. विस्तृत व्योम वर्षा-वृष्टि न करे तो इस विशाल वसुधा पर से दान व तपस्या दोनों का सदा के लिए लोप हो जायगा।

२०. जल के बिना संसार में जीवन का अन्त हो जायगा तो वर्षा के बिना सदाचरण को भी सब में समाप्त ही समझो।

3. நீத்தார் பெருமை

21. ஒழுககதது நீததாா பெருமை விழுப்பதது
வேண்டும் பனுவல் துணிவு

22. துறந்தார் பெருமை துணைககூறின் வையத்து
இறநதாரை எணணிக்கொண் டு அற்று.

23. இருமை வகைதெரிந்து ஈண்டுஅறம் பூண்டாா
பெருமை பிறங்கிற்று உல்கு.

24 உரரென்னும் தோட்டியான் ஓரைநதும் காப்பான்
வரனென்னும் வைப்பிற்கோா விதது

25. ஐநதவித்தான் ஆற்றல் அகல்விசும்பு ளார்கோமான்
இநதிரனே சாலும் கரி.

26. செயற்கரிய செயவார் பெரியர் சிறியர்
செயறகரிய செய்கலா தாா

27. சுவைஒளி ஊறுஓசை நாறறமென்று ஐந்தின
வகைதெரிவான் கட்டே உலகு.

28. நிறைமொழி மாந்தா பெருமை நிலதது
மறைமொழி காட்டி விடும்,

29. குணமென்னும் குன்றேறி நின்றாா வெகுளி
கணமேயும் காததல அரிது.

30. அந்தணாா என்போா அறவோாமற் றெவ்வுயிர்க்கும்
செநதண்மை பூணடொழுக லான்.

३. सन्यासी का माहात्म्य

२१. सभी धर्म-ग्रन्थों का निश्चित मत है कि सदाचरण पर स्थिर रूप से चलकर सन्यास ग्रहण करनेवालों की महिमा ही सर्वश्रेष्ठ है ।

२२. सन्यासी के माहात्म्य की गणना करना ठीक वैसा ही है जैसे यह गिनना कि इस संसार में आज तक कितने मृत्यु को प्राप्त हुए ।

२३. जन्म तथा मुक्ति—इन दोनों के सुख-दुख को पूर्णत: समझकर भविष्य में जन्म से मुक्ति प्राप्त करने के हेतु जो सन्यास ग्रहण करे, उसका मान संसार में बढ़ेगा ।

२४. दृढ़ता रूपी अंकुश के द्वारा पंचेन्द्रिय रूपी हस्तियों को जो वशीभूत कर ले, वह सर्वोत्तम लोक के एक बीज के समान है ।

२५ पंचेन्द्रियों पर विजय-प्राप्त व्यक्ति की शक्ति को व्यक्त करने के सुन्दर उदाहरण विशाल आकाश के अधिपति इन्द्र स्वयं हैं ।

२६. श्रेष्ठ कार्यो को सिद्ध करनेवाले व्यक्ति ही श्रेष्ठ हैं, और जो श्रेष्ठ कार्यों में सिद्ध नहीं होते, वे निम्न हैं ।

२७. वस्तुत: संसार उन्हीं के हाथों में है जो शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध के गुण के ज्ञाता हैं ।

२८. सारगर्भित शब्दों से युक्त सन्यासी की महिमा को इस संसार में धार्मिक वचन सिद्ध कर देंगे ।

२९ सद्गुण रूपी शृंग पर खड़े हुए व्यक्ति का क्रोध क्षणमात्र के लिए भी सहन नहीं किया जा सकता ।

३०. ब्राह्मण कहलाने योग्य वही है जो धर्म-निरत रहकर सभी जीवों पर सस्नेह दयार्द्र हो ।

4. அறன்வலியுறுத்தல்

31. சிறபபுானும் செல்வமும் ானும் அறததினூஉங்கு
ஆககம எவனோ உயிாக்கு.

32. அறத்தினூஉங்கு ஆககமும் இல்லை அதனை
மறததலின் ஊங்கில்லை கேடு.

33. ஒலலும வகையான அறவினை ஓவாதே
செல்லும்வா யெல்லாம் செயல்.

34. மனததுக்கண மாசிலன் ஆதல் அனைத்துஅறன்
ஆகுல நீர பிற

35. அழுககாறு அவாவெகுளி இன்னுச்சொல் நான்கும்
இழுககா இயன்றது அறம.

36. அன்றறிவாம் என்னுது அறஞ்செய்க மறறது
பொன்றுங்கால் பொன்றுத துணை.

37. அறததாறு இதுவென வேண்டா சிவிகை
பொறுததானோடு ஊாநதான் இடை.

38. வீழ்நாள் படாஅமை நன்றுற்றின் அஃதொருவன்
வாழ்நாள் வழிஅடைககும் கல்.

39. அறததான் வருவதே இன்பமமற றெல்லாம
புறதத புகழும இல.

40. செயற்பால தோரும் அறனே ஒருவறகு
உயறபால தோரும பழி.

४. धर्म की सबलता

३१. धर्म यशप्रद है, और धनप्रद भी। अतः जीवन के लिए धर्म से श्रेष्ठ और कौन-सा पदार्थ है?

३२. न तो धर्म से श्रेष्ठ कोई वस्तु ही है, और न उसका विस्मरण जैसा कोई पतन।

३३. धर्म को छोड़े बिना यथाशक्ति अपने सभी कर्मों को सम्पन्न करो।

३४. मन को निर्मल रखना ही वस्तुतः धर्म है। अन्य सभी कार्य वाह्याडम्बर मात्र हैं।

३५. ईर्ष्या, लोभ, क्रोध एवं कठोर वचन—इन चारों से सदा बचते रहना ही वस्तुतः धर्म है।

३६. स्थगित किये बिना सदा धर्म का पालन करो। यह मृत्यु के उपरान्त भी निरन्तर सहायक होता है।

३७. धर्म-लाभ के निदर्शन की क्या आवश्यकता? शिविका के कहार एवं सवार के मध्य एक दृष्टि मात्र डालो।

३८. एक दिन भी व्यर्थ गँवाये बिना किया गया सत्कर्म मनुष्य के भव-पथ को बन्द करनेवाला प्रस्तर-खण्ड होता है।

३९. सुख वही है जो सद्धर्म से प्राप्त हो। अन्य सभी वस्तुतः दुखप्रद एवं यशहीन ही होते हैं।

४०. मानव मात्र के लिए ग्रहण करने योग्य सत्कर्म ही है, और कुकर्म त्यागने योग्य है।

II. இல்லறவியல்

5. இல்வாழ்க்கை

41. இல்வாழ்வான் என்பான் இயல்புடையை மூவர்கும்
நல்லாற்றின் நின்ற துணை.

42. துறநதாாகும துவவா தவாககும இறந்தார்கும்
இல்வாழவான் என்பான் துணை.

43. தென்புலததாா தெய்வம விருநதொககல் தானென்றுங்கு
ஐம்புலத்தாறு ஓம்பல் தலை.

44. பழியஞ்சிப் பாதவூண் உடைத்தாயின் வாழ்க்கை
வழியெஞ்சல் எஞ்ஞான்றும் இல்.

45. அன்பும அறனும் உடைததாயின் இல்வாழ்ககை
பண்பும் பயனும் அது

46 அறததாற்றின் இல்வாழககை ஆற்றின் புறத்தாற்றில்
போஒய்ப பெறுவது எவன்,

47 இயல்பினுன் இல்வாழ்க்கை வாழ்பவன் என்பான்
முயல்வாருள எல்லாம் தலை.

48. ஆற்றின் ஒழுக்கி அறனிழுககா இல்வாழக்கை
நோற்பாரின் நோன்மை உடைதது.

49 அறனெனப் பட்டதே இல்வாழக்கை அஃதும்
பிறன்பழிப்பது இல்லாயின் நன்று

50. வையததுள் வாழ்வாங்கு வாழபவன் வானுறையும்
தெய்வத்துள் வைககப் படும்

२. गार्हस्थ्य-धर्म

५. गार्हस्थ्य-जीवन

४१. गृहस्थ अन्य तीनों आश्रमों में धर्मानुकूल जीवन व्यतीत करनेवालों का स्थाई सहायक होता है।

४२. साधु, निर्धन तथा निराश्रित मृतकों का सहायक गृहस्थ है।

४३. पूर्वज, भगवान, अतिथि, बन्धु तथा स्वयं—इन पाँचों के लिए धर्मानुकूल सतत कर्म करना ही गृहस्थ का प्रधान कर्त्तव्य है।

४४. धन संग्रह करते समय पाप से बचकर तथा व्यय करते समय विभाजित करके (अर्थात् दूसरों को खिलाकर) जीवन व्यतीत करनेवाले गृहस्थ का कभी पतन नहीं होता।

४५. गार्हस्थ्य-जीवन स्नेह एवं धर्म से युक्त हो तो वही उसका सौन्दर्य एवं फल होता है।

४६. धर्मानुसार गार्हस्थ्य-जीवन व्यतीत करनेवाले व्यक्ति को अन्य मार्गों का अनुसरण करने से क्या लाभ?

४७. नियमानुसार गार्हस्थ्य-जीवन व्यतीत करनेवाला ही जीवन में प्रवृत्त सभी आश्रमवासियों में श्रेष्ठ है।

४८. दूसरों को धर्मपरायण बनानेवाला तथा स्वयं भी धर्म-च्युत हुए बिना व्यतीत किया जानेवाला गार्हस्थ्य-जीवन तपस्वियों के जीवन से भी कहीं महान होता है।

४९. वस्तुतः गार्हस्थ्य-जीवन ही धर्म का पूर्ण रूप है और वह भी दोषारोपण से दूर हो तो फिर कहना ही क्या?

५०. संसार में यथायोग्य धर्मानुसार गार्हस्थ्य-जीवन व्यतीत करनेवाला स्वर्ग के देवता के समान माना जायगा।

6. வாழ்க்கைத்துணை நலம்

51. மனைத்தக்க மாண்புடையள் ஆகித்தற் கொண்டான்
வளத்தககாள் வாழ்ககைத் துணை.

52. மனைமாட்சி இலலாள்கண் இல்லாயின் வாழ்ககை
எனைமாட்சித தாயினும் இல்

53. இல்லதென் இல்லவள் மாண்பானால் உள்ளதென்
இல்லவள் மாணாக் கடை

54. பெண்ணிற் பெருநதகக யாவுள கற்பென்னும்
திண்மையுண் டாகப் பெறின்.

55. தெய்வந் தொழாஅள் கொழுநன் தொழுதெழுவாள்
பெய்யெனப பெய்யும் மழை.

56. தற்காத்துத் தறகொண்டாற பேணித தகைசான்ற
சொறகாததுச் சோர்விலாள் பெண்.

57. சிறைகாககுங காபபுஎவன் செயயும் மகளிர்
நிறைகாககும காப்பே தலை.

58. பெறறான் பெறின்பெறுவா பெண்டிர் பெருஞ்சிறப்புப்
புததேளிா வாழும உலகு.

59. புகழ்புரிநத இல்லிலோாககு இல்லை இகழ்வார்முன்
ஏறுபோல் பீடு நடை.

60. மஙகலம் என்ப மனைமாட்சி மறறுஅதன
நன்கலம நன்மககட் பேறு.

६. जीवन-संगिनी के गुण

५१. जीवन-संगिनी वही है जो गार्हस्थ्य के सद्गुणों से सम्पन्न हो और अपने पति की आय के अनुकूल गृहस्थी चलावे।

५२. गृहणी में गार्हस्थ्य-गुण नहीं तो किसी का जीवन कैसा ही श्रेष्ठ क्यों न हो, सब व्यर्थ है।

५३. गृहणी सद्गुण-सम्पन्न है तो गृहस्थ को किस वस्तु का अभाव? और यदि वैसी नहीं है तो उसके पास है ही क्या?

५४. (गार्हस्थ्य-जीवन में) सुदृढ़ सतीत्व से युक्त स्त्री से बढ़कर महान कौन-सी वस्तु है?

५५. पूजा भगवान की नहीं, अपितु अपने पति की ही करती हुई, कोई स्त्री उठती है तो उसके 'बरसो' कह देने पर ही वर्षा होगी[1]।

५६. जो अपने सतीत्व की रक्षा करे, अपने पति के पोषण[2] में संलग्न रहे, यथायोग्य सुयश को सँभाले रक्खे और (उपर्युक्त कार्यों को सम्पन्न करने में) कभी शिथिल न पड़े वही स्त्री है।

५७. घर की दीवारों में स्त्री को मर्यादित रखना किस काम का? वास्तविक मर्यादा तो उसका सतीत्व ही है।

५८. यदि स्त्री पति के मन को अपना बना ले तो उसे देवलोक के सकल वैभव अनायास ही प्राप्त हो जायेंगे।

५९ पत्नी सुयश-प्रिय न हो तो पति अपमानित करनेवालों के आगे पुरुष-सिंह के समान सिर ऊँचा करके नहीं चल सकता।

६०. गृहणी का सद्गुण ही गृहस्थ की मांगलिक शोभा है और सुपुत्र उसका आभूषण।

---

1. (दूसरा अर्थ) पूजा भगवान की नहीं, अपितु अपने पति की ही करती हुइ जो स्त्री उठती है वह (हमारी इच्छा व आवश्यकता के अनुकूल) 'बरसो' कह देने पर बरसनेवाली वर्षा के समान है।

2. (दूसरा अर्थ) अपने पति का पूर्णतः अनुकरण करके उसे ही प्राप्त करनेवाली स्त्री को स्वर्गीय-जीवन का श्रेष्ठ सुयश इसी जीवन मे सिद्ध होगा।

7. மக்கட்பேறு

61 பெறுமவற்றுள யாமறிவது இல்லை அறிவறிந்த
மககட்பேறு அல்ல பிற

62. எழுபிறபபும் தீயவை தீண்டா பழிபிறங்காப்
பண்புடை மககட பெறின்.

63. தம்பொருள என்பதம மக்கள் அவர்பொருள்
தம்தம் வினையான் வரும்.

64. அமிழதினும் ஆற்ற இனிதேதம் மக்கள்
சிறுகை அளாவிய கூழ.

65 மககள்மெய் தீண்டல் உடற்கின்பம மற்றுஅவா
சொற்கேட்டல் இன்பம் செவிக்கு

66. குழலஇனிது யாழஇனிது என்பதம் மககள்
மழலைசசொல் கேளா தவர்.

67 தந்தை மகற்காற்றும் நன்றி அவையத்து
முந்தி இருப்பச் செயல்.

68. தம்மின்தம் மககள் அறிவுடைமை மாநிலத்து
மன்னுயிர்க் கெல்லாம் இனிது

69 ஈன்ற பொழுதிற பெரிதுவககும் தன்மகனைச
சான்றோன் எனககேட்ட தாய்

70. மகன்தநதைககு ஆறறும உதவி இவன்தநதை
என்னோற்றான் கொலஎனுஞ் சொல்.

७. सन्तान प्राप्ति

६१. प्राप्य वस्तुओं में वुद्धिमान सन्तान से वढ़कर हम अन्य किसी को नहीं मानते ।

६२. यदि कोई निष्कलंक व सच्चरित्र सन्तान को जन्म दे तो सात जन्मों तक कुकुर्म उसे वाधित न करेंगे ।

६३. कहते हैं कि सन्तति ही किसी की सच्ची सम्पत्ति होती है । यह सम्पत्ति उसके कर्मानुसार होगी ।

६४. अपनी सन्तान के छोटे करों द्वारा घोला हुआ साधारण सत्तू अमृत से भी अधिक मधुर होता है ।

६५. सन्तान का तन-स्पर्श शरीर को तथा उनके तोतले वोल कानों को सुख देते हैं ।

६६. वाँसुरी व वीणा की ध्वनि को वे ही मधुर कहेंगे जिन्होंने अपने शिशु की तोतली वोली न सुनी हो ।

६७. पुत्र को सभा में अग्रिम स्थान में वैठने योग्य वनाना पिता की सवसे वड़ी कृतज्ञता होगी ।

६८ सन्तान का अपने से अधिक वुद्धिमान होना विशाल भूतल के सभी व्यक्तियों को आनन्द प्रदान करना है ।

६९. अपने पुत्र को 'वुद्धिमान' सम्वोधित होते हुए सुनकर माता पुत्र-जन्म के समय से अधिक आनन्द का अनुभव करती है ।

७०. पिता के प्रति पुत्र का प्रत्युपकार लोगों से यह कहलाना ही है कि न मालूम इसके पिता ने ऐसे पुत्र की प्राप्ति के लिए कैसा तप किया !

8. அன்புடைமை

71. அன்பிறகும உணடோ அடைககுமதாழ ஆர்வலர்
புன்கணநீா பூசல் தரும.

72. அன்பிலாா எலலாம் தமககுரியா அன்புடையாா
என்பும் உரியர் பிறர்ககு.

73. அன்போடு இயைநத வழக்கென்ப ஆருயிாக்கு
என்போடு இயைநத தொடாபு.

74 அன்புானும் ஆாவம உடைமை அதுஈனும
நண்பென்னும நாடாச சிறப்பு.

75. அன்புற்று அமாநத வழககென்ப வையகதது
இன்புற்ருர் எய்தும் சிறபபு.

76 அறததிற்கே அன்புசாா பென்ப அறியார்
மறத்திற்கும் அஃதே துணே.

77 என்பி லதனே வெயில்போலக காயுமே
அன்பு லதனே அறம்.

78. அன்பகத் தில்லா உயிா வாழககை வன்பாறகண
வற்றல் மரம்தளிாத தறறு

79 புறததுறுப பெலலாம எவன்செய்யும் யாககை
அகததுறுப்பு அன்பி லவர்கக

80 அன்பின வழியது உயிாநிலே அஃதிலார்கக
என்புதோல் போாத்த உடம்பு

८. स्नेह-सम्पन्नता

७१. स्नेह में आवरण की अर्गला कहाँ हो सकती है? स्नेही के अश्रु-बिन्दु मन की बात को प्रकट कर ही देते हैं।

७२. स्नेहशून्य सब वस्तुओं को अपने लिए मानते हैं। स्नेह-सम्पन्न अपने शरीर को भी दूसरों का मानते हैं।

७३. अमूल्य आत्मा का शरीर के साथ सम्बन्ध केवल स्नेह-सम्पृक्त-जीवन माना जाता है।

७४ स्नेह से पारस्परिक सहृदयता प्राप्त होती है जो मित्रता रूपी अमूल्य महानता प्रदान करती है।

७५. संसार में सानन्द जीवन व्यतीत करनेवालों का गौरव स्नेह-सम्पन्न जीवन में ही निहित है।

७६. अज्ञानी ही कहेंगे कि स्नेह धर्ममात्र का सहायक है, परन्तु वास्तव में वीरता का भी वही सहायक होता है।

७७. जिस प्रकार अस्थिहीन जीव को आतप रसहीन कर देता है, उसी प्रकार स्नेहहीन जीव को धर्म।

७८. स्नेहशून्य जीवन मरुस्थल में सूखे वृक्ष से कोपलें निकलने के समान ही है।

७९. शरीर के अन्तःकरण में स्नेह न हो तो उस शरीर के सभी वाह्यांगों से क्या लाभ सिद्ध हो सकता है?

८०. स्नेह-पथ में चलनेवाला शरीर ही सजीव शरीर है, अन्यथा वह हाड-चर्म वेष्टित सारहीन पदार्थ ही है।

9. விருந்தோம்பல்

81. இருந்தோம்பி இல்வாழ்வ தெல்லாம் விருந்தோம்பி
வேளாண்மை செய்தற் பொருட்டு

82 விருந்து புறத்ததாத் தானுண்டல் சாவா
மருந்தெனினும் வேண்டற்பாற் றன்று.

83. வருவிருந்து வைகலும் ஓம்புவான் வாழ்க்கை
பருவந்து பாழ்படுதல் இன்று.

84. அகனமர்ந்து செய்யாள் உறையும் முகனமர்ந்து
நல்விருந்து ஓம்புவான் இல்.

85 வித்தும் இடல்வேண்டும் கொல்லோ விருந்தோம்பி
மிச்சில் மிசைவான் புலம்.

86 செல்விருந்து ஓம்பி வருவிருந்து பார்த்திருப்பான்
நல்விருந்து வானத் தவர்க்கு.

87. இனைத்துணைத் தென்பதொன் றில்லை விருந்தின்
துணைத்துணை வேள்விப் பயன்.

88. பரிந்தோம்பிப் பற்றற்றேம் என்பர் விருந்தோம்பி
வேள்வி தலைப்படா தார்.

89. உடைமையுள் இன்மை விருந்தோம்பல் ஓம்பா
மடமை மடவார்கண் உண்டு.

90. மோப்பக் குழையும் அனிச்சம் முகந்திரிந்து
நோக்கக் குழையும் விருந்து

९. आतिथ्य

८१. घर व गृहस्थी का मूल उद्देश्य ही आतिथ्य व परोपकार है।

८२. अमर जीवनप्रद अमृत ही क्यों न हो, अतिथि को वाहर छोड़ कर स्वयं उसका उपभोग करना सर्वथा अनुचित ही है।

८३. आनेवाले अतिथियों का अनुदिन यथोचित् सत्कार करनेवाले के जीवन का पतन दारिद्र्य के कारण हो ही नहीं सकता।

८४. प्रसन्नवदन के साथ अच्छे अतिथियों का सत्कार करनेवाले के गृह में लक्ष्मी का सानन्द निवास रहता है।

८५. आतिथ्य के अनन्तर अवशेष पदार्थ का उपभोग करनेवाले की भूमि के लिए बीजों की भी आवश्यकता है क्या ?

८६. आये हुए अतिथि का आदर-सत्कार करके, आनेवाले अतिथियों की प्रतीक्षा में रहनेवाला स्वर्ग के सुरों का सुन्दर आतिथ्य प्राप्त करेगा।

८७. कौन कह सकता है कि आतिथ्य रूपी यज्ञ का फल कितना होता है ? वह तो अतिथि की योग्यता के समान रहता है।

८८. अतिथि-यज्ञ सम्पन्न न करनेवाले विषमताओं में संग्रहीत सम्पत्ति के नष्ट होने पर कहेंगे कि हम निराश्रित हो गये हैं।

८९. आतिथ्य का निर्वाह न करने की मूढ़ता ही धनी का दारिद्र्य है। यह बुद्धिहीनों में ही होता है।

९०. सूंघने पर मुरझा जाता है 'अनिच्चम' का पुष्प। मुँह टेढ़ा करके देखने मात्र से अतिथि का आनन्द उड़ जाता है।

10. இனியவை கூறல்

91. இன்சொலால் ஈரம் அளைஇப் படிறுஇலவாஞ
செம்பொருள் கண்டார்வாய்ச் சொல்.

92. அகனமாநது ஈதலின் நன்றே முகனமர்ந்து
இன்சொலன் ஆகப் பெறின்.

93. முகத்தான் அமர்நதினிது நோககி அகத்தாணும்
இன்சொல் இனிதே அறம்.

94. துன்புறூஉந் துவ்வாமை இல்லாகும் யார்மாட்டும்
இன்புறூஉம் இன்சொ லவர்க்கு

95. பணிவுடையன் இன்சொலன் ஆதல் ஒருவற்கு
அணியல்ல மற்றுப் பிற.

96. அல்லவை தேய அறம்பெருகும் நல்லவை
நாடி இனிய சொலின்.

97. நயன்ஈன்று நன்றி பயக்கும் பயன்ஈன்று
பணபின தலைப்பிரியாச் சொல்.

98. சிறுமையுள் நீங்கிய இன்சொல் மறுமையும்
இம்மையும் இன்பம் தரும்.

99 இன்சொல் இனிதீன்றல் காண்பான் எவன்கொலோ
வன்சொல் வழங்கு வது.

100. இனிய உளவாக இன்னாத கூறல்
கனியிருப்பக காய்கவர்ந தற்று.

१०. मधुर भाषण

९१. धर्म के मर्मज्ञों के स्नेह-संयुक्त व प्रवंचना से रिक्त वचन ही मधुर वचन होते हैं।

९२. दयार्द्र होकर दान करने से भी कहीं श्रेष्ठ है प्रसन्न मुख के साथ मधुर वचन व्यक्त करना।

९३. मुख पर प्रेम-भाव लिये स्नेहपूर्ण दृष्टि के साथ हृदय से सीधे निस्सृत मधुर वचन ही धर्म है।

९४. सुखद मधुर वचन व्यक्त करनेवालों के पास दुखद दारिद्र्य कभी नहीं फटकता।

९५. नम्रता एवं मधुर वचन ही मनुष्य के आभूषण हैं। अन्य वस्तुतः आभूषण नहीं हैं।

९६. शुभ का ध्यान रखते हुए मधुर वचन कोई व्यक्त करे तो उसके पाप-विमोचनार्थ धर्म की स्वतः अभिवृद्धि होती है।

९७. दूसरों की सहायता करते हुए मानव-सुलभ माधुर्य से पूर्ण वचन वक्ता को आनन्द एवं धर्म प्रदान करते हैं।

९८. (दूसरों को दुख पहुँचाने की) तुच्छता से रिक्त मधुर बोल मृत्यु-पर्यन्त एवं उसके अनन्तर भी आनन्द प्रदान करेंगे।

९९. मधुर वचन के मधुर प्रभाव का इच्छुक क्योंकर कटु वचन का प्रयोग करने लगा?

१००. मधुर वचनों [illegible] ने हुए उन्हें छोड़ कटु वचन का प्रयोग करना पके [illegible] ए कच्चे को खाने के समान है।

11. செய்ந்நன்றி அறிதல்

101. செயயாமற செய்த உதவிககு வையகமும்
வானகமும ஆற்றல் அரிது.

102. காலததி ஞற்செய்த நன்றி சிறிதெனினும
ஞாலததின் மாணப் பெரிது.

103. பயன்தூககா செய்த உதவி நயன்தூக்கின்
நனமை கடலிற பெரிது

104. தினைததுணை நன்றி செயினும் பனைததுணையாக்
கொள்வா பயன்தெரி வார்.

105. உதவி வரைததன்று உதவி உதவி
செயபபட்டாா சால்பின் வரைத்து.

106. மறவற்க மாசற்ருா கேண்மை துறவற்க
துன்பத்துள் துபபாயார் நட்பு.

107. எழுமை எழுபிறப்பும் உள்ளுவா தஙகண்
விழுமந் துடைததவர் நட்பு.

108. நன்றி மறப்பது நன்றன்று நன்றல்லது
அன்றே மறப்பது நன்று.

109. கொன்றன்ன இன்ஞ செயினும் அவாசெய்த
ஒன்றுநன்று உள்ளக கெடும்.

110. எநநனறி கொன்ருர்ககும் உய்வுண்டாம் உய்வில்லை
செயநநனறி கொன்ற மகற்கு.

११. कृतज्ञता

१०१. पूर्व-प्राप्त उपकार के बिना किये गये उपकार के लिए यदि भूलोक एवं देवलोक भी दिये जायँ तो थोड़ा है।

१०२. आवश्यक समय पर पहुँचायी गयी सहायता अल्प होने पर भी इस पृथ्वी-लोक से बढ़कर होती है।

१०३. व्यक्तिगत लाभ के विचार के बिना की गयी सहायता का विवेचन करें तो वह समुद्र से भी विशाल विदित होगी।

१०४. तृणतुल्य भी उपकार क्यों न हो, उसके फल को समझनेवाले उसे ताड़ के समान मानेंगे।

१०५ किसी उपकार के प्रतिरूप किया गया उपकार कभी पूर्वकृत उपकार के समान नहीं हो सकता ; यह तो उपकृत व्यक्ति की गुण-गरिमा के अनुसार ही होता है।

१०६. निर्दोष व्यक्तियों का सम्बन्ध न छोड़ो। दुःख के समय जिसने सहायता की हो उसकी मित्रता को न त्यागो।

१०७. सज्जन वही है जो अपने पर आये हुए दुख को हटानेवाले का सातों जन्मों में स्मरण रखता है।

१०८. उपकार का विसरण उचित नहीं होता, पर अपकार को उसी दम भूल जाना ही उचित है।

१०९. मरण सदृश अति विषम अपकार करने पर भी, अपकारी के पूर्वकृत एक उपकार का स्मरण उस अपकार को भुला देगा।

११०. किसी भी धर्म से च्युत होनेवाले के लिए तो पाप-विमोचन का मार्ग है, परन्तु कृतघ्न के लिए कोई मार्ग नहीं।

12. நடுவுநிலைமை

111. தகுதி எனவொன்று நன்றே பகுதியால்
பாற்பட்டு ஒழுகப் பெறின்.

112. செப்பம் உடையவன் ஆககம சிதைவின்றி
எச்சத்திற்கு ஏமாப்பு உடைதது.

113 நன்றே தரினும் நடுவிகநதாம் ஆககத்தை
அன்றே ஒழிய விடல்.

114. தககார் தகவிலா என்பது அவரவா
எச்சத்தால் காணப் படும்.

115. கேடும் பெருககமும் இலலல்ல நெஞ்சத்துக்
கோடாமை சான்றோர்ககு அணி.

116. கெடுவல்யான் என்பது அறிகதன் நெஞ்சம்
நடுஒரீஇ அல்ல செயின்.

117. கெடுவாக வையாது உலகம் நடுவாக
நன்றிககண் தங்கியான் தாழ்வு.

118. சமனசெயது சீர்தூககும் கோல்போல் அமைந்தொருபால்
கோடாமை சான்றோர்ககு அணி.

119. சொற்கோட்டம் இல்லது செப்பம் ஒருதலையா
உட்கோட்டம் இன்மை பெறின்.

120 வாணிகம் செயவார்ககு வாணிகம் பேணிப்
பிறவும் தமபோல் செயின்.

१२. मध्यस्थिति

१११. मध्यस्थता एक सुन्दर सिद्धान्त है, पर तब जब वह विभिन्न क्षेत्रों में नियमानुकूल व्यवस्थित हो।

११२. न केवल मध्यस्थता से युक्त व्यक्ति की सम्पत्ति कम नहीं होती, अपितु वह उसकी सन्तति के लिए स्थाई आश्रय होकर रहती है।

११३. मध्यस्थता से च्युत होने पर चाहे किसी प्रकार की उन्नति भी क्यों न प्राप्त हो, उसे उसी दम त्याग देना चाहिए।

११४. कोई मध्यस्थता से युक्त है अथवा नहीं, इसका ज्ञान उसकी सन्तति से होता है।

११५. जीवन में उत्थान-पतन तो रहता ही है, पर मध्यस्थता ही बुद्धिमानों का भूषण है।

११६. हृदय मध्यस्थता को त्यागे तो समझें कि पतन होनेवाला है।

११७. धर्म-पथ पर चलकर मध्यस्थता का निरन्तर पालन करनेवाला यदि दरिद्र हो जाय तो संसार उसका अपमान नहीं करेगा।

११८. सम रहकर मूल्यांकन करनेवाले तराजू के समान व्यवहार करना ही मध्यस्थता पर चलनेवाले व्यक्ति का आभूषण है।

११९. मध्यस्थता इसी में है कि वचन में किसी प्रकार की वक्रता न हो, पर साथ-साथ मन में भी लेशमात्र वक्रता न हो।

१२०. वणिक के वाणिज्य की सुन्दरता इसी में है कि वह दूसरों की वस्तुओं को भी अपनी वस्तु के समान मान कर व्यापार करे।

13. அடக்கமுடைமை

121. அடககம அமரருள் உய்க்கும் அடங்காமை
ஆரிருள் உய்த்து விடும்.

122 காகக பொருளா அடக்கததை ஆக்கம்
அதனினூஉஙகு இல்லை உயிாககு.

123. செறிவறிநது சீர்மை பயக்கும் அறிவறிநது
ஆற்றின் அடங்கப் பெறின்.

124. நிலையில் திரியாது அடஙகியான் தோற்றம்
மலையினும் மாணப் பெரிது.

125 எல்லார்ககும் நன்றாம் பணிதல் அவருள்ளும்
செல்வர்ககே செல்வம தகைதது

126. ஒருமையுள் ஆமைபோல ஐந்தடககல் ஆற்றின்
எழுமையும் ஏமாப்பு உடைத்து.

127. யாகாவார் ஆயினும் நாகாகக காவாக்கால்
சோகாப்பா சொல்லிழுக்குப் பட்டு

128. ஒன்றானும் தீச்சொல் பொருட்பயன் உண்டாயின்
நன்றாகா தாகி விடும்.

129. தீயினால் சுட்டபுண உள்ளாறும் ஆறாதே
நாவினாற் சுட்ட வடு.

130 கதங்காததுக் கற்றடங்கல் ஆற்றுவான் செவ்வி
அறம்பார்ககும் ஆற்றின் நுழைந்து.

१३. संयम

१२१. संशय दैवत्य प्रदान करता है और असंयम घनघोर अंधकार में झोंक देता है।

१२२. संयम को विशिष्ट सम्पति मानकर उसकी सुरक्षा करनी चाहिए क्योंकि इससे श्रेष्ठ सम्पत्ति जीवन के लिए और कोई नहीं है।

१२३. यदि कोई संयम को ही आत्म ज्ञान मान कर उस धर्म पर चले तो वह सज्जनों के द्वारा सम्मानित होकर श्रीवृद्धि प्राप्त करेगा।

१२४. अपनी स्थिति के अनुकूल संयम पर बिना परिवर्त्तन के स्थिर रहनेवाले की ऊँचाई पर्वत से कही बढ़कर होती है।

१२५. नम्र व्यवहार सब के लिए अच्छा है, पर उसमें भी धनवानों के लिए तो अमूल्य धन के समान होता है।

१२६. कोई व्यक्ति एक जन्म में पंचेन्द्रिय को संयम से रखे तो उसमें उसके सातों जन्मों में रक्षा करने की सामर्थ्य होती है।

१२७. चाहे आवश्यक विषयों में से किसी और की रक्षा न करें, पर जिह्वा की रक्षा अवश्य करें। अन्यथा अपने अनुचित वचनों के फलस्वरूप स्वयं दुखित होंगे।

१२८. बुरे वचनों के फलस्वरूप अन्य को दुखित करनेवाली एक बात भी हुई तो इतर धर्मों से किसी प्रकार का लाभ नहीं होगा।

१२९. अग्नि का जला घाव तो भीतर से पूर्णतः ठीक हो जाता है, और बाहर एक चिह्न मात्र रह जाता है। पर जिह्वा का लगा घाव कभी अच्छा नहीं हो सकता।

१३० विद्योपार्जन के अनन्तर संयम से निष्क्रोध ही जीवन व्यतीत करनेवाले के उचित अवसर के लिए धर्म-देवता भी प्रतीक्षा करेंगे।

14. ஒழுக்கமுடைமை

131. ஒழுகக‌ம் விழுப்பம் தரலான் ஒழுக்கம்
உயிரினும் ஓம்பப் படும்.

132. பரிந்தோம்பிக் காக்க ஒழுககம் தெரிந்தோம்பித்
தேரினும் அஃதே துணை.

133. ஒழுக்கம் உடைமை குடிமை இழுக்கம்
இழிந்த பிறப்பாய் விடும்.

134 மறப்பினும் ஓத்துக கொளலாகும் பார்ப்பான்
பிறப்பொழுக்கம் குன்றக கெடும்.

135. அழுக்காறு உடையான்கண் ஆக்கம்போன்று இல்லை
ஒழுக்கம் இலான்கண் உயர்வு.

136. ஒழுக்கத்தின் ஒல்கார் உரவோர் இழுக்கத்தின்
ஏதம் படுபாக்கு அறிந்து.

137. ஒழுக்கத்தின் எய்துவா மேன்மை இழுக்கத்தின்
எய்துவர் எயதாப் பழி.

138. நன்றிகககு விததாகும் நல்லொழுககம் தீயொழுக்கம்
என்றும் இடும்பை தரும்.

139. ஒழுககம் உடையவர்க்கு ஒல்லாவே தீய
வழுககியும் வாயால் சொலல்.

140. உலகததோடு ஒட்ட ஒழுகல் பலகற்றும்
கல்லார் அறிவிலா தார்.

१४. सदाचरण

१३१. सदाचरण ही सब को श्री-वृद्धि प्रदान करता है, अतः उसे प्राणों से बढ़कर मानना चाहिए।

१३२. सदाचरण की सप्रयत्न सुरक्षा करनी चाहिए। क्योंकि समीक्षा करने पर वही स्थाई सहायक सिद्ध होता है।

१३३. श्रेष्ठ कुल का लक्षण सदाचरण से युक्त जीवन ही है। दुराचरण नीच जन्म को सिद्ध कर देगा।

१३४. विस्मृत विषय का पुनः अध्ययन कर सकते हैं, परन्तु यदि ब्राह्मण आचरण - भ्रष्ट हो गया तो उसके जन्म की प्रतिष्ठा सदा के लिए नष्ट हो जायगी।

१३५. ईर्ष्यालु व्यक्ति की वृद्धि जिस प्रकार नहीं होती, उसी प्रकार आचरणहीन व्यक्ति की अभिवृद्धि भी कभी नहीं होती।

१३६. दुराचरण के दोषों को समझकर दृढ़ - चित्त बुद्धिमान सदाचरण की सदा सुरक्षा करेंगे।

१३७. सदाचरण से सभी श्रेष्ठ बनेंगे और दुराचरण से अति निन्दित होंगे।

१३८. सुखी जीवन का बीज है सदाचरण, और दुराचरण दुख ही देगा।

१३९. सदाचरण पर चलनेवाले भूलकर भी अपने मुँह से बुरे वचन नहीं निकालेंगे।

१४०. अनेक विद्याओं का अध्ययन करके भी जो समाज के साथ मिलकर आचरण युक्त जीवन व्यतीत करना नहीं जानते, वे अज्ञानी ही समझे जायेंगे।

15. பிறனில் விழையாமை

141. பிறன்பொருளாள் பெடடொழுகும் பேதைமை ஞாலதது
அறம்பொருள கணடார்கண் இல்

142. அறன்கடை நின்ருருள் எல்லாம் பிறன்கடை
நின்ருரின் பேதையாா இல்.

143 விளிநதாரின் வேறலலர் மன்ற தெளிந்தாரில்
தீமை புரிநதுஒழுகு வார்.

144. எனைததுணையா ஆயினும் என்னும் தினைத்துணையும்
தேரான் பிறனில் புகல்.

145. எளிதென இல்லிறப்பான் எய்துமெஞ் ஞான்றும்
விளியாது நிற்கும் பழி.

146. பகைபாவம அச்சம் பழியென நான்கும
இகவாவாம் இல்லிறப்பான் கண்.

147. அறனியலான் இல்வாழவான் என்பான் பிறனியலாள்
பெண்மை நயவா தவன்.

148. பிறன்மனை நோக்காத பேராண்மை சான்ருோக்கு
அறனென்ருே ஆனற ஒழுக்கு.

149. நலககுரியாா யாரெனின் நாமநீா வைப்பின்
பிறற்குரியாள் தோள்தோயா தார்.

150 அறன்வரையான் அல்ல செயினும பிறன்வரையாள்
பெண்மை நயவாமை நன்று.

१५. परदार-अनिच्छा

१४१. संसार में धर्म एवं धन के तत्वज्ञों में परदारेच्छा की मूढ़ता नहीं होती।

१४२. अधर्मपथगामियों में अन्य स्त्री के गृह-द्वार पर प्रतीक्षा करनेवाले के समान मूढ़ और कोई नहीं।

१४३. विश्वस्त मित्र की स्त्री के साथ कलुषित व्यवहार करनेवाले मृत्युगत के अतिरिक्त और कोई नहीं।

१४४. कोई व्यक्ति चाहे कितना ही महान क्यों न हो, तनिक भी विचार किये बिना परस्त्री-गमन करने से उसकी क्या दशा होगी?

१४५. अति सुलभ मानकर अन्य स्त्री पर आसक्त होनेवाला स्थाई निन्दा का पात्र होगा।

१४६. शत्रुता, पाप, भय एवं निन्दा—ये चारों परदारेच्छुक से कभी पृथक नहीं होंगे।

१४७. दूसरे की धर्म-पत्नी पर कभी न आसक्त होने वाला ही धार्मिक गृहस्थ होता है।

१४८. दूसरे की स्त्री को कामेच्छा से कभी न निहारने का महान पौरुष बुद्धिमानों का धर्म ही नहीं, मूल सदाचरण भी है।

१४९. भयंकर समुद्र के मध्य स्थित संसार में समस्त वैभवों का अधिकारी वही है जो अन्य की अधिकृता स्त्री के स्कन्धों का आलिंगन न करे।

१५०. धर्म की सीमा के बाहर के कर्मों को करने पर भी, परदारेच्छा से दूर रहना अच्छा है।

16. பொறையுடைமை

151. அகழவாரைத தாங்கும் நிலம்போலத தம்மை
இகழவாாப் பொறுததல் தலை.

152. பொறுத்தல் இறப்பினை என்றும் அதனை
மறததல் அதனினும் நன்று.

153. இன்மையுள இன்மை விருநதொரால் வன்மையுள
வன்மை மடவாாப் பொறை.

154 நிறையுடைமை நீங்காமை வேண்டின் பொறையுடைமை
போற்றி ஒழுகப் படும்.

155. ஒறுததாரை ஒன்ருக வையாரே வைப்பர்
பொறுததாரைப் பொன்போற பொதிந்து.

156. ஒறுததார்ககு ஒருநாளை இன்பம் பொறுத்தார்ககுப்
பொனறுந துணையும புகழ்.

157. திறனலல தறபிறா செய்யினும நோநொந்து
அறனல்ல செய்யாமை நன்று.

158. மிகுதியால் மிககவை செய்தாரைத தாம்தம்
தகுதியால வென்று விடல.

159. துறந்தாரின் தூயமை உடையா இறநதார்வாய்
இனனுசசொல் நோற்கிற் பவா.

160. உணணுது நோற்பாா பெரியா பிறாசொல்லும்
இன்னுச்சொல நோற்பாரின் பின்.

१६. सहनशीलता

१५१. खोदनेवालों का भी भार जिस प्रकार पृथ्वी सहन करती है उसी प्रकार अपने निन्दकों को सहन करना एक विशिष्ट धर्म है।

१५२. सहनशीलता सदा एक श्रेयस्कर गुण है, पर उसका विस्मरण उससे भी अधिक श्रेयस्कर है।

१५३. दरिद्रों में दरिद्र वह है जो अतिथि का सत्कार न करे। महानों में महान वह है जो मूढ़ के शब्दों को सह ले।

१५४. सदाचरण की स्थिरता की अभिलाषा हो तो सहनशीलता को सदा सँभाले रहो।

१५५. किये के बदले में दुःख देनेवाले को लोग सज्जन नहीं मानते पर सहनशील व्यक्ति को स्वर्ण के समान सुरक्षित रखते हैं।

१५६. बदले में दुःख पहुँचानेवाले को एक दिन का आनन्द भले ही प्राप्त हो, पर सहनशील व्यक्ति का पृथ्वी के प्रलय-काल तक सम्मान होता रहेगा।

१५७. दूसरों के द्वारा अनुचित व्यवहार किये जाने पर भी उससे दुखित होकर बदले में धर्महीन कर्म न करना अच्छा है।

१५८. अहंकार के कारण अनुचित व्यवहार करनेवाले पर अपनी योग्यता से विजय प्राप्त करनी चाहिए।

१५९. अनुचित व्यवहार करनेवालों के अपशब्दों को सहन करनेवाले वस्तुतः साधुओं जैसे निर्मल हृदयवाले ही होते हैं।

१६०. उपवास का व्रत धारण करनेवालों की महानता दूसरों के दुर्वचनों को सह लेनेवालों के बाद ही है।

17. அழுக்காருமை

161 ஒழுககாருக கொள்க ஒருவன் தன் நெஞ்சத்து
அழுககாறு இலாத இயல்பு.

162. விழுப்பேற்றின் அஃதொப்பது இல்லையாா மாட்டும்
அழுககாறறின் அன்மை பெறின்.

163. அறன்ஆககம் வேண்டாதான் என்பான் பிறனுக்கம்
பேணுது அழுக்கறுப் பான்.

164. அழுககாறறின் அலலவை செய்யாா இழுக்காற்றின்
ஏதம் படுபாகசு அறிந்து.

165. அழுககாறு உடையார்கசு அதுசாலும் ஒன்ருர்
வழுக்கியும் கேடீன் பது.

166. கொடுப்பது அழுககறுப்பான் சுற்றம் உடுப்பதூஉம்
உண்பதூஉம் இனறிக் கெடும.

167. அவ்விதது அழுக்காறு உடையானைச் செய்யவள்
தவ்வையைக காட்டி விடும்

168. அறுககாறு எனஒரு பாவி திருச்செற்றுத்
தீயுழி உய்தது விடும்.

169. அவ்விய நெஞசததான் ஆக்கமுஞ் செவ்வியான்
கேடும் நினைக்கப் படும்.

170 அழுககற்று அகன்ருரும் இல்லை அஃது இல்லார்
பெருககததின் தீர்ந்தாரும் இல்.

१७. ईर्ष्या न करना

१६१. अपने हृदय में ईर्ष्या न करने के गुण को ही सदाचार समझना चाहिए।

१६२. महत्तम गुणों में किसी से ईर्ष्या न करने से श्रेष्ठ कोई नहीं है।

१६३. जो अपने लिए धर्म एवं उन्नति की इच्छा नहीं रखता वही दूसरों की उन्नति देख प्रसन्न न होकर ईर्ष्या करेगा।

१६४. ईर्ष्या-पथ की बाधाओं को समझकर बुद्धिमान उससे सम्भवित अधार्मिक कर्मों को कदापि न करेंगे।

१६५. ईर्ष्या शत्रु के अभाव में भी बाधा उपस्थित कर सकती है, अतः ईर्ष्यावान के नाश के लिए वही दुर्गुण यथेष्ट है।

१६६. सहायतार्थ दिया हुआ धन देखकर ईर्ष्या करनेवाले का कुटुम्ब वस्त्र-भोजन बिना नाशमान होगा।

१६७. ईर्ष्यावान से देवी स्वयं ईर्ष्या करके अपनी ज्येष्ठा दरिद्रता को उसे दिखा देती है।

१६८. ईर्ष्या नामक पापी सम्पत्ति का सर्वनाश करके व्यक्ति को दुर्मार्ग पर धकेल ले जाता है।

१६९. ईर्ष्यावान की उन्नति एवं ईर्ष्याहीन सज्जन की अवनति समीक्षा योग्य विषय हैं।

१७०. संसार में समृद्धि प्राप्त ईर्ष्यावान भी नहीं है, और समृद्धि से गिरे हुए ईर्ष्या रहित सज्जन भी नहीं है।

18. வெஃகாமை

171. நடுவின்றி நன்பொருள் வெஃகின் குடிபொன்றி
குற்றமும் ஆங்கே தரும்.

172. படுபயன் வெஃகிப் பழிப்படுவ செய்யார்
நடுவன்மை நாணு பவர்.

173. சிற்றின்பம் வெஃகி அறனல்ல செய்யாரே
மற்றின்பம் வேண்டு பவர்.

174. இலமென்று வெஃகுதல் செய்யார் புலம்வென்ற
புன்மையில் காட்சி யவர்.

175. அஃகி அகன்ற அறிவென்னும் யார்மாட்டும்
வெஃகி வெறிய செயின்.

176. அருள்வெஃகி ஆற்றின்கண் நின்றான் பொருள்வெஃகிப்
பொல்லாத சூழக் கெடும்.

177. வேண்டற்க வெஃகியாம் ஆக்கம் விளைவயின்
மாண்டற்கு அரிதாம் பயன்.

178. அஃகாமை செல்வத்திற்கு யாதெனின் வெஃகாமை
வேண்டும் பிறன்கைப் பொருள்.

179. அறனறிந்து வெஃகா அறிவுடையார்ச் சேரும்
திறன்அறிந்து ஆங்கே திரு.

180. இறல்ஈனும் எண்ணாது வெஃகின் விறல்ஈனும்
வேண்டாமை என்னுஞ் செருக்கு.

१८. निर्लोभता

१७१. अन्याय से दूसरों की अच्छी वस्तु का लोभ करना कुल का नाश करके विभिन्न दोषों को वहीं उत्पन्न करता है।

१७२. अन्याय से लज्जित होनेवाले अन्य की वस्तु के लोभ के कुपरिणाम को समझकर (उसके अपहरणार्थ) कभी अनुचित मार्ग का अनुसरण नहीं करेंगे।

१७३. स्थाई आनन्द के प्रेमी क्षणिक आनन्द प्रदान करनेवाले पदार्थों के लोभ में पड़कर कभी अधर्मनिष्ठ न होंगे।

१७४. पंचेन्द्रियजित निर्दोष व्यक्ति दरिद्र हो जाने पर भी दूसरों की सम्पत्ति का लोभ न करेंगे।

१७५. यदि कोई किसी की वस्तु के लोभ में आकर मूर्खतापूर्ण व्यवहार करे तो उसकी सूक्ष्म एवं विशाल बुद्धि से क्या लाभ?

१७६. ईश्वरीय करुणा का अभिलाषी धर्म-पथ का पथिक यदि अर्थ-लोभ से अनुचित व्यवहार का विचार करेगा तो नाशमान होगा।

१७७. लोभवश प्राप्त सम्पत्ति से उन्नति की अभिलाषा न रखो। उसके भोग से किसी प्रकार का लाभ सिद्ध नहीं हो सकता।

१७८. सम्पत्ति की समृद्धि का क्या साधन है? यही कि दूसरों की सम्पत्ति का लोभ न हो।

१७९. धर्मज्ञ व निर्लोभ बुद्धि से युक्त व्यक्ति की गुण-गरिमा का मूल्यांकन करके लक्ष्मी स्वयं उसके पास पहुँचती है।

१८०. विना विचारे लोभवश होने से दुर्गति प्राप्त होगी। उसकी अनिच्छा रूपी सम्पत्ति जीवन साफल्य प्रदान करेगी।

19. புறங்கூருமை

181. அறங்கூருன் அல்ல செயினும் ஒருவன்
புறங்கூருன் என்றல் இனிது.

182. அறனழீஇ அல்லவை செய்தலின் தீதே
புறனழீஇப பொய்த்து நகை.

183. புறங்கூறிப் பொய்ததுயிா வாழ்தலின் சாதல்
அறஙகூறும ஆககந் தரும்.

184. கண்ணின்று கண்ணறச சொல்லினும் சொல்லறக
முன்இன்று பின்நோககாச் சொல்.

185. அறஞசொல்லும் நெஞசததான் அன்மை புறஞசொல்லும்
புன்மையால் காணப் படும்.

186. பிறன்பழி கூறுவாறு தன்பழி உள்ளும
திறன்தெரிந்து கூறப் படும்.

187. பகசசொல்லிக கேளிர்ப் பிரிப்பா நகசசொல்லி
நட்பாடல் தேற்ரு தவர்.

188. துன்னியார் குற்றமும தூற்றும் மரபினர்
என்னைகொல் ஏதிலாா மாட்டு.

189. அறன்நோககி ஆற்றுங்கொல வையம் புறன்நோககிப்
புன்சொல உரைப்பான் பொறை

190 ஏதிலாா குற்றம்போல் தங்குற்றம் காண்கிற்பின்
தீதுண்டோ மன்னும உயிர்ககு.

१९. अपिशुनता

१८१. चाहे कोई धार्मिक वचनों को न कहे और अधर्म कर्म करे, पर अपिशुन कहलाना अच्छा है ।

१८२. धर्म के विरोध में बोलने और दुष्कर्मों को करने से भी अधम है अनुपस्थित की निन्दा करना और उसके सम्मुख उसकी झूठी प्रशंसा करना ।

१८३. चुगली खाते हुए असत्यपूर्ण जीवन व्यतीत करने से निर्धन रहकर मर-मिटना धर्म-ग्रन्थों में कथित सद्गति प्रदान करेगा ।

१८४. समुपस्थित व्यक्ति से सक्रोध कुछ भी कह लो, परन्तु पीठ-पीछे विना विचारे एक शब्द भी न कहो ।

१८५. किसी की पिशुनता के गुण से सिद्ध हो जाता है कि उसके हृदय में धर्म-पथ पर चलने की शक्ति नहीं है ।

१८६. दूसरों के दोषों का ही जो बखान करता है, उसके दोषों की आलोचना दूसरे करेंगे, और वह निन्दित होगा ।

१८७. आनन्दप्रद वार्ता से मैत्री स्थापित करने का गुण जिनमें नहीं है, वे पिशुनता के कारण अपने मित्रों से भी वंचित हो जायेंगे ।

१८८. आत्मीय व्यक्तियों के भी दोषों का सर्वत्र बखान करनेवाले, अपरिचित के साथ कैसा व्यवहार करेंगे, यह भगवान ही जाने ।

१८९. अनुपस्थित देख किसी की निन्दा करनेवाले का भी भार पृथ्वी मानो धर्म समझ कर ही सहन करती है ।

१९०. दूसरों के दोषों के समान अपना दोष देखने लगे तो जीवमात्र को कोई दुख भी हो सकता है ?

20. பயனில சொல்லாமை

191 பல்லாா முனியப் பயனில சொல்லுவான்
எல்லாரும எளளப் படும்.

192. பயனில பலலாாமுன் சொல்லல் நயனில
நட்டார்கண செயதலின தீது.

193. நயனிலன் என்பது சொல்லும பயனில
பாரிதது உரைககும் உரை.

194. நயன்சாரா நன்மையின் நீககும் பயன்சாராப்
பண்பில்சொல் பல்லாா அகதது.

195. சீாமை சிறப்பொடு நீங்கும பயனில
நீாமை உடையாா சொலின்.

196. பயனில்சொல் பாராட்டு வானை மகன்எனல
மக்கட் பதடி எனல்.

197. நயனில சொல்லினுஞ் சொல்லுக சான்றோா
பயனில சொலலாமை நன்று.

198. அரும்பயன் ஆயும் அருவிஞா சொல்லார்
பெரும்பயன் இல்லாத சொல்

199. பொருள்தீர்நத பொசசாநதும் சொலலாா மருள்தீாந்த
மாசறு காட்சி யவர்.

200. சொலலுக சொலலிற் பயனுடைய சொல்லற்க
சொல்லிற் பயனிலாச சொல்.

२०. प्रलाप न करना

१९१. दूसरों को प्रलाप से अप्रसन्न करनेवाला सबसे असम्मानित होगा ।

१९२. अनेक व्यक्तियों के सम्मुख प्रलाप करना मित्रों के सम्मुख अनुचित कर्म करने से भी तुच्छ है ।

१९३. निरर्थक विषयों का किसी के द्वारा विस्तृत वर्णन बताता है कि वह धर्मच्युत व्यक्ति है ।

१९४. व्यर्थ एवं असभ्य प्रलाप अनेक व्यक्तियों से करना मनुष्य को धर्म से दूर एवं हित से पृथक कर देगा ।

१९५. सभ्य मानव प्रलाप करेगा तो उसकी श्रेष्ठता उसके सम्मान के साथ शिथिल पड़ जायगी ।

१९६ सदा प्रलाप करनेवाले को मानव न मानकर मानवों में भूसा समझें ।

१९७. अनुचिन बातें चाहे कह दें, परन्तु बुद्धिमानों का प्रलाप से दूर रहना अच्छा है ।

१९८. अति गम्भीर विषयों का विवेचन करनेवाले विद्वान विशेष अर्थ से रहित वचन कभी व्यक्त नहीं करेंगे ।

१९९. मायामुक्त पवित्र मानव भूलकर भी अर्थहीन शब्द मुँह से नहीं निकालेंगे ।

२००. शब्दों में हितकर शब्दों को कहो, अहितकर शब्दों को कभी न कहो ।

21. தீவினையச்சம்

201. தீவினையார் அஞ்சார் விழுமியார் அஞ்சுவர்
தீவினை என்னும் செருக்கு.

202. தீயவை தீய பயத்தலால் தீயவை
தீயினும் அஞ்சப் படும்.

203. அறிவினுள் எல்லாம் தலையென்ப தீய
செறுவார்க்கும் செய்யா விடல்.

204. மறந்தும் பிறன்கேடு சூழற்க சூழின்
அறம்சூழும் சூழ்ந்தவன் கேடு.

205. இலன்என்று தீயவை செய்யற்க செய்யின்
இலனாகும் மற்றும் பெயர்த்து.

206. தீப்பால தான்பிறர்கண் செய்யற்க நோய்ப்பால
தன்னை அடல்வேண்டா தான்.

207. எனைப்பகை உற்றாரும் உய்வர் வினைப்பகை
வீயாது பின்சென்று அடும்.

208. தீயவை செய்தார் கெடுதல் நிழல்தன்னை
வீயாது அடிஉறைந் தற்று.

209. தன்னைத்தான் காதலன் ஆயின் எனைத்தொன்றும்
துன்னற்க தீவினைப் பால்.

210. அருங்கேடன் என்பது அறிக மருங்கோடித்
தீவினை செய்யான் எனின்.

२१. कुकर्म से भय

२०१. सदा कुकर्म करनेवाले उद्दण्ड व्यवहार से कभी नहीं डरते, केवल सज्जन डरते हैं।

२०२. बुरे कर्म का फल बुरा होता है, अतः अग्नि से अधिक इससे डरना चाहिए।

२०३. ज्ञानियों का कथन है कि शत्रुओं को भी दुःख न पहुँचाना ही सर्वश्रेष्ठ ज्ञान है।

२०४. भूलकर भी कोई दूसरे के पतन का कर्म न करे, अन्यथा धर्म स्वयं उसी के पतन का विचार करेगा।

२०५. 'मैं दरिद्र हूँ' ऐसा विचार कर (उसके निवारणार्थ) कुकर्म न करो। अन्यथा पुनः दरिद्र होकर अति दुःख पाओगे।

२०६. जो चाहता हो कि दुष्कर्म मुझे बाद में दुःख न पहुँचावे, वह दूसरों को दुष्कर्म से दुखित न करे।

२०७. भयंकर से भयंकर शत्रु से तो बच जाओगे, परन्तु दुष्कर्म का फल सदा तुम्हारा पीछा करके सर्वनाश कर देगा।

२०८. कुकर्म करनेवाले का पतन परछाई के समान सदा उसके पैरों के नीचे ही उपस्थित रहता है।

२०९. जिसे अपने से प्रेम हो वह साधारण से साधारण दुष्कर्म को भी सर्वथा त्याग दे।

२१०. उसे पतन से मुक्त समझो जो अनुचित मार्ग में चलकर दुष्कर्म नहीं करता।

22. ஒப்புரவறிதல்

211 கைம்மாறு வேண்டா கடப்பாடு மாரிமாட்டு
என்ஆற்றுங கொல்லோ உலகு

212. தாளாற்றித் தந்த பொருளெல்லாம் தக்கார்க்கு
வேளாணமை செய்தற் போருட்டு.

213. புததேள் உலகத்தும் ஈண்டும பெறலரிதே
ஒப்புரவின் நல்ல பிற.

214. ஒத்தது அறிவான் உயிர்வாழ்வான் மற்றையான்
செததாருள் வைககப் படும்.

215 ஊருணி நீாநிறைந்து அற்றே உலகவாம்
பேரறி வாளன் திரு.

216. பயன்மரம் உள்ளூாப் பழுத்தற்றுல் செல்வம்
நயனுடை யான்கண் படின்.

217. மருநதாகித் தப்பா மரத்தற்றுல் செல்வம்
பெருந்தகை யான்கண் படின்.

218. இடனில் பருவத்தும் ஒப்புரவிற்கு ஒல்கார்
கடனறி காட்சி யவா.

219 நயனுடையான் நல்கூர்ந்தான் ஆகல் செயும்நீர
செய்யாது அமைகலா வாறு.

220. ஒப்புரவி னுல்வரும் கேடெனில் அஃதொருவன்
விற்றுககோள தககது உடைத்து.

२२. शिष्टाचार का ज्ञान

२११. जलद को प्रत्युपकार में संसार के जीव क्या देते हैं? जलद के समान गुणवाले सज्जन प्रत्युपकार का विचार नहीं करते।

२१२. परिश्रम से उपार्जित सम्पूर्ण धन यथायोग्य व्यक्ति के उपकारार्थ ही होता है।

२१३. दूसरों का उपकार करते हुए शिष्टाचार का जीवन व्यतीत करने के समान दूसरा श्रेष्ठ गुण न देवलोक में है और न इस लोक में।

२१४. शिष्टाचार के समझदार ही वस्तुतः जीवन व्यतीत करनेवाले हैं। शेष सब मृततुल्य ही हैं।

२१५. शिष्टाचार युक्त जीवन के इच्छुक बुद्धिमान की सम्पत्ति जलपूर्ण सरोवर के समान होती है।

२१६. शिष्टाचार बरतनेवाले सद्गुणी के पास सम्पत्ति का संग्रहीत होना मधुर फलों के वृक्ष का नगर के मध्य में फलित होने के समान होता है।

११७. शिष्टाचार के गुण से युक्त महान व्यक्ति के पास सम्पत्ति संग्रहीत हो तो वह उस वृक्ष के समान होती है जिसके सभी अंग सफल औषधि के काम आते हैं।

२१८. शिष्टाचार के कर्त्तव्य के ज्ञानी दरिद्र अवस्था से भी उपकार करने से नहीं चूकते।

२१९. शिष्टाचार के सद्गुण से युक्त व्यक्ति की दरिद्रता अपने गुणानुकूल उपकार न कर सकने की असमर्थता ही है।

२२०. शिष्टाचार से नाश की सम्भावना हो तो वह नाश एक का अपने को बेचकर भी प्राप्त करने के योग्य है।

23. ஈகை

221 வறியாாககொன்று ாவதே ஈகைமற்று எல்லாம்
குறியெதிர்ப்பை நீரது உடைத்து.

222. நல்லாறு எனினும் கொளல்தீது மேலுலகம்
இல்லெனினும் ஈதலே நன்று.

223. இலனென்னும் எவ்வம் உரையாமை ாதல்
குலனுடையான் கணணே உள.

224. இன்னாது இரககப் படுதல் இரநதவர்
இன்முகம் காணும் அளவு.

225. ஆற்றுவார் ஆற்றல் பசிஆற்றல் அப்பசியை
மாறறுவார் ஆற்றலின் பின்.

226. அற்றா அழிபசி தீர்ததல் அஃதொருவன்
பெற்றான் பொருளவைப் புழி

227. பாத்தூண் மரீஇ யவனைப் பசிஎன்னும்
தீப்பிணி தீண்டல் அரிது.

228. ாததுவககும் இன்பம் அறியார்கொல் தாமுடைமை
வைத்திழககும் வன்கண் அவர்.

229. இரததலின் இன்னாது மன்ற நிரப்பிய
தாமே தமியர் உணல்.

230. சாதலின் இன்னாதது இல்லை இனிததூஉம்
ஈதல் இயையாக் கடை.

२३. दान

२२१. निर्धन को उसकी इच्छित वस्तु देना ही दान कहलाता है। शेष सब प्रतिफल की इच्छा से युक्त होता है।

२२२. दान लेना, चाहे मोक्ष-मार्ग के लिए सहायक भी क्यों न हो, बुरा ही है। मोक्ष प्राप्त न होने पर भी दान देना ही अच्छा है।

२२३. 'मै निर्धन हूँ' ऐसा किसी के व्यथा सहित कहने से पूर्व उसे दान देने का गुण श्रेष्ठ कुल से जन्म लिये हुए व्यक्ति में ही होता है।

२२४. (याचना ही नहीं,) याचित होना (भी) तब तक दुखदायक है जब तक याचक का मुख प्रसन्न न दीखने लगे।

२२५. तपस्वी की शक्ति क्षुधा-सहन में है, पर वह शक्ति क्षुधाशांत करने के दान से निम्न कोटि की ही है।

२२६. दरिद्रों की तीव्र क्षुधा को शांत करना ही धनी का अपने भविष्य के लिए धन-संचय का स्थान है।

२२७. सदा बाँट कर भोजन करनेवाले को क्षुधा नामक तीव्र ज्वर कभी नहीं सता सकता।

२२८. संचित धन का दान न करके फिर खोनेवाले कठोर-हृदय व्यक्ति दूसरों को देने से उत्पन्न आनन्द को क्या जानते ही नहीं?

२२९. धन की कमी को पूर्ण करने के हेतु दान दिये बिना स्वयं अकेले खाना दरिद्रता के कारण भिक्षा माँगने से भी अधिक दुखदायक है।

२३०. मरण से अधिक दुखद कुछ नहीं होता, पर निर्धन की इच्छित वस्तु को न दे सकने की अवस्था में वह मरण भी सुखद होता है।

24. புகழ்

231 ஈதல இசைபட வாழதல் அதுவலலது
ஊதியம் இலலை உயிாக்கு

232. உரைப்பார் உரைப்பவை எல்லாம இரப்பார்க்கொன்று
ஈவாாமேல் நிற்கும் புகழ்.

233. ஒன்ரு உலகத்து உயர்நத புகழல்லால்
பொன்ருது நிற்பதொன்று இல்.

234. நிலவரை நீள்புகழ ஆற்றின் புலவரைப்
போற்ருது புதேதேள் உலகு.

235. நததம்போல் கேடும் உளதாகுரு சாக்காடும்
விததகர்ககு அல்லால் அரிது.

236. தோன்றின் புகழொடு தோன்றுக அஃதிலாா
தோன்றலின் தோன்ருமை நன்று.

237. புகழபட வாழாதார் தந்நோவாா தம்மை
இகழவாரை நோவது எவன்.

238 வசையென்ப வையததாாககு எல்லாம் இசையென்னும்
எச்சம் பெருஅ விடின்.

239. வசையிலா வண்பயன் குனறும் இசையிலா
யாககை பொறுதத நிலம்.

240. வசைஒழிய வாழவாரே வாழவார் இசையொழிய
வாழ்வாரே வாழா தவர்.

२४. यश

२३१. दान देते हुए यशस्वी जीवन व्यतीत करने से श्रेष्ठ वस्तु की प्राप्ति मानव के लिए और कुछ नहीं है।

२३२. प्रशंसकों का सारा कथन याचक को एक वस्तु दान में देनेवाले पर स्थित यश ही होता है।

२३३. महान सुयश के अतिरिक्त अन्य कोई स्थाई सम्पत्ति संसार में नहीं है।

२३४. पृथ्वी की सीमा में दीर्घकाल तक रहनेवाले यशस्वी कर्मों को जो करता है, उसी की प्रशंसा देवलोक करता है, न कि ज्ञानियों की।

२३५. (यश-शरीर के) विकास के साथ-साथ (स्थूल शरीर के) विनाश तथा (यश-शरीर के) स्थायित्व व (स्थूल शरीर की) नश्वरता (के तत्व) को विज्ञ जन के अतिरिक्त और लोग नहीं जानते।

२३६. जन्म लिया है तो यश के साथ जियो। अन्यथा जन्म ही न लेना अच्छा है *।

२३७. जिन्होंने यशप्रद जीवन व्यतीत नहीं किया, वे अपने पर न बिगड़कर निन्दकों को भला-बुरा क्यों कहें?

२३८. (स्थूल शरीर के अवसान के पश्चात् भी) शेष रहनेवाला यश प्राप्त नहीं किया, तो वैसा जीवन जनमात्र पर का कलंक कहा जाता है।

२३९. यशहीन शरीर के भार को उठानेवाली भूमि में निर्दोष सफल उपज का ह्रास होगा।

२४०. निष्कलंक का जीवन ही जीवन है। यशहीन का जीवन मृततुल्य है।

---

* दूसरा अर्थ—प्रकट होना है तो यश के साथ प्रकट होवो। अन्यथा प्रकट न होना ही अच्छा है।

3. துறவறவியல்

25. அருளுடைமை

241. அருட்செல்வம் செல்வதது்ள் செல்வம் பொருட்செல்வம்
பூரியார் கணணும் உள.

242. நல்லாற்ருன் ஙாடி அருளாள்க பல்லாறருல்
தேரினும் அஃதே துணை.

243. அருளசேர்ந்த நெஞ்சினுர்க்கு இல்லை இருள்சேர்ந்த
இன்ரு உலகம புகல்

244. மன்னுயிா ஓம்பி அருளாள்வாற்கு இல்லென்ப
தன்னுயிா அஞ்சும வினை

245. அல்லல்' அருளாள்வாக்கு இல்லை வளிவழங்கும்
மல்லல்மா ஞாலம் கரி.

246. பொருள்நீங்கிப் பொச்சாநதார் என்பர் அருள்நீங்கி
அல்லவை செய்தொழுகு வார்.

247. அருளிலார்கு அவ்வுலகம இல்லை பொருளிலார்க்கு
இவ்வுலகம் இல்லாகி யாஙகு

248. பொருளற்ருர் பூப்பா ஒருகால் அருளற்ருர்
அற்ருாமற்று ஆதல் அரிது.

249. தெருளாதான் மெய்ப்பொருள் கண்டற்ருல் தேரின்
அருளாதான் செய்யும் அறம்.

250. வலியாாமுன் தன்னை நினைக்கதான் தன்னின்
மெலியார்மேல் செல்லும் இடதது.

३. सन्यास धर्म

२५. दयालुता

२४१. सम्पत्तियों में अति विशिष्ट है दया की सम्पत्ति। धन की सम्पत्ति तो क्षुद्र व्यक्ति के पास भी होती है।

२४२. अच्छे ढंग से अन्वेषण करके दयालुता ग्रहण करो। अनेक प्रकार से विवेचन करने पर ज्ञात होगा कि वही एकमात्र सहायक है।

२४३. अन्धकार-युक्त नरक में उनका प्रवेश नही होता जो सदय हृदय होते हैं।

२४४. संसार के जीवों की सुरक्षा करते हुए उन पर दया-भाव रखनेवाले को अपने प्राण-भय के साथ जीवन व्यतीत करने का दुर्भाग्य नहीं होता, ऐसा ज्ञानी कहते हैं।

२४५. दयालु को दुःख नहीं सताता। पवन संचरित सम्मृद्ध व सुविशाल लोक ही इसका साक्षी है।

२४६. पुरुषार्थहीन एवं जीवन के लक्ष्य को भूले हुए व्यक्ति ही दया-भाव रहित अधर्म कर्म में रत रहते हैं। यह ज्ञानियों का कथन है।

२४७. जिस प्रकार निर्धनों को इस लोक में स्थान नहीं है, उसी प्रकार निर्दयों को उस लोक में स्थान नहीं रहता।

१४८. निर्धन एक समय सम्मृद्ध भी हो सकते हैं, पर निर्दय का जीवन सर्वथा निष्फल व अपरिवर्त्तनीय होता है।

२४९. दयाहीन के धार्मिक कर्म का विवेचन करने पर वह एक अस्थिर बुद्धि के द्वारा सत्य वस्तु के दर्शन के समान ही ज्ञात होगा।

२५०. निर्दय व्यक्ति अपने से निर्बल व्यक्ति के सम्मुख जाते समय उस स्थिति का विचार करे जब वह अपने से सबल के सम्मुख होता है।

26. புலால் மறுத்தல்

251. தன்னூன் பெருக்கற்குத தான்பிறிது ஊனுண்பான்
எங்ஙனம் ஆளும் அருள்?

252. பொருளாட்சி போற்றாதாக்கு இல்லை அருளாட்சி
ஆங்கில்லை ஊன்தின் பவர்க்கு

253. படைகொண்டார் நெஞ்சம்போல் நன்றூக்காது ஒன்றன்
உடலசுவை உண்டார் மனம்.

254. அருளல்லது யாதெனின் கொல்லாமை கோறல்
பொருளல்லது அவ்வூன் தினல்.

255. உண்ணாமை உள்ளது உயிர்நிலை ஊனுண்ண
அண்ணாத்தல செய்யாது அளறு.

256. தினற்பொருட்டால் கொல்லாது உலகெனின் யாரும்
விலைப்பொருட்டால் ஊன்தருவார் இல்

257. உண்ணாமை வேண்டும் புலாஅல் புறிதொன்றன்
புண்அது உணர்வார்ப் பெறின்.

258 செயிரின் தலைப்பிரிந்த காட்சியார் உண்ணார்
உயிரின் தலைப்பிரிந்த ஊன்.

259. அவிசொரிந்து ஆயிரம் வேட்டலின் ஒன்றன்
உயிர்செகுத்து உண்ணாமை நன்று.

260. கொல்லான் புலாலை மறுத்தானை கைகூப்பி
எல்லா உயிரும் தொழும்.

२६. मांसाहार निषेध

२५१. अपने मांस की वृद्धि के लिए दूसरे प्राणी के शरीर का भक्षण करनेवाला कैसे दयावान हो सकता है ?

२५२. धन की रक्षा न करनेवाले को धनी होने का सम्मान नहीं प्राप्त हो सकता। उसी प्रकार मांसाहारियों को भी दयालु होने का सम्मान नहीं प्राप्त हो सकता।

२५३. नाशकारी शस्त्रवाहक के मन के समान दूसरे जीव के शरीर के भक्षक का मन भी सदय नहीं होता।

२५४. अहिंसा ही दया है, और हिंसा निर्दयता। मांस का भक्षण ही अधर्म है।

२५५. मुनुष्य का सशरीर जीवित रहना मांसाहार-निषेध के तत्त्व पर आधारित है। अतः नरक भी मांसाहारी को मुक्त नहीं करेगा।

२५६ मांस-भक्षण के लिए लोग जीव-हत्या न करें तो मूल्य के लिए मांस-विक्रय करनेवाला भी कोई नहीं रहेगा।

२५७. मांस-भक्षण कदापि नहीं करना चाहिए। विश्लेषण करके समझें कि मांस दूसरे जीव का घाव ही तो है।

२५८. निर्दोष बुद्धिवाले व्यक्ति एक जीव के शरीर से पृथक होकर आये हुए मांस का भक्षण नहीं करेंगे।

२५९. घृत की आहुति देकर किये गये सहस्र हवनों से श्रेष्ठ है जीवहत्या एवं मांस-भक्षण न करना।

२३०. जो अहिंसक हो और मांस न खाता हो, उसको सभी जीव कर-बद्ध प्रणाम करेंगे।

27. தவம்

261. உற்றநோய் நோன்றல உயிர்கருறுகண் செய்யாமை
அறறே தவத்திற்கு உரு.

262. தவமும் தவமுடையார்கரு ஆகும் அவம்அதனை
அஃதிலார் மேற்கொள் வது

263. துறந்தார்கருத் துப்புரவு வேண்டி மறந்தார்கொல்
மற்றை யவர்கள் தவம்.

264. ஒன்னார்த் தெறலும் உவந்தாரை ஆக்கலும்
எண்ணின் தவத்தான் வரும்.

265. வேண்டிய வேண்டியாங்கு எய்தலால் செய்தவம்
ஈண்டு முயலப் படும்.

266 தவஞ்செய்வார் தங்கருமம் செயவாமற்று அலலார்
அவம்செய்வார் ஆசையுட் பட்டு.

267. சுடச்சுடரும் பொன்போல் ஒளிவிடும் துன்பம்
சுடசசுட நோற்கிற் பவாக்கு.

268. தன்னுயிர் தான்அறப் பெற்றுனை ஏனைய
மன்னுயிா எல்லாம் தொழும்

269. கூற்றம் குதித்தலும் கைகூடும் நோறறலின்
ஆற்றல் தலைப்பட் டவர்கரு.

270. இலர்பலர் ஆகிய காரணம் நோற்பார்
சிலர்பலர் நோலா தவா.

२७. तपस्या

२६१. अपने पर आये हुए दुःख के सहने तथा दूसरे जीवों को दुःख न पहुँचाने में ही तपस्या का स्वरूप निहित है।

२६२ तपस्या के आचरणों से युक्त व्यक्ति को ही तपस्वी का वेश उचित है। अन्यथा वह व्यर्थ प्रयास मात्र होगा।

२६३. तपस्वियों को आहार आदि समर्पित करने के हेतु ही मानों अन्य व्यक्ति (अर्थात् गृहस्थ) तपस्या को भूल गये!

२६४. तपस्या की शक्ति से दुर्जन-शत्रु का दलन तथा सज्जन-मित्र की सम्मृद्धि सहज सम्भव है।

२६५. (प्रयास से) इच्छित वस्तु को इच्छानुसार प्राप्त कर सकते हैं। अतः सप्रयास करने योग्य तपस्या इस स्थिति में (गार्हस्थ्य-जीवन में) भी सम्भव है।

२६६. तपस्या करनेवाले ही वस्तुतः कर्त्तव्यशील होते हैं। इतर व्यक्ति के कर्म इच्छा के वशीभूत हो व्यर्थ प्रयास मात्र ठहरते हैं।

२६७. जिस प्रकार स्वर्ण तपते-तपते निर्मल एवं प्रकाशमान होता चलता है, उसी प्रकार तपस्वी भी दुःख से तपते-तपते निर्मल एवं ज्ञान के प्रकाश से युक्त होता चलता है।

२६८. अपने को पूर्णतः प्राप्त व्यक्ति की वन्दना सभी अन्य जीव करेंगे।

२६९. तपस्या में उमंग सहित लीन व्यक्ति के लिए यम पर विजय प्राप्त करना भी सम्भव है।

२७०. संसार में धनी अधिक न होने का कारण यही है कि तपस्वी कम हैं और तपस्या न करनेवाले अधिक।

28. கூடா ஒழுக்கம்

271. வஞ்ச மனத்தான் படிற்றொழுக்கம் பூதங்கள்
ஐந்தும அகத்தே நகும்.

272. வானுயர் தோற்றம் எவன்செய்யும் தன்னெஞ்சம்
தான்அறி குற்றம் படின்.

273. வலிஇல் நிலைமையான் வலலுருவம் பெற்றம்
புலியின்தோல் போர்த்துமேய்ந்து அற்று.

274. தவம்மறைந்து அல்லவை செய்தல் புதன்மறைந்து
வேட்டுவன் புள்சிமிழ்த்து அற்று.

275. பற்றற்றேம் என்பார் படிற்றொழுக்கம் எற்றெற்றென்று
ஏதம் பலவும் தரும்.

276. நெஞ்சின் துறவார் துறந்தார்போல் வஞ்சித்து
வாழ்வாரின் வன்கணார் இல்.

277. புறங்குன்றி கண்டனையர் ஏனும் அகங்குன்றி
மூக்கின் கரியார் உடைத்து.

278. மனததது மாசாக மாண்டார்நீ ராடி
மறைந்தொழுகும் மாந்தர் பலர்.

279. கணைகொடிது யாழ்கோடு செவ்விதுஆங்கு அன்ன
வினைபடு பாலால் கொளல்.

280. மழித்தலும் நீட்டலும் வேண்டா உலகம்
பழித்தது ஒழித்து விடின்.

२८. दुराचरण

२७१. वंचनापूर्ण हृदयवाले के दुराचरण पर शरीर के पंच-भूत उसके अन्दर ही हँसेंगे।

२७२ अपना मन यदि अपने ज्ञात दोषों में ही डूब जाय तो उसे आकाश जैसे महान तपस्वी के वेश से क्या लाभ पहुँच सकता है?

२७३. बलहीन व्यक्ति द्वारा बलवान (तपस्वी) जैसा रूपमात्र धारण करना, सिंह-चर्म ओढ़े भेड़ के चरने के समान ही है।

२७४. तपस्वी का रूप धारण किये हुए दुराचरण में बरतनेवाला उस चिड़ीमार के समान है जो झाड़ी में छिपकर जाल बिछाकर पक्षियों को पकड़ता है।

२७५. अपने को 'बन्धन-मुक्त' कहनेवालों का दुराचरण, उनसे ही 'हाय! मैंने क्या कर डाला!'—ऐसा कहला कर अनेक प्रकार के दुःख देगा।

२७६. अन्तःकरण में बन्धन-मुक्त हुए बिना ही त्यागी का ढोंग रचते हुए जीनेवाले के समान निर्दय व्यक्ति और कोई नहीं होता।

२७७. बाह्यतः जंगली सेब सदृश सुन्दर अरुण-वर्ण से युक्त दीखते हुए भी हृदय के काले व्यक्ति संसार में अनेक हैं।

२७८. पापाचार मन में रखकर परम तपस्वी के समान तीर्थों में स्नान करके छिपे-छिपे दुष्प्रवृत्ति में लीन व्यक्ति संसार में अनेक हैं।

२७९. रूप में बाण सीधा होने पर भी कर्म में निर्दय होता है, पर वीणा टेढ़ी होने पर भी कर्म में मधुर होती है। इसी प्रकार मानव को उसके आचरण से समझना चाहिए।

२८०. संसार-निन्द्य-दुराचरण को तज दे तो बालों को मुँड़ाने व बढ़ाने की आवश्यकता ही नहीं है।

29. கள்ளாமை

281. எள்ளாமை வேண்டுவான் என்பான் எனைத்தொன்றும்
கள்ளாமை காக்கதன் நெஞ்சு.

282. உள்ளத்தால் உள்ளலும தீதே பிறன்பொருளைக்
கள்ளத்தால் கள்வேம் எனல்.

283. களவினால் ஆகிய ஆக்கம் அளவிறந்து
ஆவது போலக் கெடும்.

284. களவின்கண் கன்றிய காதல் விளைவின்கண்
வீயா விழுமம் தரும்.

285. அருள்கருதி அன்புடையர் ஆதல் பொருள்கருதிப்
பொச்சாப்புப் பார்ப்பார்கண் இல்.

286. அளவின்கண் நின்றொழுகல் ஆற்றார் களவின்கண்
கன்றிய காத லவர்.

287. களவென்னும் காரறி வாண்மை அளவென்னும்
ஆற்றல் புரிந்தார்கண் இல்

288. அளவறிந்தார் நெஞ்சத்து அறம்போல நிற்கும்
களவறிந்தார் நெஞ்சில் கரவு.

289. அளவல்ல செய்தாங்கே வீவர் களவல்ல
மற்றைய தேற்றா தவர்.

290 கள்வார்கருத் தள்ளும உயிர்நிலை கள்ளார்க்குத்
தள்ளாது புத்தேள் உலகு.

२९. चोरी न करना

२८१. तिरस्कृत हुए बिना जीवन-निर्वाह की इच्छा हो तो किसी भी वस्तु की चोरी के विचार से अपने हृदय की रक्षा करो।

२८२. हृदय में दूषित विचार का आना भी दोष ही है। अतः दूसरे की वस्तु को उसकी आँख बचाकर चोरी करने का विचार भी मन में न लाओ।

२८३. चोरी से प्राप्त वैभव विकासशील जैसा प्रतीत होकर विनाश की ओर ले जायगा।

२८४. चोरी से प्राप्त वस्तु का प्रेम फल-प्राप्ति के समय अमिट दुःख देगा।

२८५. दया समन्वित सप्रेम व्यवहार उसमें नहीं होता जो दूसरों की वस्तु का अपहरण करने के निमित्त उस अवसर की ताक में रहता है कि वे तनिक सुस्त पड़ें।

२८६. चोरी से दूसरे की वस्तु का अपहरण करने के इच्छुक मितव्ययी नहीं होते।

२८७. चोरी नामक अन्धकारपूर्ण अज्ञान मर्यादित जीवन व्यतीत करनेवालों में नहीं होता।

२८८ सीमा के ज्ञान से युक्त व्यक्ति के हृदय में उपस्थित धर्म के समान चोरी के ज्ञान से युक्त व्यक्ति के हृदय में वंचना रहती है।

२८९. चोरी से भिन्न अन्य सद्विषयों को जो नहीं जानता उसका पतन अमर्यादित कर्म द्वारा उसी दम होगा।

२९०. चोरों को उनका अपना सप्राण तन भी धक्का दे देता है, और चोरी न करनेवालों को स्वर्ग भी कभी धक्का नहीं देता।

30. வாய்மை

291. வாய்மை எனப்படுவது யாதெனின் யாதொன்றும்
தீமை இலாத சொலல்.

292. பொய்மமையும் வாய்மை யிடத்த புரைதீர்ந்த
நன்மை பயககும் எனின்.

293. தன்நெஞ்சு அறிவது பொய்யற்க பொய்த்தபின்
தன்நெஞ்சே தன்னைச் சுடும்.

294. உள்ளத்தால் பொய்யாது ஒழுகின் உலகத்தார்
உள்ளததுள் எல்லாம் உளன்.

295. மனத்தொடு வாய்மை மொழியின் தவத்தொடு
தானஞ்செய் வாரின் தலை.

296. பொய்யாமை அன்ன புகழில்லை எய்யாமை
எல்லா அறமும் தரும்.

297. பொய்யாமை பொய்யாமை ஆற்றின் அறம்பிற
செய்யாமை செய்யாமை நன்று.

298. புறந்தூய்மை நீரான் அமையும் அகந்தூய்மை
வாய்மையால் காணப் படும்.

299. எல்லா விளக்கும் விளக்கல்ல சான்றோர்க்குப்
பொய்யா விளககே விளக்கு.

300. யாமெய்யாக் கண்டவற்றுள் இல்லை எனைத்தொன்றும்
வாய்மையின் நல்ல பிற.

३०. सत्य बोलना

२९१. किसी प्रकार की हानि से रहित कथन को सत्य बोलना कहते हैं।

२९२. दोष को हटाकर उपकार सिद्ध हो तो असत्य कथन भी सत्य बोलने के समान होता है।

२९३. स्वयं जानते हुए झूठ न बोलो, अन्यथा झूठ सिद्ध होने पर अपना हृदय ही अपने को जलायगा।

२९४. मनुष्य अपने ज्ञान तक मिथ्या भाषण से दूर रहे तो संसार के सभी व्यक्तियों के हृदय में स्थान प्राप्त करेगा।

२९५. मनसा-वाचा सत्य ही व्यक्त करनेवाला तपस्या के साथ दान भी करनेवालों से श्रेष्ठ है।

२९६. असत्य वचन से रहित जीवन के समान यश और कोई नहीं है। यह बिना उसके जाने उसे सकल धर्म प्रदान करेगा।

२९७. यदि सत्य का सदा विश्वस्त रूप से पालन करो तो अन्य धर्मों को करने की आवश्यकता ही नहीं।*

२९८. वाह्य शुद्धि जल से सिद्ध होती है और आन्तरिक शुद्धि सत्य बोलने से प्राप्त होती है।

२९९. (वाह्य अन्धकार को हटानेवाले) सभी दीपक दीपक नहीं हैं। बुद्धिमानों के लिए (आन्तरिक अन्धकार को हटानेवाला) सत्य वचन रूपी दीपक ही दीपक है।

३००. हमने वास्तव में जहाँ तक देखा है, सत्य बोलने से श्रेष्ठ विषय अन्य कोई नहीं है।

---

* दूसरा अर्थ—सत्य का विश्वस्त रूप से पालन करने पर ही अन्य धर्मों को करना लाभप्रद हो सकता है।

31. வெகுளாமை

301. செல்லிடத்துக் காப்பான் சினங்காப்பான் அல்லிடத்துக்
காக்கின்என் காவாக்கால் என்.

302. செல்லா இடத்து சினம்தீது செல்லிடத்தும்
இல்அதனின் தீய பிற.

303. மறத்தல் வெகுளியை யார்மாட்டும் தீய
பிறத்தல் அதனான் வரும்.

304. நகையும் உவகையும் கொல்லும் சினத்தின்
பகையும் உளவோ பிற.

305. தன்னைத்தான் காக்கின் சினம்காக்க காவாக்கால்
தன்னையே கொல்லும் சினம்.

306. சினமென்னும் சேர்ந்தாரைக் கொல்லி இனமென்னும்
ஏமப் புணையைச் சுடும்.

307. சினத்தைப் பொருளென்று கொண்டவன் கேடு
நிலத்தறைந்தான் கைபிழையாது அற்று.

308. இணர்எரி தோய்வன்ன இன்னா செயினும்
புணரின் வெகுளாமை நன்று.

309. உள்ளிய தெல்லாம் உடனெய்தும் உள்ளத்தால்
உள்ளான் வெகுளி எனின்.

310. இறந்தார் இறந்தார் அனையர் சினத்தைத்
துறந்தார் துறந்தார் துணை.

३१. क्रोधित न होना

३०१. अपने क्रोध का जिस पर प्रभाव पड़ सके उस पर (अर्थात् अपने से छोटे पर) क्रोधित न होने का संयम ही क्रोध का वास्तविक शमन है, और अन्य परिस्थितियों में (अर्थात् अपने से बलवान पर) उसका संयम करो तो क्या, और न करो तो क्या?

३०२. असफल होनेवाले स्थान में क्रोधित होना बुरा है। सफल स्थान में (दुर्बल पर) भी क्रोधित होने से अधिक कुत्सित और कुछ नहीं है।

३०३. किसी पर भी अवस्थित क्रोध को भूल जाना चाहिए। उस क्रोध से ही बुरे कर्म उत्पन्न होंगे।

३०४. मुख की हँसी और आन्तरिक आनन्द को नाश करनेवाले क्रोध से बढ़कर किसी का कोई और भी शत्रु हो सकता है?

३०५. कोई स्वयं अपनी रक्षा करना चाहे तो क्रोध से रक्षा करे। अन्यथा क्रोध ही उसको मार डालेगा।

३०६. साथ लगनेवाले का संहार करनेवाली क्रोधाग्नि बन्धुत्व रूपी आनन्द की डोंगी को भी भस्मीभूत कर देगी।

३०७. (अपने बल को व्यक्त करने के हेतु) धरती को अपने हाथ से मारनेवाले पर लगनेवाली चोट के समान क्रोध को भी एक वस्तु माननेवाले का नाश हुए बिना रह नहीं सकता।

३०८. लपटों से युक्त अग्नि के जलाने के समान भी यदि कोई बुरा कर दे तो उस पर भी, हो सके तो, क्रोधित न होना अच्छा है।

३०९. मन में क्रोध को स्थान न दो तो सभी इच्छित वस्तुओं की तुरन्त प्राप्ति होगी।

३१०. क्रोधान्ध मरे हुओं के समान, तथा निष्क्रोध मुक्त-पुरुषों के समान होते हैं।

32. இன்னா செய்யாமை

311. சிறப்புஈனும் செல்வம் பெறினும் பிறர்க்குஇன்னா
செய்யாமை மாசற்றார் கோள்.

312. கறுத்துஇன்னா செய்தவக் கண்ணும் மறுத்துஇன்னா
செய்யாமை மாசற்றார் கோள்.

313. செய்யாமல் செற்றார்க்கும் இன்னாத செய்தபின்
உய்யா விழுமம் தரும்.

314. இன்னாசெய் தாரை ஒறுத்தல் அவர்நாண
நன்னயம் செய்து விடல்.

315. அறிவினான் ஆகுவது உண்டோ பிறிதின்நோய்
தந்நோய்போல் போற்றாக் கடை.

316. இன்னா எனத்தான் உணர்ந்தவை துன்னாமை
வேண்டும் பிறன்கண் செயல்.

317. எனைத்தானும் எஞ்ஞான்றும் யார்க்கும் மனத்தானாம்
மாணாசெய் யாமை தலை.

318. தன்னுயிர்க்கு இன்னாமை தானறிவான் என்கொலோ
மன்னுயிர்க்கு இன்னா செயல்.

319. பிறர்க்குஇன்னா முற்பகல் செய்யின் தமக்குஇன்னா
பிற்பகல் தாமே வரும்.

320. நோய்எல்லாம் நோய்செய்தார் மேலவாம் நோய்செய்யார்
நோயின்மை வேண்டு பவர்

३२. बुरा न करना

३११. यशप्रद सम्पत्ति की प्राप्ति होने पर दूसरों का बुरा न करना निष्कलंक व्यक्ति का सिद्धान्त होता है।

३१२. वैर भाव से किसी के बुरा करने पर भी बदले में उसका बुरा न करना निष्कलंक व्यक्ति का सिद्धान्त होता है।

३१३. अकारण बुरा करनेवाले का भी (बदले में) बुरा करने पर (वह कर्म) अपार दुःख देगा।

३१४. बुरा करनेवाले का (समुचित) दण्ड है उसे लज्जित करते हुए उसका भला करके (उसकी बुराई और अपनी भलाई को) भूल जाना।

३१५. दूसरों के दुःख को अपने दुःख के समान मानकर उनकी रक्षा न की तो ज्ञान का क्या उपयोग?

३१६. किसी कर्म को स्वयं बुरा समझने पर उसे दूसरे पर करने का विचार न करना चाहिए।

३१७. मन में उत्पन्न कुत्सित कर्मों को, चाहे वे कितने ही साधारण क्यों न हों, किसी समय किसी पर भी न करना ही श्रेष्ठ है।

३१८. अपने लिए बुरे कर्मों को समझनेवाला, न मालूम किस कारण से दूसरों का बुरा करता है?

३१९. कोई प्रातःकाल में दूसरों का बुरा करे तो उस पर सायंकाल में बुरा स्वयं आ पड़ेगा।

३२०. सभी दुःख दुखद कर्म करनेवालों पर ही जा पड़ते हैं। दुःख रहित जीवन के इच्छुक दुखद कर्म करेंगे ही नहीं।

33. கொல்லாமை

321. அறவினை யாதெனில் கொல்லாமை கோறல்
பிறவினை எல்லாம் தரும்.

322. பகுத்துண்டு பல்லுயிர் ஓம்புதல் நூலோர்
தொகுததவற்றுள் எலலாம் தலை.

323. ஒன்றாக நல்லது கொல்லாமை மற்றுஅதன்
பின்சாரப் பொய்யாமை நன்று.

324. நல்லாறு எனப்படுவது யாதெனின் யாதொன்றும்
கொல்லாமை சூழும் நெறி.

325. நிலைஅஞ்சி நீத்தாருள் எல்லாம் கொலைஅஞ்சிக்
கொல்லாமை சூழ்வான் தலை.

326. கொல்லாமை மேற்கொண்டு ஒழுகுவான் வாழ்நாள்மேல்
செல்லாது உயிருண்ணும் கூற்று.

327. தன்னுயிர் நீப்பினும் செய்யற்க தான்பிறிது
இன்னுயிர் நீக்கும் வினை.

328. நன்றாகும் ஆக்கம் பெரிதெனினும் சான்றோர்க்குக்
கொன்றாகும் ஆககம் கடை.

329. கொலைவினையர் ஆகிய மாக்கள் புலைவினையர்
புன்மை தெரிவார் அகத்து.

330. உயிர்உடம்பின் நீககியார் என்ப செயிர்உடம்பின்
செலலாததீ வாழ்ககை யவர்.

३३. अहिंसा

३२१. धार्मिक कर्म कौन-सा है? अहिंसा। हिंसा सभी अन्य (विपरीत) कर्मों को ला देती है।

३२२. बाँट कर स्वयं भी भोजन करके अनेक जीवों की रक्षा करना ग्रन्थकारों द्वारा धर्मों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

३२३. धर्मों में अतुलनीय अग्रिम स्थान अहिंसा का है। उसके अनन्तर 'असत्य न बोलना' उचित है।

३२४ 'सन्मार्ग' वह कहलाता है जिसमें किसी जीव की हिंसा न करने के धम की प्रधानता हो।

३२५. जीवन की स्थिति से भयभीत हो सन्यास ग्रहण करनेवाले सबों से, हिंसा से भयभीत हो अहिंसा की रक्षा करनेवाला श्रेष्ठ है।

३२६. अहिंसा के आधार पर जीवन व्यतीत करनेवाले की आयु पर प्राण-भक्षक यम का भी वश नहीं चल सकता।

३२७. चाहे अपने प्राण ही जायं, पर स्वयं दूसरे के प्राण को हरने की क्रिया न करनी चाहिए।

३२८. महान वृद्धि की शुभ-प्राप्ति होने पर भी, हिंसा से प्राप्त वृद्धि बुद्धिमानों को अति अशोभायमान ही होती है।

३२९. हिंसा करनेवाले (निर्दय) लोग समझदारों से मन में अति नीच माने जायेंगे।

३३०. रोगी शरीर व दरिद्र दुर्जीवन व्यतीत करनेवालों ने (ज्ञानी कहते हैं) पूर्वत: जीवों के शरीर से प्राणों को पृथक किया होगा।

34. நிலையாமை

331 நில்லாத வற்றை நிலையின என்றுணரும்
புல்லறி வாண்மை கடை.

332. கூத்தாட்டு அவைக்குழாத்து அற்றே பெருஞ்செல்வம்
போக்கும் அதுவிளிந் தற்று.

333. அற்கா இயல்பிற்றுச் செல்வம் அதுபெற்றால்
அற்குப ஆங்கே செயல்.

334. நாளென ஒன்றுபோல் காட்டி உயிர்ஈரும்
வாளது உணர்வார் பெறின்.

335. நாச்செற்று விக்குள்மேல் வாராமுன் நல்வினை
மேற்சென்று செய்யப் படும்.

336. நெருநல் உளனொருவன் இன்றில்லை என்னும்
பெருமை உடைத்துஇவ் வுலகு.

337. ஒருபொழுதும் வாழ்வது அறியார் கருதுப
கோடியும் அல்ல பல.

338. குடம்மை தனித்துஒழியப் புள்பறந் தற்றே
உடம்பொடு உயிரிடை நட்பு.

339. உறங்குவது போலும் சாக்காடு உறங்கி
விழிப்பது போலும் பிறப்பு.

340. புக்கில் அமைந்தின்று கொல்லோ உடம்பினுள்
துச்சில் இருந்த உயிர்க்கு.

३४. अस्थिरता

३३१. अस्थिर वस्तुओं को स्थिर मानना तुच्छ बुद्धि की पराकाष्ठा है।

३३२. बड़ी सम्पत्ति का आना तमाशा देखने के लिए आयी हुई भीड़ के समान होता है। उस सम्पत्ति का जाना भी तमाशा खतम होते ही भीड़ के बिखर जाने के समान ही होता है।

३३३. धन में अस्थिरता का स्वभाव होता है। वह प्राप्त हो तो तुरन्त स्थिर धर्मों को सम्पन्न करना चाहिए।

३३४. समीक्षा करने पर ज्ञात होगा कि दिन समय की इकाई को प्रकट करनेवाला प्राण-भक्षक आरा है।

३३५. जीभ को वश में रखकर हिचकी के निकलने से पूर्व (मरण से पूर्व) शुभ कर्मों को यथाशीघ्र सम्पन्न करना चाहिए।

३३६. यह संसार ऐसी महिमा-सम्पन्न है कि जो कल था, आज नहीं रहता।

३३७. बुद्धिहीन मानव को जीवन (की क्षण-भंगुरता) का ज्ञान नहीं होता और करोड़ों का ही नहीं अनेकानेक विषयों का विचार करता है।

३३८. स्वयं जिसमें जीवन निर्वाह किया उस अंडे को अकेला छोड़ कर, पंख निकलने पर पक्षी जिस प्रकार निकल कर उड़ जाता है, उसी प्रकार शरीर के साथ प्राण का सम्बन्ध होता है।

३३९. निद्रा के समान है मरण, और निद्रा से जागरण के समान है जन्म।

३४०. (रोगों के आगार) शरीर में किरायेदार के समान उपस्थित प्राण के लिए मानो अभी तक कोई शाश्वत स्थान ही प्राप्त नहीं हुआ।

35. துறவு

341. யாதனின் யாதனின் நீங்கியான் நோதல்
அதனின் அதனின் இலன்.

342. வேண்டின் உண்டாகத துறக்க துறந்தபின்
ஈண்டு இயற்பால பல.

343. அடல்வேண்டும் ஐந்தன் புலத்தை விடல்வேண்டும்
வேண்டிய எல்லாம் ஒருங்கு.

344. இயல்பாகும் நோன்பிற்கொன்று இன்மை உடைமை
மயலாகும் மற்றும் பெயர்தது.

345. மற்றும் தொடர்ப்பாடு எவன்கொல் பிறப்பறுககல்
உற்ருர்க்கு உடம்பும மிகை.

346. யான்எனது என்னும் செருககுஅறுப்பான் வானோர்க்கு
உயர்நத உலகம் புகும்

347. பற்றி விடாஅ இடும்பைகள் பற்றினைப்
பற்றி விடாஅ தவாக்கு.

348. தலைப்பட்டார் தீரத் துறநதாா மயங்கி
வலைப்பட்டாா மற்றை யவா.

349. பற்றற்ற கணணே பிறப்பறுககும் மற்று
நிலையாமை காணப் படும்.

350. பற்றுக பற்றற்ருன் பற்றினை அப்பற்றைப்
பற்றுக பற்று விடற்கு.

३५. सन्यास

३४१. जिन-जिन वस्तुओं से मानव बन्धन-मुक्त हो जाता है उन-उन वस्तुओं से उसे दु:ख नहीं होता।

३४१. सुख की इच्छा हो तो सभी वस्तुओं के होते हुए उनसे मुक्ति प्राप्त करो। फिर यहीं अनेक प्रकार के सुख सिद्ध होंगे।

३४३. पंचेन्द्रियों की वासनाओं का संहार करना चाहिए, और उनकी आधारभूत सभी वस्तुओं का एक साथ परित्याग भी आवश्यक है।

३४४. किसी प्रकार का बन्धन न होना तपस्या का स्वभाव है, और बन्धनयुक्त होना तपस्या से हटकर वासना के वशीभूत होने का साधक होता है।

३४५. अन्य बन्धन क्यों मोल लेते हो? जन्म-मरण के दु:ख से मुक्ति चाहनेवाले को शरीर-बन्धन ही बड़ा दण्ड स्वरूप है।

३४६. 'मै', 'मेरा' के अहंकार का जो दमन कर डाले वह देवताओं से श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करेगा।

३४७. बन्धन-युक्त व्यक्ति को विविध प्रकार के दु:ख बाँध कर उसे कभी मुक्त न करेंगे।

३४८. पूर्णत: सन्यास ग्रहण करनेवाले ही श्रेष्ठ बनते हैं। इतर व्यक्ति अज्ञान के जाल में फँस कर बेबस पड़े रहते हैं।

३४९. बन्धन-मुक्त होने पर ही भव से मुक्ति प्राप्त होगी। अन्यथा (जन्म-मरण की) अस्थिरता बनी रहेगी।

३५०. सर्वथा बन्धन-मुक्त परमेश्वर से अपना बन्धन स्थापित करो। अन्य बन्धनों से मुक्त होने के हेतु इस बन्धन को बनाये रक्खो।

36. மெய்யுணர்தல்

351. பொருளல்ல வற்றைப் பொருளென்று உணரும்
மருளானும் மாணுப் பிறப்பு.

352. இருள்நீங்கி இன்பம் பயக்கும் மருள்நீங்கி
மாசறு காட்சி யவர்க்கு.

353. ஐயத்தின் நீங்கித் தெளிந்தார்க்கு வையத்தின்
வானம் நணிய துடைத்து.

354. ஐயுணர்வு எய்தியக் கண்ணும் பயமின்றே
மெய்யுணர்வு இல்லா தவர்க்கு.

355. எப்பொருள் எத்தன்மைத் தாயினும் அப்பொருள்
மெய்ப்பொருள் காண்பது அறிவு.

356. கற்றீண்டு மெய்ப்பொருள் கண்டார் தலைப்படுவர்
மற்றீண்டு வாரா நெறி.

357. ஓர்த்துள்ளம் உள்ளது உணரின் ஒருதலையாப்
பேர்த்துள்ள வேண்டா பிறப்பு.

358. பிறப்பென்னும் பேதைமை நீங்கச் சிறப்பென்னும்
செம்பொருள் காண்பது அறிவு.

359. சார்புஉணர்ந்து சார்பு கெடஒழுகின் மற்றழித்துச்
சார்தரா சார்தரு நோய்.

360. காமம் வெகுளி மயக்கம் இவை மூன்றன்
நாமம் கெடக்கெடும் நோய்.

३६. तत्व-ज्ञान

३५१. अस्थाई वस्तुओं को स्थाई वस्तु मानने के विपरीत ज्ञान के कारण जीव दुखद जन्म-मरण में फँसता है।

३५२. अज्ञान से मुक्त व निर्मल तत्व-ज्ञान के पारखी के सामने से अन्धकार हट जाता है और उसे स्थाई आनन्द प्राप्त होता है।

३५३. भ्रम-मुक्त व तत्व-ज्ञान प्राप्त व्यक्ति के समीप पृथ्वी-लोक से अधिक देव-लोक होता है।

३५४. तत्व-ज्ञान न हो तो पाँचों प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करनेवाली इन्द्रियाँ भी निष्प्रयोजन ही हैं।

३५५. कोई वस्तु कैसी ही क्यों न प्रतीत हो, उसके वास्तविक तथ्य को समझना ही ज्ञान कहलाता है।

३५६. आवश्यक अध्ययन के अनन्तर तत्व-ज्ञान को प्राप्त व्यक्ति पुनः इस संसार में न आने के मार्ग के अनुगामी बनेंगे।

३५७. कोई स्वयं मन में समीक्षा करके तत्व-ज्ञान प्राप्त कर ले तो समझ लो कि उसका पुनः जन्म न होगा।

३५८. भव-पीड़ा के आधारभूत 'अज्ञान' के हटने के लिए मोक्ष-प्राप्ति के आधारभूत तत्व के दर्शन को ही 'ज्ञान' कहते हैं।

३५९. सब पदार्थों के आधारभूत तात्विक वस्तु का ज्ञान प्राप्त कर कोई बन्धन-मुक्त होने का प्रयत्न करे तो जन्म-मरण के आधारभूत दुःख उसे नहीं सतायेंगे।

३६०. 'काम, क्रोध, मोह' इन तीनों के नामों का भी मन में नाश कर देने से भव-दुःख का स्वतः नाश हो जायगा।

37. அவா அறுத்தல்

361. அவாஎன்ப எல்லா உயிர்க்கும்எஞ் ஞான்றும்
தவாஅப் பிறப்பீனும் வித்து.

362. வேண்டுங்கால் வேண்டும் பிறவாமை மற்றது
வேண்டாமை வேண்ட வரும்.

363. வேண்டாமை அன்ன விழுச்செல்வம் ஈண்டில்லை
யாண்டும் அஃதொப்பது இல்.

364. தூஉய்மை என்பது அவாவின்மை மற்றது
வாஅய்மை வேண்ட வரும்.

365. அற்றவர் என்பார் அவாஅற்றார் மற்றையார்
அற்றாக அற்றது இலர்.

366. அஞ்சுவ தோரும் அறனே ஒருவனை
வஞ்சிப்ப தோரும் அவா

367. அவாவினை ஆற்ற அறுப்பின் தவாவினை
தான்வேண்டும் ஆற்றான் வரும்.

368. அவாஇல்லார்க்கு இல்லாகும் துன்பம்அஃது உண்டேல்
தவாஅது மேன்மேல் வரும்.

369. இன்பம் இடையறாது ஈண்டும் அவாவென்னும்
துன்பத்துள் துன்பம் கெடின்.

370. ஆரா இயற்கை அவாநீப்பின் அந்நிலையே
பேரா இயற்கை தரும்.

३७. तृष्णा-दमन

३६१. तृष्णा वह बीज है जो सभी जीवों को सभी कालों में निरन्तर जन्म-मरण में डाले रहता है।

३६२. इच्छा रखनी ही है तो पुनः जन्म न लेने की इच्छा रखनी चाहिए।

३६३. अनिच्छा के समान अति श्रेष्ठ सम्पत्ति इस संसार में नहीं है। अन्यत्र भी उसके तुल्य वस्तु अप्राप्य है।

३६४. पवित्रता कहते हैं अतृष्ण अवस्था को। वह (परमार्थ रूपी) सत्य की अभिलाषा करने पर (स्वतः) प्राप्त होती है।

३६५. मुक्त पुरुष तृष्णा रहित व्यक्ति ही होते हैं। अन्य व्यक्ति उतने मुक्त नहीं होते।

३६६. तृष्णा से भय खाना धर्म है क्योंकि वही दूसरों पर कपट व्यवहार करानेवाली है।

३६७. तृष्णा का पूर्ण दमन कर दें तो इच्छित मुक्ति-पद स्वतः सिद्ध हो जायगा।

३६८. अतृष्ण व्यक्ति से सभी दुःख दूर हट जायेंगे और सतृष्ण व्यक्ति पर दुःख बढ़ते जायेंगे।

३६९. दुःखों में तृष्णा नामक महान दुःख का दमन हो जाय तो निरन्तर सुख व्याप्त हो जाय।

३७०. अतृप्त स्वभाववाली तृष्णा का दमन हो जाय तो वह स्थिति ही स्थाई आनन्दावस्था प्रदान करेगी।

4. ஊழியல்

38. ஊழ்

371 ஆகுஊழால் தோன்றும் அசைவின்மை கைப்பொருள்
போகுஊழால் தோன்றும் மடி.

372. பேதைப் படுக்கும இழவுஊழ அறிவகற்றும்
ஆகல்ஊழ உற்றக கடை.

373. நுண்ணிய நூல்பல கற்பினும் மற்றுந்தன்
உண்மை அறிவே மிகும்

374. இருவேறு உலகதது இயற்கை திருவேறு
தெள்ளியர் ஆதலும் வேறு.

375. நலலவை எல்லாஅந தீயவாம் தீயவும்
நல்லவாம் செலவம் செயற்கு.

376. பரியினும ஆகாவாம் பாலல்ல உய்த்துச்
சொரியினும் போகா தம.

377. வகுததான வகுதத வகையல்லால் கோடி
தொகுத்தாக்கும் துய்ததல் அரிது.

378. துறப்பாாமன துப்புர விலலார் உறற்பால
ஊட்டா கழியும் எனின்.

379. நன்றுங்கால் நல்லவாக் காண்பவா அன்றுங்கால்
அல்லற் படுவது எவன்.

380. ஊழிற பெருவலி யாஉள மறறொன்று
சூழினும் தான்முந துறும்.

४. भाग्य

३८. भाग्य

३७१. धन-प्राप्ति के (सौ) भाग्य से परिश्रम प्रकट होता है, और विसर्जन के (दुर) भाग्य से आलस्य।

३७२. धन खोने का दुर्भाग्य मनुष्य को मन्द बुद्धि, और धनोपलब्धि का सौभाग्य उसे विशाल बुद्धि बना देगा।

३७३. अनेक गम्भीर ग्रन्थों का अध्ययन करने पर भी मनुष्य की भाग्यानुकूल वास्तविक बुद्धि ही प्रधान रहती है।

३७४ (भाग्य के फलस्वरूप) संसार का स्वभाव दो प्रकार का है। एक है सम्पत्ति-सम्पन्नता और दूसरा है सद्‌ज्ञान-सम्पन्नता।

३७५. धन-संग्रह का प्रयास (भाग्य के फलस्वरूप) सद् को असद् और असद् को सद् प्रतीत कराता है।

३७६. भाग्य में कोई वस्तु न हो तो उसकी कितनी ही रक्षा क्यों न की जाय नहीं ठहरेगी, और भाग्य में हो तो निकाल बाहर फेंकने पर भी नहीं जावेगी।

३७७. भाग्य के विभाजन के प्रतिकूल कोई करोड़ों वस्तुओं का संग्रह करने पर भी उनका उपभोग नहीं कर सकता।

३७८. भाग्य के फलस्वरूप उपस्थित बाधाएँ मानव को बाधित न करें तो उपभोग्य वस्तुओं से रहित व्यक्ति सन्यास धारण कर लेंगे।

३७९. सौभाग्य के समय सानन्द प्रतीत होनेवाले दुर्भाग्य के समय दुखित क्यों हों?

३८०. भाग्य से बढ़कर शक्ति कौन-सी है? कोई दूसरी शक्ति इसे घेरे तो भी यही (अधिक सबल होकर) उसके आगे आ उपस्थित होता है।

2. பொருள்

२. अर्थ

1. அரசியல்

39. இறைமாட்சி

381. படைகுடி கூழ்அமைச்சு நட்புஅரண் ஆறும்
உடையான் அரசருள் ஏறு.

382. அஞ்சாமை ஈகை அறிவுஊக்கம் இந்நான்கும்
எஞ்சாமை வேந்தற்கு இயல்பு.

383. தூங்காமை கல்வி துணிவுடைமை இம்மூன்றும்
நீங்கா நிலன்ஆள் பவர்க்கு.

384. அறன்இழுக்காது அல்லவை நீக்கி மறன்இழுக்கா
மானம் உடையது அரசு.

385. இயற்றலும் ஈட்டலும் காத்தலும் காத்த
வகுத்தலும் வல்லது அரசு.

386. காட்சிக்கு எளியன் கடுஞ்சொல்லன் அல்லனேல்
மீக்கூறும் மன்னன் நிலம்.

387. இன்சொலால் ஈத்தளிக்க வல்லாற்குத் தன்சொலால்
தான்கண் டனைத்துஇவ் வுலகு.

388. முறைசெய்து காப்பாற்றும் மன்னவன் மக்கட்கு
இறைஎன்று வைக்கப் படும்.

389. செவிகைப்பச் சொற்பொறுக்கும் பண்புடை வேந்தன்
கவிகைக்கீழ்த் தங்கும் உலகு.

390 கொடைஅளி செங்கோல் குடிஓம்பல் நான்கும்
உடையானும் வேந்தர்க்கு ஒளி.

१. शासन – विधान

३९. नरेश के गुण - कर्म

३८१. सैन्य, प्रजा, धन, अमात्य, मित्र, दुर्ग—ये छहों जिसके पास हों वह राजाओं में पुरुष-सिंह सदृश होता है।

३८२. निर्भयता, दान, बुद्धिमत्ता, उत्साह—इन चारों की सतत पूर्णता नरेन्द्र का सहज स्वभाव है।

३८३. अनिद्रा, विद्या, निर्भीक-प्रकृति—ये तीनों भूपति से पृथक न होंगी।

३८४. राजा वही है जो शासन-नीति से च्युत न होते हुए राज्य से अधर्म को हटाकर अपनी वीरता को सम्मान के साथ बनाये रक्खे।

३८५. राजा वही है जो धन के सप्रयत्न उपार्जन, उसकी वृद्धि, रक्षा तथा वितरण में प्रवीण हो।

३८६. जिसके दर्शन सुलभ हों और जो कठोर वचन नहीं कहता हो उस नृपति के राज्य की प्रशंसा होती है।

३८७. यह लोक मधुर वचनों व दान देने की शक्ति से युक्त नरेश की प्रशंसा करते हुए उसके विचारानुकूल बनता है।

३८८. जनता की न्यायोचित रक्षा करनेवाले राजा को प्रजा साक्षात् भगवान के समान मानेगी।

३८९. कानों को कर्कश लगनेवाले शब्दों को सहने की शक्ति से युक्त सभ्य सम्राट् के छत के नीचे संसार ठहरेगा।

३९०. राजाओं में वही दीपक है जिसमें दान, दया, धर्म-नीति, प्रजा-संरक्षण—ये चारों हों।

40. கல்வி

391. கற்க கசடறக் கற்பவை கற்றபின்
நிற்க அதற்குத் தக.

392. எணஎன்ப ஏனை எழுத்துஎன்ப இவ்இரண்டும்
கண்என்ப வாழும் உயிர்க்கு.

393. கண்ணுடையர் என்பவர் கற்றோர் முகத்துஇரண்டு
புண்ணுடையர் கல்லா தவர்.

394. உவப்பத் தலைக்கூடி உள்ளப் பிரிதல்
அனைத்தே புலவர் தொழில்.

395. உடையார்முன் இல்லார்போல் ஏக்கற்றும் கற்றார்
கடையரே கல்லா தவர்.

396. தொட்டனைத்து ஊறும் மணற்கேணி மாந்தர்க்குக்
கற்றனைத்து ஊறும் அறிவு.

397. யாதானும் நாடுஆமால் ஊர்ஆமால் என்னொருவன்
சாந்துணையும் கல்லாத வாறு.

398. ஒருமைக்கண் தான்கற்ற கல்வி ஒருவற்கு
எழுமையும் ஏமாப்பு உடைத்து.

399. தாம்இன் புறுவது உலகுஇன் புறக்கண்டு
காமுறுவர் கற்றறிந் தார்.

400. கேடுஇல விழுச்செல்வம் கல்வி ஒருவற்கு
மாடுஅல்ல மற்றை யவை.

४०. शिक्षा

३९१. पठनीय विषयों का निर्दोष अध्ययन करें। तदनन्तर उसके अनुसार व्यवहार करने में स्थिर रहें।

३९२. अंक और अक्षर कहलानेवाले ये दोनों जीवित प्राणिमात्र के नेत्र कहलाते हैं।

३९३. जो शिक्षित हैं वे ही आँखोंवाले हैं। अशिक्षित तो केवल आनन पर दो ज़ख्म लिये हुए हैं।

३९४ विद्वान का कर्म इतना ही है कि उसका आनन्दप्रद मिलन बिछुड़ते समय मन में यह व्यथा उत्पन्न कर दे कि फिर न जाने कब मिलेंगे।

३९५. धनवान के सम्मुख निर्धन के समान अति दीन भाव से झुके रहने पर भी शिक्षित ही श्रेष्ठ हैं, और अशिक्षित सदा निम्न ही होंगे।

३९६. पृथ्वी में कुँआ जितना ही गहरा खुदेगा उतना ही अधिक जल निकलेगा। वैसे ही मानव में जितनी ही शिक्षा अधिक होगी उतनी ही बुद्धि तीव्र बनेगी।

३९७. शिक्षित के लिए सभी देश और सभी नगर अपने बन जाते हैं। अत: कोई आमरण अशिक्षित क्यों बना रहता है?

३९८. एक जन्म के स्वाध्ययन से प्राप्त शिक्षा सात जन्मों तक उसकी सहायता करती है।

३९९. अपने लिए आनन्दप्रद 'शिक्षा' से ही संसार को भी आनन्दित देखकर बुद्धिमान उसके अधिकाधिक उपार्जन की इच्छा करेंगे।

४००. अनश्वर महान सम्पत्ति 'शिक्षा' ही है। किसी के लिए अन्य कोई विषय ऐसा श्रेष्ठ नहीं है।

41. கல்லாமை

401 அரங்குஇன்றி வட்டாடி அற்றே நிரம்பிய
நூல்இன்றிக கோட்டி கொளல்

402. கலலாதான சொலகா முறுதல முலைஇரணடும்
இல்லாதாள் பெண்காமுற றற்று

403. கல்லா தவரும் நனிநல்லர் கற்றூர்முன்
சொலலா திருககப பெறின்.

404. கல்லாதான் ஒட்பம் கழியநன்று ஆயினும்
கொளளாா அறிவுடை யார்.

405. கலலா ஒருவன் தகைமை தலைப்பெய்து
சொலலாடச் சோர்வு படும்.

406. உளாஎன்னும் மாததிரையர் அல்லால் பயவாக்
களர்அனையர் கல்லா தவர்.

407. நுண்மாண் நுழைபுலம் இல்லான் எழில்நலம்
மணமாண் புனைபாவை அற்று.

408. நலலார்கண படட வறுமையின் இன்னுதே
கல்லாாகண் பட்ட திரு

409. மேற்பிறந்தா ஆயினும் கல்லாதா கீழ்ப்பிறந்தும்
கற்றூா அனைத்துஇலர் பாடு.

410. விலஙகொடு மககள அனையர் இலங்குநூல்
கற்றூரொடு ஏனை யவர்.

४१. अशिक्षा

४०१. तत्त्व भरे ग्रन्थों के अध्ययन के बिना विद्वत्-सभा में प्रवेश होना जुए के नियमो को समझे बिना चौपड़ फेंकने के समान ही है।

४०२. विद्वत् सभा में अशिक्षित के भाषण करने की अभिलाषा उभय उरोज रहित नारी के प्रेम करने की अभिलाषा के समान ही है।

४०३. शिक्षित के सम्मुख मौन धारण किये रहें तो अशिक्षित भी बड़े सभ्य ठहरते हैं।

४०४. अशिक्षित की बुद्धि अति श्रेष्ठ होने पर भी बुद्धिमान उसका मान नहीं करेंगे।

४०५. अशिक्षित का आत्मसम्मान शिक्षितों के संग सम्भाषण करने पर शिथिल पड़ जायेगा।

४०६. इतना ही कि अशिक्षित भी जीवित कहलाते हैं, अन्यथा वे निष्प्रयोजन ऊसर भूमि के समान हैं।

४०७. सूक्ष्म, श्रेष्ठ व तीव्र बुद्धि से रहित व्यक्ति का रूप-लावण्य शुभ्र मिट्टी के सुन्दर रूप से निर्मित गुड़िया के सदृश ही है।

४०८. अशिक्षितों को प्राप्त धन शिक्षितों को प्राप्त दरिद्रता से अधिक दु:खप्रद होता है।

४०९. अशिक्षित श्रेष्ठ कुल में जन्मे होने पर भी निम्न-कुल में जन्मे हुए शिक्षित के समान सम्माननीय नहीं होते।

४१०. अशिक्षितों की तुलना में विशद ज्ञान-ग्रन्थों की शिक्षा प्राप्त व्यक्ति ठीक उसी प्रकार ठहरते हैं जैसे पशुओं की तुलना में मानव।

41. கல்லாமை

401 அரங்குஇன்றி வட்டாடி அற்றே நிரம்பிய
நூலஇன்றிக் கோட்டி கொளல்

402. கல்லாதான சொலகா முறுதல் முலைஇரண்டும்
இலலாதாள பெணகாமுற றற்று

403. கல்லா தவரும் நனிநல்லர் கற்றார்முன்
சொலலா திருககப் பெறின்.

404 கல்லாதான் ஒட்பம் கழியநன்று ஆயினும்
கொள்ளார் அறிவுடை யார்.

405 கலலா ஒருவன் தகைமை தலைப்பெய்து
சொலலாடச சோர்வு படும்.

406. உளர்என்னும மாத்திரையர் அல்லால் பயவாக்
களர்அனையர் கல்லா தவர்.

407. நுண்மாண நுழைபுலம் இல்லான் எழில்நலம்
மண்மாண் புனைபாவை அற்று.

408 நல்லார்கண பட்ட வறுமையின் இன்னாதே
கல்லார்கண பட்ட திரு

409. மேற்பிறந்தார் ஆயினும் கல்லாதார் கீழ்ப்பிறந்தும்
கற்றார் அனைத்துஇலர் பாடு.

410. விலஙகொடு மககள அனையர் இலங்குநூல்
கற்றாரொடு ஏனை யவர்.

४१. अशिक्षा

४०१. तत्त्व भरे ग्रन्थों के अध्ययन के विना विद्वत्-सभा में प्रवेश होना जुए के नियमों को समझे विना चौपड़ फेंकने के समान ही है ।

४०२. विद्वत् सभा में अशिक्षित के भाषण करने की अभिलाषा उभय उरोज रहित नारी के प्रेम करने की अभिलाषा के समान ही है ।

४०३. शिक्षित के सम्मुख मौन धारण किये रहें तो अशिक्षित भी बड़े सभ्य ठहरते हैं ।

४०४. अशिक्षित की बुद्धि अति श्रेष्ठ होने पर भी बुद्धिमान उसका मान नहीं करेंगे ।

४०५. अशिक्षित का आत्मसम्मान शिक्षितों के संग सम्भाषण करने पर शिथिल पड़ जायेगा ।

४०६. इतना ही कि अशिक्षित भी जीवित कहलाते हैं, अन्यथा वे निष्प्रयोजन ऊसर भूमि के समान हैं ।

४०७. सूक्ष्म, श्रेष्ठ व तीव्र बुद्धि से रहित व्यक्ति का रूप-लावण्य शुभ्र मिट्टी के सुन्दर रूप से निर्मित गुड़िया के सदृश ही है ।

४०८. अशिक्षितों को प्राप्त धन शिक्षितों को प्राप्त दरिद्रता से अधिक दु:खप्रद होता है ।

४०९. अशिक्षित श्रेष्ठ कुल में जन्मे होने पर भी निम्न-कुल में जन्मे हुए शिक्षित के समान सम्माननीय नहीं होते ।

४१०. अशिक्षितों की तुलना में विशद ज्ञान-ग्रन्थों की शिक्षा प्राप्त व्यक्ति ठीक उसी प्रकार ठहरते हैं जैसे पशुओं की तुलना में मानव ।

42. கேள்வி

411. செலவததுள செல்வம செவிசசெல்வம அசசெல்வம
செல்வததுள எலலாம் தலை

412. செவிககுஉணவு இலலாத போழ்து சிறிது
வயிறறுககும ஈயப படும்

413. செவியுணவின் கேள்வி உடையார் அவியுணவின
ஆனருரோடு ஒப்பா நிலத்து.

414. கறறிலன ஆயினும் கேட்க அஃதுஒருவற்கு
ஒற்கததின் ஊறறும துணை.

415 இழுககல் உடையுழி ஊறறுககோல் அற்றே
ஒழுககம உடையாாவாயச சொல்.

416. எனைததானும் நல்லவை கேட்க அனைத்தானும்
ஆன்ற பெருமை தரும்.

417 பிழைததுஉணாநதும் பேதைமை சொல்லார் இழைத்துஉணர்நது
ாணடிய கேள்வி அவர்.

418. கேட்பினும் கேளாத தகையவே கேள்வியால்
தோட்கப் படாத செவி,

419 நுணங்கிய கேளவியா அல்லார் வணங்கிய
வாயினா ஆதல் அரிது.

420 செவியின் சுவையுணரா வாயுணர்வின் மாக்கள்
அவியினும் வாழினும் என்,

४२. श्रवण

४११. सम्पत्तियों में मूल्यवान है श्रवण (से प्राप्त ज्ञान) की सम्पत्ति। वही सम्पत्ति सब सम्पत्तियों से श्रेष्ठ है।

४१२. कर्णों को आहार अप्राप्य हो तो उस समय (उसके हेतु शरीर को बनाये रखने के लिए) तनिक पेट को भी आहार दिया जायगा।

४१३. कर्ण-आहार रूपी 'श्रवण' (ज्ञान) से सम्पन्न व्यक्ति पृथ्वी पर रहने पर भी हवि का भोग करनेवाले देवताओं के समान हैं।

४१४. शिक्षित न होने पर भी शिक्षितों के वचनों को सुनो। वह शैथिल्य के समय आधार-दण्ड के समान सहायक होगा।

४१५. सच्चरित्र के मुख से निकलनेवाले शब्द फिसलन पर चलते समय आधार-दण्ड के समान (जीवन में सहायक) होते हैं।

४१६. कोई छोटा हो तो भी उसकी अच्छी बातें सुननी चाहिए। वे भी (समय पर) विशिष्ट गौरव प्रदान करेंगी।

४१७. सूक्ष्म निरीक्षण के साथ श्रवण करके ज्ञान संचित किये हुए व्यक्ति भ्रम होने पर भी बुद्धिहीन शब्द न निकालेंगे।

४१८. श्रवण (ज्ञान) से जो कर्ण बेधित न हुए हों वे सुनने पर भी बहरे स्वभाववाले ही हैं।

४१९. सूक्ष्म श्रवण से वंचित व्यक्ति नम्र भाषी नहीं हो सकते।

४२०. श्रवण-माधुर्य के अनुभव के बिना केवल मुख-माधुर्य में लिप्त मनुष्य मरें तो क्या? जियें तो क्या?

43. அறிவுடைமை

421 அறிவுஅற்றம காக்கும கருவி செறுவார்க்கும்
உள்அழிககல் ஆகா அரண,

422. சென்ற இடத்தால் செலவிடா தீதுஒரீஇ
நன்றினபால் உய்ப்பது அறிவு

423 எப்பொருள் யாரயார்வாய்க கேட்பினும் அப்பொருள்
மெயப்பொருள் காண்பது அறிவு.

424. எணபொருள் ஆகச் செலச்சொல்லித தான்பிறாவாய
நுணபொருள காணபது அறிவு.

425. உலகம் தழீஇயது ஒடபம மலாதலும்
கூம்பலும் இல்லது அறிவு

426 எவ்வது உறைவது உலகம உலகததொடு
அவ்வது உறைவது அறிவு.

427. அறிவுடையாா ஆவது அறிவார் அறிவிலார்
அஃதுஅறி கலலா தவா.

428 அஞுசுவது அஞ்சாமை பேதைமை அஞ்சுவது
அஞுசல அறிவார் தொழில்.

429. எதிரதாக காக்கும் அறிவினர்ககு இல்லை
அதிர வருவதோா நோய்.

430. அறிவுடையார் எல்லாம உடையார் அறிவிலார்
என்உடைய ரேனும் இலர்.

४३. बुद्धिमत्ता

४२१. बुद्धि विध्वंस से रक्षा करनेवाला साधन है, और शत्रुओं से भी नष्ट न होनेवाला सुदृढ़ दुर्ग है।

४२२. सभी इच्छित स्थानों पर मन को जाने से रोक कर अशुभ से हटा कर शुभ मार्ग की ओर प्रवृत्त करना बुद्धिमत्ता है।

४२३. कोई विषय चाहे किसी से सुनें, (उसे उसी रूप में न मान कर) उसमें सत्य को निरखना बुद्धिमत्ता है।

४२४. दूसरों के समझने योग्य सरल रूप में अपने विचारों को व्यक्त करके, दूसरों के शब्दों में गम्भीर तत्वों को निरखना बुद्धिमत्ता है।

४२५. लोक को मित्र बनाना बुद्धिमत्ता है। उस मित्र के सम्मुख पुष्पित होना और पीछे सम्पुटित न होना बुद्धिमत्ता है।

४२६. जैसा व्यवहार लोक में हो, उसके साथ उसी प्रकार का व्यवहार करना बुद्धिमत्ता है।

४२७. बुद्धिमान भविष्य का ज्ञान रखता है। बुद्धिहीन उस प्रकार का ज्ञान नहीं रखता।

४२८. जिससे डरना चाहिये उससे निडर रहना बुद्धिहीनता है, और डरना ही बुद्धिमान का कार्य है।

४२९. भावी की रक्षा कर लेनेवाले बुद्धिमानों पर प्रकंपित करनेवाली कोई विपत्ति नहीं आ सकती।

४३०. बुद्धिमान (के पास और कुछ न होने पर भी) सर्व-सम्पन्न होते हैं। बुद्धिहीन के पास चाहे कुछ भी हो, वे कंगाल ही हैं।

44. குற்றங்கடிதல்

431. செருக்கும் சினமும் சிறுமையும் இலலார்
பெருககம பெருமித நீரதது.

432. இவறலும் மாண்புஇறந்த மானமும மாணு
உவகையும் ஏதம் இறைககு.

433. தினைததுணையாம் குற்றம் வரினும் பனைத்துணையாக
கொள்வா பழிநாணு வாா.

434. குற்றமே காகக பொருளாகக குற்றமே
அற்றம தரூஉம பகை.

435. வருமுன்னாக காவாதான் வாழககை எரிமுன்னர்
வைததூறு போலக கெடும்.

436. தன்குற்றம நீக்கிப பிறாகுற்றம் காண்கிறபின்
என்குற்றம் ஆகும் இறைககு.

437. செயறபால செய்யாது இவறியான் செல்வம்
உயறபாலது அன்றிக கெடும்.

438. பற்றுளளம என்னும் இவறன்மை எறறுள்ளும்
எண்ணப படுவதொன்று அன்று.

439. வியவறக எஞ்ஞான்றும தன்னை நயவற்க
நன்றி பயவா வினை.

440. காதல காதல் அறியாமை உய்க்கிறபின்
ஏதில ஏதிலார் நூல.

४४. दोष-निरोध

४३१. अभिमान, क्रोध व विषय-वासना के दोषों से रहित व्यक्ति अधिकाधिक वैभव सम्पन्न होते जायेंगे।

४३२. दानहीनता, निष्प्रयोजनीय सम्मान व अनुचित आनन्द नरेश के लिए दोष हैं।

४३३. मान-हानि से भयभीत होनेवाले व्यक्ति तृणमात्र के दोष को भी ताड़ के समान मानेंगे।

४३४. दोष ही अपमान (व नाश) उत्पन्न करनेवाला शत्रु है; अतः उस पर ध्यान रखकर अपने को उससे मुक्त रक्खो।

४३५. दोषागमन से पूर्व अपनी रक्षा न करनेवाले का जीवन अग्नि के सम्मुख उपस्थित भूसे के समान नाशमान होगा।

४३६. राजा अपने दोषों से रिक्त होने के पश्चात् दूसरों का दोषान्वेषण करे तो उस पर किस प्रकार का दोषारोपण हो सकता है?

४३७. उचित कर्मों को करनेवाले लोभी का धन वृद्धिमान न होकर विनाश को ही प्राप्त होगा।

४३८. कृपणता रूपी लोभी स्वभाव का वर्गीकरण किन्हीं (दोषों) में नहीं किया जा सकता।

४३९. जीवन में कभी अपने को अति महान समझकर गर्व न करना चाहिए; प्रयोजनहीन कर्म की इच्छा भी न रक्खो।

४४०. इच्छित वस्तु का अनुभव दूसरों पर प्रकट हुए बिना कर सको तो शत्रुओं का षडयन्त्र निष्फल रहेगा।

45. பெரியாரைத் துணைக்கோடல்

441 அறன்அறிநது மூத்த அறிவுடையார் கேண்மை
திறன்அறிந்து தேர்நது கொளல்.

442. உறறநோய் நீககி உறாஅமை முற்காககும்
பெற்றியார்ப பேணிக கொளல்.

443. அரியவறறுள எலலாம் அரிதே பெரியாரைப்
பேணித தமராக கொளல்.

444. தம்மின் பெரியார் தமரா ஒழுகுதல்
வனமையுள் எல்லாம தலை.

445. சூழவாரகண ணாக ஒழுகலான் மன்னவன்
சூழவாரைச் சூழ்ந்து கொளல்.

446. தககார இனத்தனாய்த் தான்ஒழுக வல்லானைச்
செறறார் செயக்கிடநதது இல்.

447. இடிக்கும் துணையாரை ஆள்வாரை யாரே
கெடுககும் தகைமை யவர்.

448. இடிப்பாரை இலலாத ஏமரா மன்னன்
கெடுப்பார் இலானும கெடும்.

449. முதல்இலார்ககு ஊதியம் இல்லை மதலையாம்
சார்புஇலார்ககு இல்லை நிலை.

450. பல்லார் பகைகொளலின் பத்தடுத்த தீமைத்தே
நல்லார் தொடர்கை விடல்.

४५. श्रेष्ठों का साहचर्य

४४१. धर्मज्ञ व अपने से बड़े ज्ञानी पुरुषों की मित्रता उनकी महानता को समझकर यथानुसार प्राप्त करो।

४४२. आये हुए दुःख को दूर करके भविष्य के दुखों को भी रोकते हुए पहले से ही रक्षा करने की योग्यता रखनेवाले व्यक्ति का सम्मान करके उनसे साहचर्य स्थापित करो।

४४३. श्रेष्ठ व्यक्ति का सम्मान करके उन्हें अपना बना लेना दुर्लभ पदार्थों से दुर्लभ है।

४४४. अपने से श्रेष्ठ व्यक्ति का अपना होकर रहना सभी शक्तियों में श्रेष्ठ है।

४४५. मन्त्री ही नेत्र के समान होने के कारण नृपति को चाहिए कि ध्यान से विचार करके उनका चुनाव करे।

४४६. जिसे योग्य व श्रेष्ठ व्यक्तियों के साहचर्य का बल प्राप्त होगा, उसे शत्रु द्वारा किसी प्रकार की बाधा नहीं पहुँच सकती।

४४७. (दोषों को सूचित करते हुए) डाँटनेवाले सहचर के आदेशानुसार चलनेवाले को कोई कैसे हानि पहुँचा सकता है?

४४८. डाँटनेवाले सहचर से रहित निराश्रय नृपति का नाश शत्रुओं के अभाव में भी अवश्यम्भावी है।

४४९. मूलधन न हो तो लाभ अप्राप्य होता है। सबल सहायक का आश्रय न हो तो स्थायित्व अप्राप्य होता है।

४५०. सज्जनों की मैत्री का त्याग अनेक व्यक्तियों की शत्रुता से दस गुना हानिप्रद होता है।

46. சிற்றினம் சேராமை

451. சிற்றினம் அஞ்சும் பெருமை சிறுமைதான்
சுற்றமாச் சூழ்ந்து விடும்.

452. நிலத்துஇயல்பான் நீர்திரிந்து அற்றாகும் மாந்தர்க்கு
இனத்தியல்புஅது ஆகும் அறிவு.

453. மனத்தான்ஆம் மாந்தர்க்கு உணர்ச்சி இனத்தான்ஆம்
இன்னான் எனப்படும் சொல்.

454. மனத்துஉளது போலக் காட்டி ஒருவற்கு
இனத்துஉளது ஆகும் அறிவு.

455. மனம்தூய்மை செய்வினை தூய்மை இரண்டும்
இனம்தூய்மை தூவா வரும்.

456. மனம்தூயார்க்கு எச்சம்நன்று ஆகும் இனம்தூயார்க்கு
இல்லைநன்று ஆகா வினை.

457. மனநலம் மன்உயிர்க்கு ஆக்கம் இனநலம்
எல்லாப் புகழும் தரும்.

458 மனநலம் நன்குஉடையர் ஆயினும் சான்றோர்க்கு
இனநலம் ஏமாப்பு உடைத்து.

459. மனநலத்தின் ஆகும் மறுமைமற்று அஃதும்
இனநலத்தின் ஏமாப்பு உடைத்து.

160. நல்லினத்தின் ஊங்கும் துணைஇல்லை தீயினத்தின்
அல்லல் படுப்பதூஉம் இல்.

४६. कुसंग का त्याग

४५१. श्रेष्ठता कुसंग से डरती है। नीचता ही उसे बन्धु मानकर उससे घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित कर देती है।

४५२. भूमि के गुण से जल में परिवर्तन आ जाता है। मनुष्य भी संग के गुण के अनुकूल बुद्धि प्राप्त करता है।

४५३. मनुष्य का अनुभव मन पर आधारित है। 'यह मनुष्य ऐसा है, यह कथन उसके संग पर आधारित है।

४५४. मनुष्य की बुद्धि जो उसके अपने मन में उपस्थित-सी प्रतीत होती है, वस्तुत: उसके संग की ही (उपज) है।

४५५. मन एवं कर्म दोनों की शुद्धता संग की शुद्धता पर ही अवलम्बित है।

४५६. शुद्ध मनवालों के पश्चात् शुभ (नाम व यश आदि) ही शेष रहता है। शुद्ध संगवालों का कोई भी कर्म अशुभ नहीं होता।

४५७. मन की पवित्रता मानव का वैभव है। संग की विशुद्धता सकल सुयश प्रदान करती है।

४५८. मन पूर्णत: पवित्र होने पर भी बुद्धिमान के लिए संग की पवित्रता विशिष्ट सहायक शक्ति होती है।

४५९. मन की पवित्रता से स्वर्ग-सुख प्राप्त होता है, और वह संग की पवित्रता से श्रेष्ठतर बनता है।

४६०. अच्छे संग से बढ़कर कोई सहायक नहीं होता, और कुसंग से बढ़कर अहितकर शत्रु भी कोई नहीं होता।

47. தெரிந்து செயல் வகை

461. அழிவதூஉம் ஆவதூஉம் ஆகி வழிபயககும்
ஊதியமும் சூழ்ந்து செயல்.

462 தெரிந்த இனததொடு தேர்ந்துஎண்ணிச செய்வார்க்கு
அரும்பொருள் யாதொன்றும் இல்.

463. ஆககம் கருதி முதல்இழக்கும் செய்வினை
ஊககார அறிவுடை யார்

464. தெளிவுஇல் அதனைத தொடங்கார் இளிவுஎன்னும்
ஏதப்பாடு அஞ்சு பவர்.

465. வகைஅறச சூழாது எழுதல் பகைவரைப்
பாத்திப படுப்பதோா ஆறு.

466. செயதக்க அலல செயக்கெடும் செய்தகக
செய்யாமை யானும் கெடும.

467. எண்ணித் துணிக கருமம துணிந்தபின்
எண்ணுவம் என்பது இழுககு.

468. ஆற்றின் வருந்தா வருததம் பலர்நின்று
போற்றினும் பொத்துப் படும்.

469. நன்றுஆற்றல் உள்ளும் தவறுஉண்டு அவரவர்
பண்புஅறிந்து ஆற்ருக் கடை.

470. எள்ளாத எண்ணிச் செயல்வேண்டும் தம்மொடு
கொளளாத கொள்ளாது உலகு.

४७. बोधयुक्त कर्म

४६१. वस्तु-नाश और व्यय के अनन्तर प्राप्य लाभ का भी विचार करके किसी कर्म में प्रवृत्त हो।

४६२. परिचित बंधुओं के साथ समझ-बूझकर क्रियाशील होनेवाले व्यक्तियों के लिए असम्भव वस्तु कुछ नहीं है।

४६३. अत्यधिक लाभ के लोभ से मूलधन को खो बैठने के कर्म में बुद्धिमान प्रवृत्त नहीं होंगे।

४६४. अपयश-प्रद दोष से डरनेवाले उस कर्म का आरम्भ नहीं करेंगे जिसमें लाभ स्पष्ट न हो।

४६५. विभिन्न परिस्थितियों का विचार किये विना आक्रमण करना शत्रु को सुदृढ़ भूमि प्रदान करने का एक मार्ग है।

४६६. अनुचित कर्मो के करने से तथा उचित कर्मो के न करने से भी मनुष्य की अधोगति होगी।

४६७. सोच विचार कर कर्म में प्रवृत्त हो। प्रवृत्त होने के पश्चात सोच विचार करना मूढता है।

४६८. उचित उपाय से न किया हुआ प्रयास अन्य अनेक व्यक्तियों का आश्रय प्राप्त होने पर भी व्यर्थ ही जायगा।

४६९. यदि तुम किसी के स्वभाव को समझकर उसके अनुकूल कर्म न करोगे तो भला करने पर भी उससे बुरा सम्भवित होगा।

४७०. लोकानुकूल कर्म करो, क्योंकि अपने लिये प्रतिकूल कर्म को लोक अंगीकार नहीं करेगा।

48. வலியறிதல்

471. வினைவலியும் தன்வலியும் மாற்றான் வலியும
துணைவலியும் தூககிச் செயல்.

472. ஒல்வது அறிவது அறிநதுஅதன் கண்தங்கிச்
செல்வார்க்குச செல்லாதது இல்.

473. உடைத்தம் வலிஅறியார ஊககததின் ஊககி
இடைககண முரிந்தார பலர்.

474 அமைநதுஆங்கு ஒழுகான் அளவுஅறியான் தன்னை
வியநதான் விரைநது கெடும்.

475. பீலிபெய சாகாடும் அச்சுஇறும் அப்பண்டம்
சால மிகுத்துப் பெயின்.

476. நுனிக்கொம்பர் ஏறினார் அஃதிறந்து ஊககின்
உயிர்ககுஇறுதி ஆகி விடும்.

477. ஆற்றின் அளவுஅறிந்து ஈக அதுபொருள்
போற்றி வழஙகும் நெறி.

478. ஆகாறு அளவுஇட்டிது ஆயினும் கேடில்லை
போகாறு அகலாக கடை.

479. அளவுஅறிநது வாழாதான் வாழ்ககை உளபோல
இல்லாகித தோன்றாக் கெடும்

480. உள்வரை தூக்காத ஒப்புரவு ஆண்மை
வளவரை வல்லைக் கெடும்.

४८. शक्ति का बोध

४७१. इच्छित कर्म की शक्ति, अपनी शक्ति, शत्रु की शक्ति तथा दोनों के सहायकों की भी शक्ति को तौल कर ही उक्त कर्म में प्रवृत्त होना चाहिए।

४७२. अपने कर्म तथा उसके लिए आवश्यक बल को समझकर उस पर दत्तचित्त होकर दृढ़ता के साथ चलनेवाले के लिए असम्भव कुछ नहीं है।

४७३. अपनी शक्ति का बोध न होने के कारण अनेक व्यक्ति आवेशवश किसी कर्म में अग्रसर होकर उसे मध्य में छोड़ अवनति को प्राप्त हुए हैं।

४७४. दूसरों के साथ मिलकर न चलनेवाले अपनी शक्ति की सीमा से भी अनभिज्ञ अहंकारी का शीघ्र नाश होगा।

४७५. मयूर-पंख से ही लदी गाड़ी क्यों न हो, वह वस्तु एक परिमाण से अधिक हो जावे तो गाड़ी की धुरी टूट जायगी।

४७६. वृक्ष के सिरे की शाखा पर पहुँचकर कोई उससे भी आगे आवेश के फलस्वरूप बढ़े तो वह आवेश प्राणान्तक हो जायगा।

४७७. अपनी सीमा को समझकर उचित रूप व मात्रा में दान करो। वही सम्पत्ति को सँभलकर शासन करने की नीति है।

४७८. धन के आगमन का मार्ग (आय) संकुचित होने पर भी विसर्जन का मार्ग (व्यय) चौड़ा न हो तो कोई हानि नहीं।

४७९. अपनी सम्पत्ति की सीमा को न समझकर जीनेवाले का जीवन सम्पन्न-सा प्रतीत होकर भी, सर्वरिक्त हो, विनाश को प्राप्त होगा।

४८०. अपनी सम्पत्ति की सीमा को न समझकर बड़े दानी बनने से वह सीमा शीघ्र घट जायगी।

49. காலம் அறிதல்

481. பகல்வெல்லும் கூகையைக காக்கை இகல்வெல்லும்
வேந்தர்கது வேணடும் பொழுது.

482. பருவததொடு ஒட்ட ஒழுகல் திருவினைத்
தீராமை ஆரகும் கயிறு.

483. அருவினை என்ப உளவோ கருவியால்
காலம் அறிந்து செயின்.

484 ஞாலம் கருதினும் கைகூடும் காலம்
கருதி இடத்தான் செயின்.

485. காலம் கருதி இருப்பர் கலங்காது
ஞாலம் கருது பவர்.

486 ஊககம் உடையான் ஒடுக்கம் பொருதகர்
தாக்கற்குப் பேரும் தகைதது.

487. பொள்ளென ஆங்கே புறம்வேரார் காலம்பார்த்து
உள்வேர்ப்பா ஒள்ளி யவா.

488. செறுநரைக் காணின சுமக்க இறுவரை
காணின் கிழக்காம் தலை.

489. எய்தற்கு அரியது இயைந்தக்கால் அந்நிலையே
செய்தற்கு அரிய செயல்.

490 கொககுஒக்க கூம்பும் பருவத்து மற்றுஅதன்
குத்துஒகக சீர்த்த இடத்து.

४९. समय का बोध

४८१. दिन के समय उल्लू पर (उससे दुर्बल) कौआ विजय प्राप्त कर लेता है। शत्रु पर विजय प्राप्त करने की इच्छा रखनेवाले सम्राट् के लिए तदनुकूल अवसर की आवश्यकता होती है।

४८२. समयानुकूल कार्यरत होना (अस्थिर) धन को स्थिर रखनेवाले सूत्र के समान होता है।

४८३. आवश्यक साधनों के साथ काल को समझकर कर्म करनेवाले के लिए असम्भव भी कुछ होता है?

४८४. यदि समय एवं स्थान का विचार करके कर्म किया जाय तो सम्पूर्ण संसार भी हस्तगत हो सकता है।

४८५. संसार को जीतने के इच्छुक निश्चलता के साथ अनुकूल समय की प्रतीक्षा में रहेंगे।

४८६. उत्साहशील व्यक्ति का (समय का बोध पाकर) सिमटना लड़ते हुए भेड़ का शत्रु पर आक्रमण करने से पूर्व अपने पैरों को पीछे हटाने के समान होता है।

४८७. शत्रु में दोष देखकर बुद्धिमान झट वहीं क्रोध को व्यक्त नहीं करते, अपितु समय को देखकर उस ज्वाला को मन में ही समाये रखते हैं।

४८८. विरोधी को देखो तो (समय को समझकर तत्काल) विनीत हो लो। अन्तिम काल आने पर उसका सिर अपने आप नीचे गिरेगा।

४८९. प्राप्ति का सुअवसर प्राप्त हो तो असम्भव कार्य भी उसी समय कर डालो।

50. இடன் அறிதல்

491. தொடங்கற்க எவ்விணயும் எள்ளறக முற்றும்
இடங்கண்ட பின்அல் லது.

492. முரண்சேர்நத மொய்ம்பின் அவர்க்கும் அரண்சேர்ந்துஆம்
ஆக்கம பலவும் தரும்.

493. ஆற்ருரும் ஆற்றி அடுப இடன்அறிந்து
போறஞர்கண் போற்றிச் செயின்.

494 எண்ணியார் எண்ணம் இழப்பர் இடன்அறிந்து
துன்னியார் துன்னிச் செயின்

495. நெடும்புனலுள் வெல்லும் முதலே அடும்புனலின்
நீங்கின் அதனைப் பிற.

496. கடல்ஓடா கால்வல் நெடுந்தோ கடல்ஓடும்
நாவாயும் ஓடா நிலதது.

497. அஞ்சாமை அல்லால் துணேவேண்டா எஞ்சாமை
எணணி இடததான் செயின்.

498. சிறுபடையான் செல்இடம் சேரின் உறுபடையான்
ஊககம் அழிநது விடும்.

499. சிறைநலனும் சீரும் இலர்எனினும் மாந்தா
உறைநிலததொடு ஒட்டல் அரிது.

500. கால்ஆழ் களரின நரிஅடும் கண்அஞ்சா
வேலாள முகதத களிறு

५० स्थल का बोध

४९१. कार्यपूर्त्ति (व्यूह) के लिए उचित स्थल को ढूँढ़ निकाले बिना किसी कर्म में (युद्ध में) प्रवृत्त न होवो; शत्रु को भी क्षुद्र मत मानो (उसकी निन्दा न करो)।

४९२. विरोधी-भाव युक्त सबल व्यक्ति के लिए भी दुर्ग की यथावत् रक्षा अनेक प्रकार के लाभ प्रदान करेगी।

४९३. स्थल कों समझकर अपनी रक्षा करते हुए शत्रु पर आक्रमण करें तो निर्बल भी सबल के जैसे विजयी होंगे।

४९४. अनुकूल स्थल को समझकर दृढ़ता के साथ जो कार्य में प्रवृत्त होवे उस पर विजय प्राप्त करने का विचार रखनेवाले अपनी कामनापूर्त्ति में असफल होंगे।

४९५. गहरे जल में मगर अन्य जीवों पर विजयी होता है, परन्तु जल के बाहर उस मगर पर भी अन्य जीव विजयी होते हैं।

४९६. बृहद् चक्रों से युक्त बड़े रथ समुद्र पर नहीं चल सकते। समुद्र-गामी जलयान भी पृथ्वी पर नहीं चल सकेते।

४९७. पूर्णतः विचार करके उचित स्थान से कर्म में प्रवृत्त होवो तो निर्भयता के अतिरिक्त अन्य किसी की सहायता आवश्यक नहीं।

४९८. अल्प सैन्यवाला अपने लिए उपयुक्त स्थल पर पहुँचकर डट जाय तो बृहद् सैन्यवाले का उत्साह नष्ट हो जायगा।

४९९. दुर्ग-विशेष तथा अन्य विशिष्ट साधन किसी के पास न होने पर भी उसकी ही भूमि पर उस पर आक्रमण करना दुष्कर होता है।

५००. भालों से युक्त वीरों को छेदनेवाले लम्बे दाँतों से युक्त निडर हाथी को उसके पांव को फँसानेवाले कीचड़ में गीदड़ भी मार डालेंगे।

51. தெரிந்து தெளிதல்

501. அறம்பொருள் இன்பம் உயிர்அச்சம நான்கின்
திறம்தெரிந்து தேறப் படும்.

502. குடிப்பிறநது குற்றத்தின் நீங்கி வடுப்பரியும்
நாண்உடையான் கட்டே தெளிவு.

503. அரியகற்று ஆசுஅற்ருர் கண்ணும் தெரியுங்கால்
இன்மை அரிதே வெளிறு.

504. குணம்நாடிக் குற்றமும் நாடி அவற்றுள்
மிகைநாடி மிக்க கொளல.

505. பெருமைககும் ஏனைச சிறுமைககும் தததம்
கருமமே கட்டளைக் கல்.

506. அற்ருரைத் தேறுதல் ஓம்புக மற்றுஅவா
பற்றுஇலர் நாணுர் பழி.

507. காதன்மை கநதா அறிவுஅறியார்த் தேறுதல்
பேதைமை எல்லாம் தரும்

508. தேரான் பிறனைத் தெளிந்தான் வழிமுறை
தீரா இடும்பை தரும.

509. தேறறக யாரையும தேராது தேர்ந்தபின்
தேறுக தேறும் பொருள்.

510. தேரான் தெளிவும் தெளிந்தான்கண ஐயுறவும்
தீரா இடும்பை தரும

५१. विचारपूर्ण चुनाव

५०१. धर्म, अर्थ, काम व प्राण-भय—इन चारों की शक्ति का किसी में विचार करके उसे किसी कर्म के उपयुक्त माना जायगा।

५०२ कुलीन, निर्दोष व अपयश से लज्जित होनेवाले को ही विश्वासपात्र बनाया जा सकता है।

५०३. विशिष्ट अध्ययन किये हुए व दोषों से रहित व्यक्ति में भी, विश्लेषण करने पर, अज्ञान का सर्वथा अभाव पाना दुष्कर है।

५०४. गुणों एवं दोषों का भी विवेचन करके उनमें जिसकी अधिकता हो उससे किसी को पहचानो।

५०५. अपना-अपना कर्म ही श्रेष्ठता व नीचता को परखने की कसौटी है।

५०६. बन्धु-बान्धवहीन का चुनाव न करो। वे ममता-शून्य होने के कारण निन्दा से लज्जित नहीं होते।

५०७. प्रेमवश उचित ज्ञान से रहित व्यक्ति का चुनाव सब प्रकार का अज्ञान उत्पन्न कर बैठेगा।

५०८. विश्लेपण के बिना जो दूसरे को विश्वासपात्र बनाता है, उसकी वंशावली में असह्य बाधाएँ उपस्थित होंगी।

५०९. विश्लेपण किये बिना किसी पर विश्वास मत करो। विश्वस्त बनने पर उसे उचित कर्म दो।

५१०. विश्लेपण किये बिना विश्वासपात्र बनाना और विश्वासपात्र पर सन्देह करना असह्य वेदना प्रदान करेंगे।

52. தெரிந்து வினையாடல்

511. நனமையும் தீமையும் நாடி நலமபுரிநத
தன்மையான் ஆளப் படும்.

512 வாரி பெருக்கி வளமபடுதது உற்றவை
ஆராய்வான் செய்க வினை.

513. அன்புஅறிவு தேற்றம் அவாஇன்மை இந்நான்கும்
நன்குடையான் கட்டே தெளிவு.

514. எனைவகையான் தேறியக் கண்ணும் வினைவகையான்
வேறுகும் மாந்தர் பலர்.

515. அறிந்துஆற்றிச் செய்கிற்பாற்கு அல்லால் வினைதான்
சிறந்தான்என்று ஏவற்பாற்று அன்று.

516. செய்வானை நாடி வினைநாடிக் காலததொடு
எய்த உணர்நது செயல்.

517. இதனை இதனுல இவன்முடிககும் என்றுஆய்நது
அதனை அவன்கண் விடல்.

518. வினைககுஉரிமை நாடிய பின்றை அவனை
அதறகுஉரியன் ஆகச் செயல்.

519. வினைக்கண் வினையுடையான் கேண்மைவேறு ஆக
நினைபபானை நீங்கும் திரு

520 நாடொறும் நாடுக மன்னன் வினைசெய்வான்
கோடாமை கோடாது உலகு

५२. समझकर कर्म कराना

५११. शुभाशुभ की समीक्षा करके शुभ कर्म में प्रवृत्त होनेवाला ही अधिकारी हो सकता है।

५१२. आय को बढ़ाकर स्थाई सम्पत्ति की वृद्धि करके आनेवाली बाधाओं को (पहले ही से) समझकर हटानेवाला ही (उसकी सुरक्षा के भार को उठाने के) कर्म में प्रवृत्त होवे।

५१३. स्नेह, बुद्धि, निश्चलता, निर्लोभिता—इन चारों शुभ-गुणों से पूर्णतः युक्त जो हो उसी में निष्पक्ष निर्णयात्मकता होती है।

५१४. सभी प्रकार की समीक्षा के पश्चात् किसी विशिष्ट निर्णय पर भी कार्य-प्रणाली के कारण विभिन्न दिशाओं में चलनेवाले व्यक्ति अनेक होते हैं।

५१५. बुद्धि से काम लेकर बाधाओं को सहकर कर्म को पूर्ण करनेवाले के अतिरिक्त किसी दूसरे को श्रेष्ठ मानकर कोई कर्म न सौंपना चाहिए।

५१६. कर्म तथा उसे करनेवाले का परिशीलन करके अनुकूल समय का विचार रखकर कर्म में प्रवृत्त होना चाहिए।

५१७. यह कार्य इस साधन द्वारा अमुक व्यक्ति कर सकेगा या नहीं—इसका परिशीलन करके ही किसी पर कोई काम छोड़ना चाहिए।

५१८. अमुक व्यक्ति कर्म का अधिकारी है या नहीं, इसका परिशीलन करने के पश्चात् ही उसे उसका अधिकारी बनाना चाहिए।

५१९. किसी के अपने कर्म में सप्रयत्न रहने के अधिकारपूर्ण स्वत्व का (उसका शासक) विपरीत अर्थ लगावे तो उससे भाग्य-लक्ष्मी पृथक हो जाती है।

५२०. प्रतिदिन सम्राट् उस कर्मचारी (की सुरक्षा) का विचार रक्खे जिसके टेढ़ा न पड़ने तक लोक व्यवहार भी टेढ़ा नहीं पड़ता।

53. சுற்றந் தழால்

521. பற்றற்ற கண்ணும் பழைமைபா ராட்டுதல்
சுற்றத்தார் கண்ணே உள.

522. விருப்புஅறாச் சுற்றம் இயையின் அருப்புஅறா
ஆக்கம் பலவும் தரும்.

523. அளவளாவு இல்லாதான் வாழ்க்கை குளவளாக்
கோடுஇன்றி நீர்நிறைந் தற்று.

524. சுற்றத்தால் சுற்றப் படஒழுகல் செல்வம்தான்
பெற்றத்தால் பெற்ற பயன்.

525. கொடுத்தலும் இன்சொலும் ஆற்றின் அடுக்கிய
சுற்றத்தால் சுற்றப் படும்.

526. பெருங்கொடையான் பேணான் வெகுளி அவனின்
மருங்குடையார் மாநிலத்து இல்.

527. காக்கை கரவா கரைந்துஉண்ணும் ஆக்கமும்
அன்னநீ ரார்க்கே உள.

528. பொதுநோக்கான் வேந்தன் வரிசையா நோக்கின்
அதுநோக்கி வாழ்வார் பலர்.

529. தமராகித் தன்துறந்தார் சுற்றம் அமராமைக்
காரணம் இன்றி வரும்.

530. உழைப்பிரிந்து காரணத்தின் வந்தானை வேந்தன்
இழைத்திருந்து எண்ணிக் கொளல்.

५३. बन्धुओं की उपेक्षा न करना

५२१. किसी की दरिद्रता में भी उसे छोड़े बिना पुराना सम्बन्ध बनाये रखना बन्धुओं में ही होता है।

५२२. अटूट प्रेम से युक्त बन्धुवर्ग किसी को प्राप्त हो तो वह निरन्तर विकासोन्मुख सौभाग्य अनेकानेक रूपों में प्रदान करेगा।

५२३. बन्धुओं के साथ मिलनसार न होनेवाले का जीवन तट रहित फैले हुए सजल तालाब के समान होता है।

५२४. धनवान की धन-प्राप्ति का प्रयोजन बन्धु-जनों को साथ मिलाये रखने के सद्व्यवहार में है।

५२५. कोई दानी एवं मधुर वक्ता हो तो वह निकट सम्बन्धियों से घिरा रहेगा।

५२६. बड़ा दानी एवं निष्क्रोधी कोई हो तो उसके समान बन्धुवर्ग प्राप्त व्यक्ति संसार में और कोई नहीं होगा।

५२७. कौवा (प्राप्त वस्तु को) छिपाये बिना पुकार कर (अपने अन्य बन्धुओं सहित) ही खाता है। श्रीवृद्धि भी ऐसे स्वभाववाले को ही सिद्ध होती है।

५२८. सम्राट् सभी को एक ही समान न देखकर योग्यता का यथोचित विचार रक्खे तो उसे अनेक लाभ प्राप्त होंगे।

५२९. बन्धु बन कर फिर (किसी कारणवश) स्वयं सम्बन्ध विच्छेद कर बैठे हों तो उनका पुनः सम्मिलन उस विच्छेदन के कारण की समाप्ति के पश्चात् स्वतः होगा।

५३०. अलग होने पर सकारण आनेवाले को सम्राट्, यथानुकूल [illegible] देकर सावधानी के साथ अपने संग मिलावे।

54. பொச்சாவாமை

531. இறந்த வெகுளியின் தீதே சிறநத
உவகை மகிழசசியின் சோர்வு.

532. பொச்சாப்புக கொல்லும் புகழை அறிவினை
நிசச நிரபபுககொனறு ஆங்கு.

533 பொச்சாப்பார்ககு இல்லை புகழ்மை அதுஉலகத்து
எப்பால்நூ லோர்ககும துணிவு.

534 அச்சம் உடையார்க்கு அரண்இல்லை ஆங்குஇல்லை
பொச்சாப்பு உடையாாக்கு நன்கு.

535. முன்உறக காவாது இழுககியான் தன்பிழை
பின்ஊறு இரங்கி விடும்.

536. இழுக்காமை யார்மாட்டும் என்றும் வழுககாமை
வாயின் அஃதுஒபபது இல்.

537. அரியஎன்று ஆகாத இல்லைபொச சாவாக
கருவியான் போற்றிச் செயின்.

538. புகழ்ந்தவை போற்றிச செயல்வேண்டும் செய்யாது
இகழநதாாக்கு எழுமையும இல்.

539. இகழச்சியின் கெட்டாரை உள்ளுக தாம்தம
மகிழ்ச்சியின் மைநதுறும் போழது

540. உளளியது எய்தல எளிதுமன் மற்றும்தான்
உள்ளியது உளளப் பெறின்.

५४. अविस्मरण

५३१. अत्यधिक आनन्द में (विसरण के कारण) उत्पन्न असावधानी असीम क्रोध से अधिक हानिकारक होती है।

५३२ बुद्धि निरन्तर दारिद्र्य से कुण्ठित पड़ जाती है। उसी प्रकार विसरण यश को कुण्ठित कर देता है।

५३३. इस संसार में विस्मरणशील व्यक्ति के लिए यशस्वी जीवन नहीं है। सभी ग्रन्थकारों का यही निश्चित मत है।

५३४. भयग्रस्तों को सुदृढ़ गढ़ प्रयोजनहीन है; इसी प्रकार विस्मरणशील को सुअवसर।

५३५. पहले से ही अपनी रक्षा न करनेवाला विस्मरणग्रस्त अपने दोष का विचार करके विपत्ति के आ पड़ने पर विलाप करेगा।

५३६. विस्मरण के कारण कभी किसी की पकड़ में न आने के समान गुण और कोई नहीं है।

५३७. अविस्मरण के शस्त्र के साथ अपने कर्मो को ध्यान से कोई करे तो उसके लिए असम्भव कुछ नहीं होता।

५३८. (बुद्धिमानों से) प्रशंसित कर्मो को ध्यान से करना चाहिए। विस्मरण के फलस्वरूप ऐसा न करे तो सात जन्मों में उसे कोई सफलता नहीं सिद्ध हो सकती।

५३९. अपने आनन्द में सगर्व मस्त रहते समय विस्मरण से विनाश को प्राप्त व्यक्ति का विचार करो।

५४०. इच्छित वस्तु की प्राप्ति सरल होगी यदि उसका ध्यान सतत बना रहे।

55. செங்கோன்மை

541. ஓர்ந்துகண் ணோடாது இறைபுரிந்து யார்மாட்டும்
தேர்ந்துசெய் வஃதே முறை.

542. வான்நோக்கி வாழும் உலகெல்லாம் மன்னவன்
கோல்நோக்கி வாழும் குடி.

543. அந்தணர் நூற்கும் அறத்திற்கும் ஆதியாய்
நின்றது மன்னவன் கோல்.

544. குடிதழீஇக் கோலோச்சும் மாநில மன்னன்
அடிதழீஇ நிற்கும் உலகு.

545. இயல்புளிக் கோலோச்சும் மன்னவன் நாட்ட
பெயலும் விளையுளும் தொக்கு.

546 வேல்அன்று வென்றி தருவது மன்னவன்
கோல்அதூஉம் கோடாது எனின்.

547. இறைகாக்கும் வையகம் எல்லாம் அவனை
முறைகாக்கும் முட்டாச் செயின்.

548. எண்பதத்தான் ஓரா முறைசெய்யா மன்னவன்
தண்பதத்தான் தானே கெடும்.

549. குடிபுறங் காத்தோம்பிக் குற்றம் கடிதல்
வடுஅன்று வேந்தன் தொழில்.

550. கொலையின் கொடியாரை வேந்துஒறுத்தல் பைங்கூழ்
களைகட்டு அதனொடு நேர்.

५५. सुशासन

५४१. नीति यही है कि ध्यान से विचार कर दाक्षिण्य के बिना मध्यस्थता के साथ किसी के कर्म पर न्याय किया जाय।

५४२. सम्पूर्ण संसार वर्षा पर दृष्टि रखकर जीवित है, और प्रजा सम्राट् के राजदण्ड (सुशासन) पर।

५४३. ब्राह्मण के ग्रन्थ एवं धर्म का मूल आश्रय है सम्राट् का राजदण्ड।

५४४. सप्रेम प्रजा पर सुशासन करनेवाले विशाल राज्य के सम्राट् के सहारे ठहरता है सम्पूर्ण संसार।

५४५. नीतिबद्ध सुशासन करनेवाले सम्राट् के प्रदेश में वर्षा एवं उपज दोनों यथानुकूल होते हैं।

५४६. शूल नहीं विजय प्रदान करता, अपितु सम्राट् का राजदण्ड; और वह भी वक्र न होने पर ही।

५४७. सम्पूर्ण संसार की रक्षा सम्राट् करता है। वह नीतिपूर्ण शासन करे तो वही नीति उसकी रक्षा करेगी।

५४८. विनम्र वार्त्ता सहित विचारपूर्वक सुशासन न करनेवाला सम्राट् दीन अवस्था में पड़कर स्वतः अधःपतन को प्राप्त होगा।

५४९. दूसरों से प्रजा की सुरक्षा करके उनके दोषों पर दण्ड देना सम्राट् का कर्म है, कलंक नहीं।

५५०. सम्राट् का घातकों को मृत्यु-दण्ड देना खेती की उपज की रक्षा करके व्यर्थ के घास-फूस को उखाड़ फेंकने के समान है।

56 கொடுங்கோன்மை

551. கொலைமேற்கொண் டாரின் கொடிதே அலைமேற்கொண்டு
அல்லவை செய்தொழுகும் வேந்து.

552 வேலொடு நின்றான் இடுஎன் றதுபோலும்
கோலொடு நின்றான் இரவு.

553. நாளதொறும் நாடி முறைசெய்யா மன்னவன்
நாள்தொறும் நாடு கெடும்.

554. கூழும் குடியும் ஒருங்குஇழக்கும் கோல்கோடிச்
சூழாது செய்யும் அரசு.

555. அல்லற்பட்டு ஆறருது அழுதகண் ணீர்அன்றே
செல்வத்தைத் தேய்க்கும் படை.

556. மன்னர்க்கு மன்னுதல் செங்கோன்மை அஃதுஇன்றேல்
மன்னாவாம் மன்னர்க்கு ஒளி.

557. துளிஇன்மை ஞாலத்திற்கு எற்றுஅற்றே வேந்தன்
அளிஇன்மை வாழும் உயிர்க்கு.

558. இன்மையின் இன்னாது உடைமை முறைசெய்யா
மன்னவன் கோற்கீழ்ப் படின்-

559. முறைகோடி மன்னவன் செய்யின் உறைகோடி
ஒல்லாது வானம் பெயல்

560. ஆபயன் குன்றும் அறுதொழிலோர் நூல்மறப்பர்
காவலன் காவான் எனின்.

५६. कुशासन

५५१. प्रजा-पीड़क अन्यायपूर्ण कर्म करनेवाला सम्राट् हत्यारों से भी अधिक भयंकर होता है।

५५२. राजदण्ड - युक्त सम्राट् का (प्रजा से) धन माँगना भाला लिये हुए (मार्ग में) खड़े होकर (लुटेरे के) 'निकाल अपने धन को' ऐसा कहने के समान है।

५५३. प्रतिदिन ध्यान से न्यायपूर्वक राज्य न करनेवाला सम्राट् अपना राज्य क्रमशः खो बैठेगा।

५५४. अन्यायपूर्ण व विचारहीन शासन करनेवाला सम्राट् धन एवं प्रजा को एक साथ खो बैठेगा।

५५५. कष्ट भोगते-भोगते असह्य हो उठने के फलस्वरूप रोने से निस्सृत अश्रु-प्रवाह ही तो सम्पत्ति का समूल नाश करनेवाली सेना है?

५५६. सम्राट् को स्थाई यश प्रदान करता है सुशासन। अन्यथा उसका यश अस्थाई ही होगा।

५५७. पृथ्वी के लिए बूँदों के न बरसने के समान होता है प्रजा के लिए सम्राट् का सदय न होना।

५५८. जब अन्यायी सम्राट् के अधीन रहने की नौबत आ जाती है तो सम्पन्नता निर्धनता से अधिक दुखदायी हो जाती है।

५५९. सम्राट् न्याय - विरुद्ध कर्म करने लगे तो मेघ ऋतु - कालीन वर्षा किये विना चलते बनेंगे।

५६०. राज्य का रक्षक सुराज्य न करे तो गाय के दूध में कमी पड़ जायगी और ब्राह्मण अपने धर्म - ग्रन्थ भूल बैठेंगे।

57. வெருவந்த செய்யாமை

561. தக்காங்கு நாடித் தலைச்செல்லா வண்ணத்தால்
ஒத்தாங்கு ஒறுப்பது வேந்து

562. கடிதுஓச்சி மெல்ல எறிக நெடிதுஆக்கம்
நீங்காமை வேண்டு பவர்.

563. வெருவந்த செய்தொழுகும் வெங்கோலன் ஆயின்
ஒருவந்தம் ஒல்லைக் கெடும்.

564. இறைகடியன் என்றுஉரைக்கும் இன்னாச்சொல் வேந்தன்
உறைகடுகி ஒல்லைக் கெடும்.

565. அருஞ்செவ்வி இன்னா முகத்தான் பெருஞ்செல்வம்
பேஎய்கண்டு அன்னது உடைத்து.

566. கடுஞ்சொல்லன் கண்இலன் ஆயின் நெடுஞ்செல்வம்
நீடுஇன்றி ஆங்கே கெடும்.

567. கடுமொழியும் கையிகந்த தண்டமும் வேந்தன்
அடுமுரண் தேய்க்கும் அரம்.

568. இனத்துஆற்றி எண்ணாத வேந்தன் சினத்துஆற்றிச்
சீறின் சிறுகும் திரு.

569. செருவந்த போழ்தின் சிறைசெய்யா வேந்தன்
வெருவந்து வெய்து கெடும்.

570. கல்லார்ப் பிணிக்கும் கடுங்கோல் அதுஅல்லது
இல்லை நிலக்குப் பொறை.

५७. भयकंपित न करना

५६१. दोष का ध्यान से विवेचन करके भविष्य में उसके निवारणार्थ उचित दण्ड देनेवाला ही सम्राट् है ।

५६२. स्थाई सम्मृद्धि की अक्षयता जिनको प्रिय हो उन्हें चाहिए कि असीम दण्ड का भय दिखाकर ससीम व्यवहार करें ।

५६३. भयकंपित व्यवहार से युक्त क्रूर शासक कोई हो तो उसका विनाश शीघ्र होकर रहेगा ।

५६४. प्रजा द्वारा 'क्रूर शासक' कहकर संबोधित होनेवाले सम्राट् की आयु घटकर, शीघ्र विनाश को प्राप्त होगा ।

५६५. सुलभ और प्रिय-दर्शन न होनेवाले की विशद सम्पत्ति मानो भूत-प्रेम की देख-रेख में रहती है ।

५६६. क्रूर वक्ता व निर्दय की विशद-सम्पत्ति अस्थाई होकर वहीं विनाश प्राप्त होगी ।

५६७. कटु वचन व अन्यायपूर्ण दण्ड सम्राट् के विजय-साधक बल का विनाश करनेवाला आरा है ।

५६८. स्वजनों की सम्मति के विना (असफल होने पर) क्रोधित हो, क्रूर व्यवहार करनेवाले सम्राट् की सम्पत्ति शीघ्र ही क्षतिग्रस्त होगी ।

५६९. समय पर अपनी सुरक्षा न करनेवाला भयकम्पित हो शीघ्र विनाश प्राप्त होगा ।

५७०. क्रूर शासन अशिक्षितों का आश्रय ग्रहण करेगा । इसके अतिरिक्त और भार भूमि के लिए है ही नहीं ।

58. கண்ணோட்டம்

571. கண்ணோட்டம என்னும கழிபெருங காரிகை
உண்மையான் உணடுஇவ் உலகு.

572. கண்ணோட்டதது உளளது உலகியல் அஃதிலார்
உணமை நிலககுப் பொறை.

573. பண்என்னும் பாடறகு இயைபுஇன்றேல் கண்என்னும்
கணணோட்டம இல்லாத கண்.

574. உளபோல் முகததுஎவன் செய்யும் அளவினால்
கண்ணோட்டம் இல்லாத கண்.

575. கணணிறகு அணிகலம் கண்ணோட்டம் அஃதுஇன்றேல்
புண்என்று உணரப் படும்

576. மண்ணோடு இயைந்த மரத்துஅனையர் கண்ணோடு
இயைநதுகண் ணோடா தவா.

577. கணணோடடம இல்லவர் கண்ணிலா கண்ணுடையார்
கணணோட்டம் இன்மையும் இல்.

578. கருமம் சிதையாமல் கண்ணோட வல்லார்ககு
உரிமை உடைததுஇவ் உலகு.

579. ஒறுத்துஆற்றும் பண்பினா கண்ணும்கண் ஓடிப்
பொறுத்துஆற்றும் பண்பே தலை.

580 பெயக்கண்டும் நஞ்சுஉண்டு அமைவர் நயத்தகக
நாகரிகம் வேண்டு பவர்.

५८. दयार्द्रता

५७१. दयार्द्रता नामक श्रेष्ठ सौन्दर्य के कारण ही वस्तुतः यह संसार टिका हुआ है।

५७२. दयार्द्रता के आधार पर संसार ठहरा हुआ है। यह जिनमें न हो वे भूमि के लिए भारमात्र हैं।

५७३. संगीत से असम्बद्ध गीत किस काम का? दयार्द्रता से रहित नेत्र वस्तुतः नेत्र कैसे हो सकते हैं?

५७४. यथोचित दयार्द्रता नेत्रों में न हो तो मुख पर नेत्र मात्र से क्या प्रयोजन?

५७५. नेत्रों का भूषण है दयार्द्रता, अन्यथा उन्हें घाव ही समझा जायगा।

५७६. नेत्रों के होने पर भी दयार्द्रता का गुण जिसमें न हो उसे भूमि पर खड़ा हुआ पेड़ ही समझो।

५७७ दयार्द्रता जिसमें न हो वह नेत्रहीन ही है। नेत्रवाले दयार्द्रता से रहित भी न होंगे।

५७८. कर्त्तव्यच्युत न होनेवाले दयार्द्र-गुण-सम्पन्न व्यक्ति का इस लोक पर अधिकार होता है।

५७९. दण्डनीय व्यक्ति को भी दयार्द्रता के साथ सहने का स्वभाव ही सर्वश्रेष्ठ है।

५८०. सब के लिए प्रिय नागरिकता (रूपी दयार्द्रता) के इच्छुक विष के मिश्रण को देखने पर भी उसका पान करके शान्त रह जायेंगे।

59. ஒற்றாடல்

581. ஒற்றும் உரைசான்ற நூலும் இவைஇரண்டும்
தெற்றென்க மன்னவன் கண்.

582. எல்லார்க்கும் எல்லாம் நிகழ்பவை எஞ்ஞான்றும்
வல்அறிதல் வேந்தன் தொழில்.

583. ஒற்றினான் ஒற்றிப் பொருள்தெரியா மன்னவன்
கொற்றம் கொளக்கிடந்தது இல்.

584 வினைசெய்வார் தம்சுற்றம் வேண்டாதார் என்றாங்கு
அனைவரையும் ஆராய்வது ஒற்று.

585 கடாஅ உருவொடு கண்அஞ்சாது யாண்டும்
உகாஅமை வல்லதே ஒற்று

586. துறந்தார் படிவத்தர் ஆகி இறந்துஆராய்ந்து
என்செயினும் சோர்விலது ஒற்று.

587. மறைந்தவை கேட்கவற்று ஆகி அறிந்தவை
ஐயப்பாடு இல்லதே ஒற்று,

588 ஒற்றுஒற்றித் தந்த பொருளையும் மற்றுமோர்
ஒற்றினால் ஒற்றிக் கொளல்.

589. ஒற்றுஒற்று உணராமை ஆள்க உடன்மூவர்
சொல்தொக்க தேறப் படும்.

590. சிறப்புஅறிய ஒற்றின்கண் செய்யற்க செய்யின்
புறப்படுத்தான் ஆகும் மறை.

५९. गुप्तचर

५८१. गुप्तचर और सुप्रशंसित नीति-ग्रन्थ—इन दोनों को सम्राट् के उभय नेत्र समझो।

५८२. प्रजामात्र पर जो कुछ सम्भवित हो उसका सदा गुप्तचर के द्वारा शीघ्र पता लगाना सम्राट् का कर्म है।

५८३. गुप्तचर के द्वारा पता लगाकर वस्तु स्थिति का ज्ञान प्राप्त न करनेवाले सम्राट् के लिए विजय प्राप्त करने का मार्ग कोई है ही नहीं।

५८४. कर्मचारी, बन्धु, शत्रु आदि सब का अन्वेषण गुप्तचर का कर्म है।

५८५. भयंकर रूप के सम्मुख निर्भय रह कर हृदयस्थ भाव को कहीं व्यक्त न होने देने की शक्ति रखनेवाला ही गुप्तचर है।

५८६. विरागी का वेश धारण कर विकट स्थलों में प्रवेश करके विषयों का पता लगाकर, किसी भी परिस्थिति में अपने को अभिव्यक्त न होने देनेवाला ही गुप्तचर है।

५८७. गुप्त विषयों को खोजने की सामर्थ्य तथा ज्ञात विषयों में परिपूर्ण निश्चलता गुप्तचर के लिए आवश्यक हैं।

५८८. एक गुप्तचर द्वारा प्राप्त विषय को भी दूसरे गुप्तचर द्वारा निश्चित कराने के पश्चात् ही उस पर विश्वास लाना चाहिए।

५८९. शासन ऐसा हो कि एक गुप्तचर को दूसरे गुप्तचर का भान न होने पावे। यदि तीन गुप्तचरों का कथन एक-सा हो तो उस पर विश्वास करना चाहिए।

५९० गुप्तचर का सम्मान व्यक्त रूप से न किया जाय। किया गया तो रहस्य को तुम स्वयं ही अभिव्यक्त करनेवाले बनोगे।

60. ஊக்கம் உடைமை

591. உடையர் எனபபடுவது ஊககம் அஃதுஇல்லார்
உடையது உடையரோ மற்று.

592. உள்ளம் உடைமை உடைஎம பொருள்உடைமை
நிலலாது நீஙகி விடும்.

593. ஆககம் இழநதேம்என்று அலலாவார் ஊககம்
ஒருவந்தம் கைத்துடை யார்.

594. ஆககம் அதர்வினுய்ச் செல்லும் அசைவுஇலா
ஊக்கம் உடையான் உழை.

595. வெள்ளததது அனைய மலாநீட்டம் மாநதர்தம்
உளளத்து அனையது உயாவு.

596. உளளுவது எலலாம் உயாவுஉளளல் மற்றுஅது
தள்ளினும் தளளாமை நீர்த்து.

597. சிதைவிடத்து ஒல்கார் உரவோர் புதைஅம்பின்
பட்டுப்பாடு ஊன்றும் களிறு.

598. உள்ளம் இலாதவர் எய்தாா உலகதது
வளளியம் எனனும் செருககு.

599. பரியது கூாங்கோட்டது ஆயினும் யானை
வெரூஉம புலிதாக் குறின்.

600. உரமஒருவற்கு உள்ள வெறுககைஅஃது இல்லார்
மரம்மககள ஆதலே வேறு.

६०. उत्साह

५९१. उत्साह ही है सम्पत्ति, अन्यथा सम्पत्ति-युक्त होने पर भी क्या वह अपनी है ?

५९२. उत्साह ही है स्थाई सम्पत्ति । धन स्थाई न रह कर हट जाता है ।

५९३. जो उत्साह को दृढ़ता के साथ करबद्ध किये रहते हैं वे परिस्थिति के बिगड़ने पर भी विचलित न होंगे ।

५९४. अविचल उत्साह होनेवाले के पास सम्पन्नता स्वयं मार्ग पूछकर जाती है ।

५९५. जल (की गहराई) जितनी होती है पुष्प (की नाल) की लम्बाई । मनुष्य के उत्साह जितनी होती है उसकी ऊँचाई ।

५९६. विचार सदा महत्वाकॉक्षा का हो । सिद्ध न होने पर भी उसे न त्यागो ।

५९७. उत्साहशील व्यक्ति विनाश के समय भी विचलित नहीं होता; हाथी तरकस-भर बाण से पीड़ित होने पर भी विचलित न होकर अपनी महानता को स्थापित करता है ।

५९८. संसार में सबल (व दानशील) होने के आत्मगौरव का आनंद उत्साहहीन नहीं प्राप्त करेंगे ।

५९९. (उत्साहपूर्ण) व्याघ्र आक्रमण करे तो विशाल-काय एवं तीक्ष्णदंत होने पर भी हाथी भयभीत होगा ।

६००. उत्साह की प्रचुर मात्रा ही एक का बल है, अन्यथा वृक्ष और मानव के रूपमात्र का अन्तर उनमें रहता है ।

61. மடி இன்மை

601. குடிஎன்னும் குன்றா விளக்கம் மடிஎன்னும்
மாசுஊர மாய்ந்து கெடும்.

602. மடியை மடியா ஒழுகல் குடியைக
குடியாக வேண்டு பவர்.

603. மடிமடிக கொண்டொழுகும் பேதை பிறந்த
குடிமடியும் தன்னினும் முநது.

604. குடிமடிந்து குற்றம் பெருகும் மடிமடிந்து
மாண்ட உஞற்றுஇ லவர்க்கு.

605. நெடுநீர் மறவி மடி துயில் நான்கும்
கெடுநீரா காமக கலன்.

606. படியுடையார பற்றுஅமைந்தக கண்ணும் மடியுடையார்
மாண்பயன் எய்தல் அரிது.

607. இடிபுரிந்து எள்ளுஞ்சொல் கேட்பர் மடிபுரிந்து
மாண்ட உஞற்றுஇல வர.

608. மடிமை குடிமைக்கண் தங்கின்தன் ஒன்னார்க்கு
அடிமை புகுததி விடும்.

609. குடியாண்மை யுள்வந்த குற்றம் ஒருவன்
மடியாண்மை மாற்றக் கெடும்.

610. மடிஇலா மனனவன் எய்தும் அடிஅளநதான்
தாஅயது எல்லாம் ஒருங்கு.

६१. निरालस्य

६०१. कुटुम्ब नामक अक्षय दीपक आलस्य नामक कलंक के लगते-लगते निस्तेज हो विनाशगत होगा।

६०२. कुटुम्ब को कुटुम्ब बनाये रखने के इच्छुक आलस्य को विनाशक मानें।

६०३. आलस्य को गोद में लिये रखनेवाले का जन्म जिस कुटुम्ब में हुआ होता है उसका विनाश उस व्यक्ति से पूर्व होगा।

६०४. आलस्यग्रस्त हो, विशिष्ट प्रयत्न न करनेवाले का कुटुम्ब विनाश प्राप्त हो, उसमें दोष आ भरने लगेंगे।

६०५. दीर्घसूत्रता, विस्मरण, आलस्य व निद्रा—ये चारों विनाशोन्मुख व्यक्ति की प्रिय नावें हैं।

६०६. शासक का प्रिय पात्र होने पर भी आलसी श्रेष्ठ लाभ प्राप्त नहीं कर सकता।

६०७. आलस्यग्रस्त हो, विशिष्ट प्रयत्नशील न रहनेवाले दूसरों के उपालम्भ भरे तिरस्कृत शब्द सुनेंगे।

६०८. आलस्य कुटुम्ब में स्थान पा गया तो अपने शत्रुओं की दासता कुटुम्ब में प्रविष्ट करा देगा।

६०९. कुटुम्ब के सम्मान में आया हुआ दोष सबल आलस्य के जाने से स्वतः नष्ट हो जायगा।

६१०. निरालस्ययुक्त सम्राट् त्रिविक्रम (वामन) द्वारा पार किया हुआ सम्पूर्ण क्षेत्र एक साथ प्राप्त करेगा।

62. ஆள்வினை உடைமை

611. அருமை உடைத்துஎன்று அசாவாமை வேண்டும்
பெருமை முயற்சி தரும்.

612. வினைக்கண் வினைகெடல் ஓம்பல் வினைக்குறை
தீர்ந்தாரின் தீர்ந்தன்று உலகு.

613. தாளாண்மை என்னும் தகைமைக்கண் தங்கிற்றே
வேளாண்மை என்னும் செருக்கு.

614 தாளாண்மைஇ ல்லாதான் வேளாண்மை பேடிகை
வாளாண்மை போலக் கெடும்.

615. இன்பம் விழையான் வினைவிழைவான் தன்கேளிர்
துன்பம் துடைத்துஊன்றும் தூண்.

616. முயற்சி திருவினை ஆக்கும் முயற்றின்மை
இன்மை புகுத்தி விடும்.

617. மடியுளாள் மாமுகடி என்ப மடியிலான்
தாளுளாள் தாமரையி னாள்.

618. பொறிஇன்மை யார்க்கும் பழிஅன்றுஅறிவு அறிந்து
ஆள்வினை இன்மை பழி.

619. தெய்வத்தான் ஆகாது எனினும் முயற்சிதன்
மெய்வருத்தக் கூலி தரும்.

620. ஊழையும் உப்பக்கம் காண்பர் உலைவுஇன்றித்
தாழாது உஞற்று பவர்.

६२. कार्य-कुशलता

६११. (किसी कार्य को) असाध्य मानकर अकर्मण्य न बनना चाहिए। सत्प्रयास यथोचित सम्मान प्रदान करेगा।

६१२. अपने कर्म में अप्रयत्नशील रहने के स्वभाव को त्यागना चाहिए। कर्म को अधूरा छोड़नेवाले को संसार छोड़ देता है।

६१३. परोपकार नामक गौरव प्रयास नामक श्रेष्ठ स्वभाव में अवस्थित है।

६१४. अप्रयत्नशील का परोपकार भीरु का खड्ग से शासन करने के समान असफल सिद्ध होगा।

६१५. सुख की कामना से रहित कर्मरथी आत्मबन्धुओं का दुःख-निवारक व भारवाहक स्तम्भ होता है।

६१६. प्रयास से सम्पत्ति में वृद्धि होगी। प्रयासहीनता निर्धनता ला देगी।

६१७. कहा जाता है कि आलस्य में अति दरिद्रता निवास करती है, और निरालस्यपूर्ण प्रयास में कमला निवास करती है।

६१८. सौभाग्य का न होना किसी के लिए दोष नहीं है। समझकर सत्प्रयास न करना ही दोष है।

६१९. भगवान से (अथवा भाग्य से) सिद्ध न होने पर भी प्रयास अपने शारीरिक परिश्रम की मजदूरी अवश्य प्रदान करेगा।

६२०. निरन्तर अथक परिश्रम करनेवाले भाग्य को भी परास्त कर देंगे।

63. இடுக்கண் அழியாமை

621. இடுககண் வருஙகால் நகுக அதனை
அடுததூர்வது அஃதொப்பது இல்.

622. வெள்ளத்து அனைய இடும்பை அறிவுடையான்
உள்ளத்தின் உள்ளக கெடும்.

623. இடும்பைக்கு இடும்பை படுப்பா இடும்பைககு
இடும்பை படாஅ தவா.

624. மடுத்தவாய் எல்லாம் பகடுஅன்னான் உற்ற
இடுக்கண் இடர்ப்பாடு உடைத்து.

625. அடுக்கி வரினும் அழிவிலான் உற்ற
இடுககண் இடுககண் படும்.

626. அற்றேம்என்று அல்லற் படுபவோ பெற்றேம்என்று
ஓம்புதல் தேற்றா தவர்.

627. இலககம் உடம்புஇடும்பைக்கு என்று கலக்கத்தைக
கையாறாக் கொள்ளாதாம் மேல.

628. இன்பம் விழையான் இடும்பை இயல்புஎன்பான்
துன்பம் உறுதல் இலன்.

629 இன்பத்துள் இன்பம் விழையாதான் துன்பத்துள்
துன்பம் உறுதல இலன்.

630. இன்னாமை இன்பம் எனககொளின் ஆகும்தன்
ஒன்னார் விழையும் சிறப்பு.

६३. दुःख में अधीर न होना

६२१. दुःख आ पड़ने पर मुस्कराओ। उसका सामना करके विजयी होने का साधन इसके समान और कोई नहीं है।

६२२. बाढ़ के समान आनेवाला दुःख बुद्धिमान के अपने हृदय में विचार करने मात्र से नष्ट हो जायगा।

६२३. दुःख से दुखित न होनेवाले उस दुःख को ही दुखित कर देंगे।

६२४. अवरोधित सभी मार्गों में (गाड़ी को) खींच ले जानेवाले वृषभ के समान प्रयत्नशील व्यक्ति पर आया हुआ दुःख ही दुखित होता है।

६२५. निरन्तर दुःख आ पड़ने पर भी निरुत्साहित न होनेवाले पर आया हुआ दुःख ही दुखित होगा।

६२६. धन-प्राप्ति पर लोभ सहित उसकी रक्षा न करनेवाले उसके जाने पर अति दुःखित हो क्योंकर विचलित होंगे ?

६२७. श्रेष्ठ व्यक्ति शरीर को दुःख का स्थल मानकर दुःख के आ पड़ने पर विचलित नहीं होते।

६२८. सुख की इच्छा न करनेवाला व दुःख को स्वाभाविक माननेवाला दुःख के आ पड़ने पर दुखित नहीं होता।

६२९. सुख में सुखी हो उसकी इच्छा न करनेवाला दुःख में दुःखी हो विचलित न होगा।

६३०. कोई दुःख को ही सुख मान ले तो शत्रु द्वारा भी प्रशंसित होने का सम्मान उसे सिद्ध होगा।

2. அமைச்சியல்

64. அமைச்சு

631. கருவியும் காலமும செய்கையும் செய்யும்
அருவினையும் மாண்டது அமைச்சு.

632. வன்கண் குடிகாத்தல் கற்றுஅறிதல் ஆள்வினையொடு
ஐநதுடன் மாண்டது அமைச்சு.

633. பிரிததலும் பேணிக் கொளலும் பிரிந்தார்ப்
பொருததலும் வல்லது அமைச்சு.

634. தெரிதலும் தேர்ந்து செயலும் ஒருதலையாச்
சொல்லலும் வல்லது அமைச்சு.

635. அறன்அறிந்து ஆன்றுஅமைந்த சொல்லான்எஞ் ஞான்றும்
திறன்அறிந்தான் தேர்ச்சித் துணை.

636. மதிநுட்பம் நூலொடு உடையார்க்கு அதிநுட்பம்
யாவுள முன்நிற் பவை.

637. செயற்கை அறிந்தக் கடைத்தும் உலகத்து
இயற்கை அறிந்து செயல்.

638. அறிகொன்று அறியான் எனினும் உறுதி
உழையிருந்தான் கூறல் கடன்.

639. பழுதுஎண்ணும் மநதிரியின் பக்கத்துள் தெவ்ஓர்
எழுபது கோடி உறும்.

640. முறைப்படச சூழ்நதும் முடிவிலவே செய்வா
திறப்பாடு இலாஅ தவர்.

२—सामन्त

६४. मन्त्रित्व

६३१. साधन, काल, कर्म तथा उसके करने की विशिष्ट रीति के ज्ञान से सुसम्पन्न होता है मन्त्रित्व।

६३२. निर्भयता, कुलीनता, संरक्षण की शक्ति, अध्ययन का ज्ञान तथा दृढ़ प्रयास—इन पाँचों गुणों से सुसम्पन्न होता है मन्त्रित्व।

६३३. (आवश्यकतानुसार) सम्बन्ध-विच्छेदन, संरक्षण तथा पृथक हुए व्यक्ति को पुनः मिला लेने की शक्तियों से सुसम्पन्न होता है मन्त्रित्व।

६३४. विभिन्न विषयों को समझने की विशिष्ट शक्ति, विश्लेषणयुक्त विशिष्ट कर्म तथा अपने अभिप्राय को निर्भयतापूर्वक कहने की शक्ति से सुसम्पन्न होता है मन्त्रित्व।

६३५. धर्मज्ञ ज्ञान-सम्पन्न वक्ता व सदा शक्ति को समझनेवाला मर्मज्ञ मन्त्री (व मित्र) होता है।

६३६. ग्रन्थ-ज्ञान के साथ तीक्ष्ण बुद्धि प्राप्त व्यक्ति के सम्मुख आ खड़ी होनेवाली अति रहस्यपूर्ण समस्या हो क्या सकती?

६३७. कर्म करने की विधि समझ लेने पर भी लोक व्यवहार को समझकर उसे यथानुकूल करना चाहिए।

६३८. (सम्राट् दूसरों के) ज्ञान का संहार करके स्वयं भी अज्ञानी बना रहे तो भी न्याय को दृढ़तापूर्वक व्यक्त करना निकट उपस्थित अमात्य का कर्त्तव्य है।

६३९. बाधा उपस्थित करने का विचार करनेवाले मन्त्री से सात करोड़ शत्रुओं के निकट रहने में ही भला है।

६४०. दृढ़ता जिनमें नहीं होती, वे नियमपूर्वक कर्म को प्रारम्भ करने पर भी उसे सफलता के साथ पूर्ण न कर पायेंगे।

65. சொல்வன்மை

641. நாநலம் என்னும் நலன்உடைமை அந்நலம்
யாநலத்து உள்ளதூஉம் அன்று.

642. ஆககமும் கேடும் அதனால் வருதலான்
காததோம்பல் சொல்லின்கண் சோர்வு.

643. கேட்டார்ப் பிணிக்கும் தகைஅவாய்க் கேளாரும்
வேட்ப மொழிவதாம் சொல்.

644. திறன்அறிந்து சொல்லுக சொல்லை அறனும்
பொருளும் அதனின்ஊங்கு இல்.

645. சொல்லுக சொல்லைப் பிறிதோர்சொல் அச்சொல்லை
வெல்லும்சொல் இன்மை அறிந்து.

646. வேட்பததாம் சொல்லிப் பிறர்சொற் பயன்கோடல்
மாட்சியின் மாசற்றார் கோள்.

647. சொலல்வல்லன் சோர்விலன் அஞசான் அவனை
இகல்வெல்லல் யாாககும் அரிது.

648. விரைந்து தொழில்கேட்கும் ஞாலம் நிரநதுஇனிது
சொல்லுதல் வல்லார்ப் பெறின்.

649. பலசொல்லல் காமுறுவர் [மன்றமாசு அற்ற
சிலசொலலல் தேற்றா தவர்.

650. இணாஊழ்ததும நாறா மலாஅணையர் கற்றது
உணர விரிததுஉரையா தார்

६५. वाक् शक्ति

६४१. वाक्पटुता नामक विशिष्ट गुण की शक्ति और किसी गुण-विशेष में नहीं है ।

६४२. उससे विकास एवं विनाश दोनों प्राप्त होने के कारण अपने शब्दों पर सदा ध्यान रखना चाहिए ।

६४३. बोल वह है कि जो सुननेवाले को वशीभूत कर ले, और न सुननेवालों में भी सुनने की इच्छा उत्पन्न कर दे ।

६४४. शब्द-शक्ति को समझकर शब्दों का प्रयोग करना चाहिए । धर्म और धन इससे श्रेष्ठ नहीं हैं ।

६४५. किसी शब्द का प्रयोग तब करो जब समझ लो कि दूसरा कोई शब्द इस पर विजय प्राप्त नहीं कर पावेगा ।

६४६. प्रिय शब्द स्वयं कहकर दूसरों के शब्दों के प्रयोजन को हृदयंगम करना निर्मल स्वभाववाले महान व्यक्तियों का सिद्धान्त है ।

६४७. वाक्पटु, निरालस्य व निर्भीक व्यक्ति से विरोध करके उससे कोई नहीं जीत सकता ।

६४८. विचारों को सजाकर मधुर ढंग से व्यक्त करनेवाला प्राप्त हो तो संसार शीघ्र उसके आदेशों को सुनेगा ।

६४९. थोड़े से निर्दोष शब्दों में (अपने विचारों को) कहना जो नहीं जानते वे वस्तुतः अनेक शब्दों को कहने के इच्छुक होंगे ।

६५०. स्वयं अध्ययन किये हुए ग्रन्थों को दूसरों को समझाने की शक्ति जिनमें नहीं होती वे गुच्छे के समान पुष्पित होने पर भी गन्धहीन पुष्प के समान होते हैं ।

66. வினைத் தூய்மை

651. துணைநலம் ஆக்கம் தரூஉம் வினைநலம்
வேண்டிய எல்லாம் தரும்.

652. என்றும் ஒருவுதல் வேண்டும் புகழொடு
நன்றி பயவா வினை.

653. ஓஒதல் வேண்டும் ஒளிமாழ்கும் செய்வினை
ஆஅதும் என்னும் அவர்.

654. இடுக்கண் படினும் இளிவந்த செய்யார்
நடுக்குஅற்ற காட்சி யவர்.

655. எற்றென்று இரங்குவ செய்யற்க செய்வானேல்
மற்றுஅன்ன செய்யாமை நன்று.

656. ஈன்றாள் பசிகாண்பான் ஆயினும் செய்யற்க
சான்றோர் பழிக்கும் வினை.

657. பழிமலைந்து எய்திய ஆக்கத்தின் சான்றோர்
கழிநல் குரவே தலை.

658. கடிந்த கடிந்துஒரார் செய்தார்க்கு அவைதாம்
முடிந்தாலும் பீழை தரும்.

659. அழக்கொண்ட எல்லாம் அழப்போம் இழப்பினும்
பிற்பயக்கும் நற்பா லவை.

660. சலத்தால் பொருள்செய்தே மார்த்தல் பசுமண்
கலத்துள்நீர் பெய்துஇரீஇ யற்று

६६. व्यवहार-विशुद्धि

६५१ (वाह्य) सहायता मनुष्य को श्रीवृद्धि प्रदान करती है, पर (व्यक्तिगत) व्यवहार-विशुद्धि सकल आवश्यक पदार्थों को प्रदान करती है।

६५२. सुयश के साथ जो व्यवहार सद्धर्मप्रद भी न हो उसे सदा के लिए त्यागना चाहिए।

६५३. उत्तरोत्तर विकास के इच्छुक सुयश में वाधा उपस्थित करनेवाले कर्मों को त्यागें।

६५४. निश्चल बुद्धिवाले विपदग्रस्त अवस्था में भी निन्द्य व्यवहार न करेंगे।

६५५. पश्चात्ताप-जनक व्यवहार न करें, और यदि कर वैठे हों तो आगे से उससे वचे रहना अच्छा है।

६५६. जननी को क्षुधाग्रस्त भी क्यों न देखना पड़े, विद्वज्जनों से दोषारोपित होनेवाले व्यवहारों को मत करो।

६५७. सदोष तुच्छ व्यवहार से प्राप्त समृद्धि से विज्ञ जनों के लिए अत्यधिक निर्धनता ही श्रेष्ठ है।

६५८. त्याज्य व्यवहारों का वहिष्कार किये विना उनमें प्रवृत्त होनेवाले को, सफल होने पर भी, वे दुःख ही देंगे।

६५९. दूसरों को रुलाकर प्राप्त की हुई सम्पूर्ण सम्पत्ति रो कर खोनी पड़ेगी। सद्व्यवहार से संचित सम्पत्ति खोने पर भी भविष्य में लाभप्रद होगी।

६६०. वंचना से धन संग्रह कर उसकी रक्षा करना, कच्चे घड़े में जल भर कर उसकी रक्षा करने के समान होता है।

67. வினைத் திட்டம்

661. வினைததிட்பம் என்பது ஒருவன் மனததிட்பம்
மற்றைய எல்லாம் பிற.

662. ஊறுஒரால் உற்றபின் ஒல்காமை இவ்விரண்டின்
ஆறுஎன்பர் ஆய்நதவா கோள்.

663. கடைகொட்கச் செய்தககது ஆண்மை இடைகொட்கின்
எற்றா விழுமம் தரும்.

664. சொலலுதல் யாாகரும் எளிய அரியவாம்
சொல்லிய வண்ணம் செயல்.

665 வீறுஎய்தி மாண்டார் வினைத்திட்பம் வேந்தன்கண்
ஊறுஎய்தி உள்ளப் படும்.

666. எண்ணிய எண்ணியாங்கு எய்துப எண்ணியாா
திண்ணியர் ஆகப் பெறின்.

667. உருவுகண்டு எள்ளாமை வேண்டும் உருள்பெருந்தேர்க்கு
அசசுஆணி அன்னார் உடைதது.

668, கலஙகாது கண்ட வினைககண் துளங்காது
தூககம் கடிநது செயல்.

669. துன்பம் உறவரினும செய்க துணிவுஆற்றி
இன்பம பயககும் வினை.

670. எனைததிட்பம் எயதியக கணணும வினைத்திட்பம்
வேண்டாரை வேண்டாது உலகு.

६७. कर्म की दृढ़ता

६६१. कर्म की दृढ़ता वस्तुतः व्यक्ति की मानसिक दृढ़ता ही है। शेष सब पृथक ही ठहरते हैं।

६६२. नीति-निपुणों का निश्चित मत है कि कर्म की दृढ़ता के दो मार्ग हैं—दोषपूर्ण कर्मों को न करना, तथा किये हुए कर्मों के कारण अधीर न होना।

६६३. बहादुरी इसी में है कि कर्म के अन्त में ही मर्म व्यक्त हो। मध्य में बात फूट गयी तो वह असह्य दुःख देगी।

६६४. कहना सब के लिए सरल होता है, पर कहे अनुसार करना अति दुष्कर होता है।

६६५. सुयश प्राप्त (मन्त्री जैसे) श्रेष्ठ पद में स्थित व्यक्ति के कर्म की दृढ़ता सम्राट् तक पहुँचकर सर्व-सम्मानित होगी।

६६६. विचारवान (अपने कर्म में) दृढ़ रहें तो वे विचारे हुए पदार्थ को विचारे हुए रूप में ही प्राप्त करेंगे।

६६७. रूपमात्र को देखकर किसी को तुच्छ न समझ बैठो। बड़े रथ की घूमनेवाली किल्ली के समान वे हो सकते हैं।

६६८. अविचलित रूप से निश्चित कर्म को अथक परिश्रम से अविलम्ब करना चाहिए।

६६९. (अन्त में) आनन्दप्रद कर्म को, दुःख आ पड़ने पर भी, सधैर्य करना चाहिए।

६७०. और किसी प्रकार की दृढ़ता चाहे हो, पर कर्म की दृढ़ता से रहित व्यक्ति की परवाह लोक न करेगा।

68. வினைசெயல்வகை

671. சூழ்ச்சி முடிவு துணிவுஎய்தல் அத்துணிவு
தாழ்ச்சியுள் தங்குதல் தீது.

672. தூங்குக தூங்கிச் செயற்பால தூங்கற்க
தூங்காது செய்யும் வினை

673. ஒல்லும்வாய் எல்லாம் வினைநன்றே ஒல்லாக்கால்
செல்லும்வாய் நோக்கிச் செயல

674. வினைபகை என்றிரண்டின் எச்சம் நினையுங்கால்
தீயெச்சம் போலத் தெறும்.

675. பொருள்கருவி காலம் வினைஇடனொடு ஐந்தும்
இருள்தீர எண்ணிச் செயல.

676. முடிவும் இடையூறும் முற்றியாங்கு எய்தும்
படுபயனும் பார்த்துச் செயல்.

677. செய்வினை செய்வான் செயல்முறை அவ்வினை
உள்ளறிவான் உள்ளம் கொளல்.

678. வினையான் வினைஆக்கிக் கோடல் நனைகவுள்
யானையால் யானையாத்து அற்று.

679. நட்டார்க்கு நல்ல செயலின் விரைந்ததே
ஒட்டாரை ஒட்டிக் கொளல்.

680. உறைசிறியார் உள்நடுங்கல் அஞ்சிக் குறைபெறின்
கொள்வர் பெரியார்ப் பணிந்து

६८. कर्म करने की रीति

६७१. उपाय के विचार की समाप्ति दृढ़ निश्चय करने में निहित है, और फिर उस दृढ़ निश्चय में शिथिलता लाना अथवा विलम्ब करना हानिकारक है।

६७२. विलम्ब की आवश्यकता हो तो विलम्ब से ही कर्म करो। जहाँ विलम्ब के लिए स्थान न हो उसे अविलम्ब करो।

६७३. जहाँ-जहाँ सम्भव हो, कर्म को पूर्ण कर डालना अच्छा है। सम्भव न हो तो साफल्यप्रद पथ को देखकर उसके पथिक बनो।

६७४. कर्म एवं शत्रुता—इन दोनों के अवशिष्ट अंश का विचार करने पर ज्ञात होगा कि वे अग्नि के अवशिष्ट अंश के समान (बढ़ कर) विनाशकारी होंगे।

६७५ धन, साधन, समय, कर्म तथा स्थान के साथ इन पाँचों का स्पष्टतः विचार करके किसी कार्य में प्रवृत्त होना चाहिए।

६७६. कर्म को सम्पन्न करने की रीति, सम्भाव्य बाधाएँ तथा सफल होने पर प्राप्य विशिष्ट प्रयोजन को देखकर उक्त कर्म में प्रवृत्त होना चाहिए।

६७७. कर्म को सम्पन्न करने का मार्ग यही है कि उस कर्म के मर्मज्ञ के विचारों को समझें।

६७८. एक कर्म से दूसरा कर्म भी सिद्ध कर लेना मद से आर्द्र कपोलों से युक्त एक हाथी के द्वारा दूसरे हाथी को पकड़ने के समान होता है।

६७९. मित्रों की भलाई करने की अपेक्षा शत्रुओं के साथ सम्बन्ध

69. தூது

681. அன்புஉடைமை ஆன்ற குடிப்பிறத்தல் வேந்துஅவாம்
பணபுஉடைமை தூதுஉரைப்பான் பண்பு.

682. அன்புஅறிவு ஆராய்நத சொல்வன்மை தூதுஉரைப்பார்க்கு
இன்றி அமையாத மூன்று.

683. நூலாருள் நூல்வல்லன் ஆகுதல வேலாருள்
வென்றி வினையுரைப்பான் பண்பு.

684 அறிவுஉரு ஆராய்ந்த கல்விஇம் மூன்றன்
செறிவுடையான் செல்க வினைக்கு.

685. தொகச்சொலலித தூவாத நீககி நகச்சொல்லி
நன்றி பயப்பதாம் தூது.

686. கற்றுக்கண் அஞ்சான் செலச்சொல்லிக காலத்தால்
தக்கது அறிவதாம் தூது.

687. கடன்அறிந்து காலம் கருதி இடன்அறிந்து
எண்ணி உரைப்பான் தலை.

688. தூய்மை துணைமை துணிவுடைமை இம்மூன்றின்
வாய்மை வழியுரைப்பான் பண்பு.

689. விடுமாற்றம வேநதர்கசு உரைப்பான் வடுமாற்றம்
வாய்சோரா வன்க ணவன்.

690. இறுதி பயப்பினும் எஞ்சாது இறைவற்கு
உறுதி பயபபதாம் தூது.

६९. दूत

६८१. स्नेह-सम्पन्नता, उत्तम कुल में जन्म तथा सम्राट् के इच्छानुकूल सदाचरण दूत के लिए आवश्यक गुण हैं।

६८२. प्रेम, बुद्धि, विचारपूर्ण वाक्-शक्ति—ये तीनों दूतों के लिए आवश्यक हैं।

६८३. अपने सम्राट् की विजय के हेतु दूसरे समाटों के पास जानेवाले दूत में विद्वानों से भी सम्मानित होनेवाली विद्वत्ता होनी चाहिए।

६८४. बुद्धि, रूप तथा गम्भीर अध्ययन—तीनों एक साथ जिसमें हों वही दूत बन कर जावे।

६८५. अप्रिय शब्दों को हटाकर शृंखलाबद्ध कह कर अपने भाषण से प्रसन्न करके प्रयोजन सिद्ध करनेवाला ही दूत है।

६८६. सफल दूत वही है जो विज्ञ हो, निडर हो, हृदयवेधक वक्ता हो और जिसमें प्रत्युत्पन्नमति हो।

६८७. श्रेष्ठ दूत वही है जो कर्त्तव्यनिष्ठ हो, और देश-काल का विचार रखकर ध्यान से शब्द व्यक्त करता हो।

६८८. सदाचरण, सहयोग एवं सुनिश्चय—इन तीनों गुणों में सिद्ध होना दूत के लिए आवश्यक है।

६८९. अपने सम्राट् का सन्देश दूसरे सम्राट् से कहने की योग्यता उसी दूत में होगी जो सदोप शब्दों को मुँह के थकने पर भी सधैर्य किसी प्रकार अभिव्यक्त न करे।

६९०. मरण-संकट में भी निर्भय हो अपने सम्राट् को ही श्री-सम्पन्न करानेवाला ही दूत है।

70. மன்னரைச் சேர்ந்து ஒழுகல்

691. அகலாது அணுகாது தீககாய்வாா போல்க
இகல்வேநதாச சேர்ந்தொழுகு வாா்.

692. மன்னா விழைப விழையாமை மன்னரால்
மன்னிய ஆககம் தரும்.

693. போறறின் அரியவை போற்றல் கடுத்தபின்
தேற்றுதல் யார்க்கும் அரிது.

694. செவிச்சொல்லும் சோந்த நகையும் அவித்தொழுகல்
ஆன்ற பெரியார் அகதது.

695. எப்பொருளும் ஓரார் தொடரார்மற்று அப்பொருளை
விட்டககால கேட்க மறை.

696 குறிப்பு அறிநது காலம் கருதி வெறுப்பில
வேண்டுப வேட்பச் சொலல்.

697 வேட்பன சொல்லி வினையில எஞ்ஞான்றும்
கேட்பினும் சொல்லா விடல்.

698 இளையர் இனமுறையர் என்றுஇகழார் நின்ற
ஒளியொடு ஒழுகப் படும்.

699. கொளபபட்டேம் என்றுஎண்ணிக் கொள்ளாத செய்யார்
துளககுஅற்ற காட்சி யவா.

700 பழையம் எனககருதிப் பண்புஅல்ல செய்யும்
கெழுதகைமை கேடு தரும்.

७०. सम्राट् से सहयोग

६९१. अति दूर व अति समीप न रहकर जाड़े में अग्नि में तपने के समान सम्राट् से सहयोग रखना चाहिए।

६९२. सम्राट् की प्रिय वस्तु की अभिलाषा न करना सम्राट् से सहयोग प्राप्त व्यक्ति को स्थाई सम्मृद्धि प्रदान करेगा।

६९३. सम्राट् का सहयोग सुरक्षित रखना चाहो तो प्रबल दोषों से अपने को सर्वथा पृथक रक्खो। सम्राट् के क्रुद्ध होने पर उसे कोई समझा नहीं सकता।

६९४. शक्ति-सम्पन्न श्रेष्ठ व्यक्ति के सम्मुख कानाफूसी करने और किसी को देखकर हँसने से बचे रहना चाहिए।

६९५. (सम्राट् से सहयोग प्राप्त व्यक्ति उनकी) किसी गुप्त बात को न सुनता है और न बारबार पूछता है। स्वयं रहस्य को व्यक्त करें तो सुन लेता है।

६९६. सम्राट् के भाव समझकर, समय का विचार करते हुए, प्रिय एवं इच्छित विषयों को आनन्दप्रद रीति से उनके सामने व्यक्त करो।

६९७. सम्राट् के प्रिय विषयों को ही कहकर, और निरर्थक विषयों को उनके पूछने पर भी न कहकर सदा के लिए त्याग देना चाहिए।

६९८. अल्पवयस्क अथवा बन्धु कह कर सम्राट् का अपमान न करके अपनी स्थिति के अनुकूल मर्यादा के साथ व्यवहार करना चाहिए।

६९९. निश्चल, विशुद्ध व बुद्धिमान, 'हम सम्राट् के कृपा-पात्र हैं' ऐसा विचार कर उनके अप्रिय विषयों को कदापि न करेंगे।

७००. अपने को सम्राट् का चिर-परिचित मानकर दुर्व्यवहार में प्रवृत्त होनेवाला अधिकार हानिकारक होगा।

71. குறிப்பு அறிதல்

701. கூறாமை நோககிக் குறிப்புஅறிவான் எஞ்ஞான்றும்
மாறாநீர் வையக்கு அணி.

702. ஐயப் படாஅது அகந்தது உணர்வானைத
தெய்வத்தொடு ஒப்பக் கொளல்.

703. குறிப்பின் குறிப்புஉணர் வாரை உறுப்பினுள்
யாது கொடுத்தும் கொளல்.

704 குறிததது கூறாமைக கொள்வாரோடு ஏனை
உறுப்புஓ ரனையரால் வேறு.

705. குறிப்பின் குறிப்புஉணரா வாயின் உறுப்பினுள்
என்ன பயத்தவோ கண்.

706 அடுத்தது காட்டும் பளிங்குபோல் நெஞ்சம
கடுத்தது காட்டும் முகம்.

707. முகத்தின் முதுக்குறைந்தது உண்டோ உவப்பினும்
காயினும் தான்முந் துறும்

708. முகம்நோக்கி நிற்க அமையும் அகம்நோக்கி
உற்றது உணர்வார்ப் பெறின்.

709. பகைமையும் கேண்மையும் கண்உரைககும் கண்ணின்
வகைமை உணர்வார்ப் பெறின்.

710. நுண்ணியம் என்பார் அளக்குங்கோல் காணுங்கால்
கண்அல்லது இல்லை பிற.

७१. भावज्ञता

७०१. किसी के कहे विना मुखदर्शन मात्र से भावों को हृदयंगम कर लेनेवाला सदा के लिये अक्षुण्ण जल समुद्र के मध्य उपस्थित संसार का एक आभूषण होगा।

७०२. सन्देह किये विना हृदय की भावना को हृदयंगम कर लेनेवाला देवता के समान माना जायगा।

७०३. मुखाकृति मात्र से हृदय की भावना को जो समझ ले उसे (अपने धन, भूमि आदि में से) कोई भाग देकर भी अपना लो।

७०४. किसी के कहे विना हृदय की वात को समझ लेनेवाले से दूसरे व्यक्ति, सम्पत्ति में समान होने पर भी, वुद्धि के कारण विभिन्न ही ठहरते हैं।

७०५. मुखाकृति आदि से हृदय के भावों को यदि कोई न समझ सके तो उसके शरीर के अंगों में नेत्रों के होने से क्या प्रयोजन?

७०६. समीपस्थ वस्तु को प्रतिविंवित करनेवाले संगमरमर के सदृश हृदय के भावातिरेक को मुख अभिव्यक्त कर देता है।

७०७. सम्मुख आते ही (मन की) प्रसन्नता या रुष्टता जिसके मुख से तुरन्त व्यक्त हो जाय उससे अधिक ओछी वुद्धिवाला और कोई हो सकता है?

७०८. मुख मात्र को देखकर हृदय के भाव को समझ लेनेवाला प्राप्त हो जाय तो उसका मुख देखते हुए खड़े हो जाना यथेष्ट है।

७०९. नेत्र के विभिन्न रूपों से भाव को समझ लेनेवाला प्राप्त हो जाय तो किसी के नेत्र ही (हृदय में उपस्थित) शत्रुता एवं मित्रता को व्यक्त कर देंगे।

७१०. सूक्ष्म-वुद्धि कहलानेवाले का माप-दण्ड, समीक्षा करने पर, आँख के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

72. அவை அறிதல்

711. அவைஅறிந்து ஆராய்ந்து சொல்லுக சொல்லின்
தொகைஅறிந்த தூய்மை யவர்.

712. இடைதெரிந்து நன்குணர்ந்து சொல்லுக சொல்லின்
நடைதெரிந்த நன்மை யவர்.

713. அவையறியார் சொல்லல்மேற் கொள்பவர் சொல்லின்
வகையறியார் வல்லதூஉம் இல்.

714. ஒளியார்முன் ஒள்ளியா ஆதல் வெளியார்முன்
வான்சுதை வண்ணம் கொளல்.

715. நன்றுஎன்ற வற்றுள்ளும் நன்றே முதுவருள்
முந்து கிளவாச் செறிவு.

716. ஆற்றின் நிலைதளர்ந்து அற்றே வியன்புலம்
ஏற்றுஉணர்வார் முன்னர் இழுக்கு.

717. கற்றறிந்தார் கல்வி விளங்கும் கசடுஅறச்
சொல்தெரிதல் வல்லார் அகதது.

718 உணர்வது உடையார்முன் சொல்லல் வளாவதன்
பாத்தியுள் நீர்சொரிந்து அற்று.

719. புல்லவையுள் பொச்சாந்தும் சொல்லற்க நல்லவையுள்
நன்கு செலச்சொல்லு வார்.

720. அஙகணததுள் உக்க அமிழ்தற்றால் தம்கணததா
அல்லாமுன் கோட்டி கொளல்.

७२. सभा को समझना

७११. शब्दों के क्रम की शक्ति का स्पष्ट ज्ञान रखनेवाले सभा को समझकर ध्यान से शब्दों का व्यवहार करें।

७१२. शब्दों की शैली से अवगत ज्ञान-सम्पन्न व्यक्ति को चाहिए कि श्रोताओं के श्रवण की अभिलाषा को स्पष्टतः समझकर शब्दों का व्यवहार करें।

७१३. सभा को समझे बिना शब्दों के व्यवहार की ओर अग्रसर होनेवाले शब्दों की रीति से अनभिज्ञ ही होते हैं, और कथन योग्य विषय भी उनके पास नहीं होता।

७१४. बुद्धिमान के सम्मुख बुद्धिमान जैसे ही सम्भाषण करो, और बुद्धिहीन के सम्मुख सफेद चूने के समान ही बन जाओ।

७१५. श्रेष्ठ बुद्धिवन्त के सम्मुख बढ़कर सम्भाषण न करने का संयम मनुष्य के प्रयोजन-सम्पन्न विषयों में प्रधान है।

७१६. विशद ज्ञान-क्षेत्र के विद्वानों के सम्मुख सदोष सिद्ध होना सदाचरण की स्थिति में विघ्न पड़ जाने के समान है।

७१७. विशुद्ध रूप से शब्दों के भाव को समझनेवाले विद्वान के सम्मुख ही (अनेक ग्रन्थों के) अध्ययन-सम्पन्न व्यक्ति की विद्या प्रकाशित होगी।

७१८. अच्छी बुद्धिवाले व्यक्ति के सम्मुख बोलना विकसित होती हुई कृषि को जल से सिंचित करने के समान है।

७१९. श्रेष्ठ विद्वानों की सभा के प्रभावोत्पादक वक्ता मूर्खों की सभा में भूलकर भी न बोलें।

७२० स्वजन से रहित सभा में किसी विषय पर बोलना स्वीकार न करो; अन्यथा वह अशुद्ध आँगन में गिराये गये अमृत के समान होगा।

73. அவை அஞ்சாமை

721. வகைஅறிந்து வல்லவை வாய்சோரார் சொல்லின்
தொகைஅறிந்த தூய்மை யவர்.

722. கற்றாருள் கற்றார் எனப்படுவர் கற்றார்முன்
கற்ற செலச்சொல்லு வார்.

723. பகைஅகத்துச் சாவார் எளியர் அரியர்
அவைஅகத்து அஞ்சா தவர்.

724. கற்றார்முன் கற்ற செலச்சொல்லித் தாம்கற்ற
மிக்காருள் மிக்க கொளல்.

725. ஆற்றின் அளவுஅறிந்து கற்க அவைஅஞ்சா
மாற்றம் கொடுத்தல் பொருட்டு.

726. வாளொடுஎன் வன்கண்ணர் அல்லார்க்கு நூலொடுஎன்
நுண்அவை அஞ்சு பவர்க்கு.

727. பகைஅகத்துப் பேடிகை ஒள்வாள் அவைஅகத்து
அஞ்சும் அவன்கற்ற நூல்.

728. பல்லவை கற்றும் பயம்இலரே நல்லவையுள்
நன்கு செலச்சொல்லா தார்.

729. கல்லா தவரின் கடைஎன்ப கற்றறிந்தும்
நல்லார் அவைஅஞ்சு வார்.

730. உளரெனினும் இல்லாரொடு ஒப்பர் களன்அஞ்சிக்
கற்ற செலச்சொல்லா தார்

७३. सभा में निर्भीकता

७२१. शब्दों के क्रम की शक्ति का स्पष्ट ज्ञान रखनेवाले सभा की रीति को हृदयंगम करके विद्वानों के मध्य अपने मुख में अनुचित शब्द न आने देंगे।

७२२. विद्वानों के सम्मुख अपने अध्ययन को प्रभावोत्पादक ढंग से कहने की शक्ति जिनमें हो वे विद्वानों में विद्वान कहलायेंगे।

७२३. शत्रुओं के संग्राम-क्षेत्र में (सोत्साह) समाप्त होनेवाले तो अनेक होंगे, परन्तु विद्वत् सभा में निर्भीक रहनेवाले विरले ही होंगे।

७२४. विद्वानों में स्वाध्ययन का प्रभाव अपने भाषण से उत्पन्न करके अपने से श्रेष्ठ विद्वानों से अन्य विषयों का अध्ययन कर लेना चाहिए।

७२५. सभा में निर्भीक रूप से प्रत्युत्तर देने के हेतु नियमपूर्वक तर्क-शास्त्र का सतर्क अध्ययन आवश्यक है।

७२६. निडर वीर के अतिरिक्त औरों का खड्ग से क्या सम्बन्ध ! विद्वत् सभा से डरनेवाले का सद् ग्रन्थों से क्या सम्बन्ध !

७२७. सभा में डरनेवाले के हाथ में सद् ग्रन्थ वैसा ही होता है जैसे शत्रु से संग्राम-क्षेत्र में डरनेवाले के हाथ में तलवार।

७२८. अनेकानेक ग्रन्थों का अध्ययन उनके लिए निष्प्रयोजन ही होता है जो विद्वत् सभा को अपने भाषण से प्रभावित न कर सकें।

७२९. विद्याध्ययन के अनन्तर भी विद्वत् सभा से भयभीत होनेवाले वेपढ़ों से भी बदतर हैं।

७३०. सभा से भयभीत हो अपने अध्ययन का प्रभाव जो श्रोताओं में न उत्पन्न कर सकें वे सप्राण होते हुए भी निष्प्राण सदृश ही हैं।

3. அரணியல்

74. நாடு

731. தள்ளா விளையுளும் தக்காரும் தாழ்வுஇலாச்
செல்வரும் சேர்வது நாடு.

732. பெரும்பொருளால் பெள்தக்கது ஆகி அருங்கேட்டால்
ஆற்ற விளைவது நாடு

733 பொறைஒருங்கு மேல்வருங்கால் தாங்கி இறைவற்கு
இறைஒருங்கு நேர்வது நாடு.

734. உறுபசியும் ஓவாப் பிணியும் செறுபகையும்
சேராது இயல்வது நாடு.

735. பல்குழுவும பாழ்செய்யும் உட்பகையும் வேநதுஅலைக்கும்
கொல்குறும்பும் இல்லது நாடு.

736. கேடுஅறியாக் கெட்ட இடத்தும் வளங்குன்ரு
நாடுஎன்ப நாட்டின் தலை.

737 இருபுனலும் வாய்ந்த மலையும் வருபுனலும்
வல் அரணும் நாட்டிற்கு உறுப்பு.

738. பிணிஇன்மை செல்வம் விளைவுஇன்பம் ஏமம்
அணிஎன்ப நாட்டிற்குஇவ் ஐந்து

739. நாடுஎன்ப நாடா வளத்தன நாடுஅல்ல
நாட வளநதரும் நாடு

740 ஆங்குஅமைவு எயதியக கணணும் பயம்இன்றே
வேநதுஅமைவு இல்லாத நாடு.

३. दुर्ग

७४. राज्य

७३१. अक्षय उपज, योग्य विद्वान तथा क्षतिहीन धनवान से युक्त होवे तो वही राज्य होता है।

७३२. विशाल सम्पत्ति के फलस्वरूप दूसरों के लिए आकर्षक, विनाश रहित तथा विशद उपजप्रद हो तो वही राज्य होता है।

७३३. विभिन्न भार एकत्रित हो आ पड़ने पर उसका सहन करते हुए (प्रजा-वर्ग) अपने सम्राट् को भी यथानुसार समस्त कर चुकाता रहे तो वही राज्य होता है।

७३४. क्षुधाधिक्य, निरन्तर व्याधि तथा बाह्याक्रमणों से मुक्त हो तो वही राज्य होता है।

७३५. अनेक (विरोधी) संघ-सभाएँ, विनाशकारी अन्तःकलह तथा राजा के लिए दुःखप्रद हत्यारे भूस्वामी न हों तो वही राज्य होता है।

७३६. (शत्रुओं से) क्षतिग्रस्त न होकर, विनाश काल में भी सम्मृद्धि में क्षति न आने देनेवाला राज्य ही राज्यों में श्रेष्ठ होता है।

७३७. (सोता और वर्षा रूपी) जल के उभय स्रोत, यथानुकूल पर्वत, प्रवाहपूर्ण नदी तथा सुदृढ़ दुर्ग राज्य के अनिवार्य अंग हैं।

७३८. व्याधि रहित अवस्था, सम्पत्ति, उपज-समृद्धि, सानन्द-जीवन तथा सुरक्षा—ये पाँचों राज्य के अलंकार कहे जाते हैं।

७३९. निष्प्रयास स्वयं सम्मृद्ध हो तो वही राज्य कहलाता है। सप्रयास सम्मृद्ध होनेवाले राज्य वस्तुतः श्रेष्ठ राज्य नहीं हैं।

७४०. उपर्युक्त रूप में अवस्थित होने पर भी राज्य का एक श्रेष्ठ राजा न हो तो वह सब व्यर्थ ही सिद्ध होगा।

75. அரண்

741. ஆற்று பவர்கும் அரண்பொருள் அஞ்சித்தன்
போறறு பவாககும் பொருள்.

742. மணிநீரும் மணணும மலேயும் அணிநிழற
காடும உடையது அரண்.

743. உயாவுதிண்மை அருமைஇந நான்கின்
அமைவுஅரண் என்றுஉரைககும் நூல்.

744. சிறுகாப்பின் பேர்இடததது ஆகி உறுபகை
ஊககம அழிபபது அரண்.

745. கொளறகுஅரிதாயக கொண்டகூழ்தது ஆகி அகததார்
நிலேககுஎளிதாம் நீரது அரண்.

746. எல்லாப பொருளும் உடைததாய் இடத்துஉதவும்
நல்லாள் உடையது அரண.

747. முற்றியும் முறறுது எறிநதும் மறைப்படுத்தும்
பற்றறகு அரியது அரண.

748. முற்றுஆற்றி முற்றி யவரையும் பற்றுஆற்றிப்
பற்றியார் வெல்வது அரண.

749. முனேமுகதது மாறறலா சாய வினேமுகத்து
வீறுஎய்தி மாண்டது அரண்.

750. எனேமாட்சிதது ஆகியக கணணும் விணேமாட்சி
இல்லாாகண் இல்லது அரண்.

७५. दुर्ग

७४१. कर्मठ (आक्रमणकारियों) के लिए दुर्ग महत्त्वपूर्ण होता है, और उनके लिए भी जो भयभीत हो अपनी रक्षा करना चाहते हैं।

७४२. माणिक्य-सा स्वच्छ जल, (विशाल) भूभाग, (ऊँचे) पर्वत, सुन्दर व शीतल छाया से युक्त वन—इन चारों से युक्त होता है दुर्ग।

८४३. ऊँचाई, चौड़ाई, दृढ़ता तथा दुर्जयत्व—इन चारों से सम्पन्न होने पर ही ग्रन्थ उसे 'दुर्ग' मानेंगे।

७४४. सुरक्षा के छोटे स्थान व अतिरिक्त-विशाल स्थल से युक्त तथा आक्रमणकारी शत्रु के उत्साह को विदीर्ण करनेवाला होता है दुर्ग।

७४५. शत्रुओं के लिए अजेय, खाद्य-सम्पन्न तथा भीतर उपस्थित व्यक्तियों की सुविधाओं से युक्त होता है दुर्ग।

७४६. सभी आवश्यक पदार्थों से सम्पन्न तथा विषम परिस्थिति में सहायता प्रदान करने योग्य वीरों से युक्त होता है दुर्ग।

७४७. घेर कर अथवा घेरा डाले बिना संग्राम से व वंचना से किसी प्रकार जो हस्तगत न हो सके, वही होता है दुर्ग।

७४८. अपनी प्रवीणता से घेरा डालनेवाले शत्रुओं पर भी भीतर ही सुदृढ़ रह कर विजय प्राप्त कराने की शक्ति से युक्त होता है दुर्ग।

७४९. समर-संकट में भी शत्रु का नाश करते हुए भीतर उपस्थित व्यक्तियों के विभिन्न कर्मों के द्वारा विजय प्राप्ति की सुप्रशंसा से सम्पन्न होता है दुर्ग।

७५०. चाहे जैसे गुणों से युक्त क्यों न हों, यथानुकूल विशिष्ट कर्म से रहित व्यक्तियों के लिए व्यर्थ ही होता है दुर्ग।

4. கூழியல்

76. பொருள் செயல்வகை

751. பொருள் அல்லவரைப் பொருளாகச் செய்யும்
பொருள்அல்லது இல்லை பொருள்.

752. இல்லாரை எல்லாரும் எள்ளுவர் செல்வரை
எல்லாரும் செய்வர் சிறப்பு.

753. பொருள்என்னும் பொய்யா விளக்கம் இருள்அறுக்கும்
எண்ணிய தேயத்துச் சென்று.

754. அறன்ஈனும் இன்பமும்ஈனும் திறன் அறிந்து
தீதுஇன்றி வந்த பொருள்

755. அருளொடும் அன்பொடும் வாராப் பொருளாக்கம்
புல்லார் புரள விடல்.

756. உறுபொருளும் உல்கு பொருளும்தன் ஒன்னார்த்
தெறுபொருளும் வேந்தன் பொருள்.

757. அருள்என்னும் அன்புஈன் குழவி பொருள்என்னும்
செல்வச் செவிலியால் உண்டு

758. குன்றுஏறி யானைப்போர் கண்டற்றால் தன்கைத்துஒன்று
உண்டாகச் செய்வான் வினை.

759. செய்க பொருளைச செறுநர் செருக்குஅறுக்கும்
எஃகுஅதனிற் கூரியது இல்.

760 ஒண்பொருள் காழ்ப்ப இயற்றியார்க்கு எண்பொருள்
ஏனை இரண்டும ஒருங்கு

४. खाद्य

७६. धन-बल निरूपण

७५१. तुच्छ व्यक्ति को भी (सम्मानित) स्थान प्रदान करने की शक्ति धन के अतिरिक्त और किसी में नहीं है।

७५२. निर्धन का सब अपमान करते हैं और धनवान की सब प्रशंसा करते हैं।

७५३. धन नामक कभी न बुझनेवाला दीपक (उसके संग्रहकर्ता के) अभीष्ट स्थान में जाकर उसकी बाधाओं का नाश कर डालता है।

७५४. न्याय-संगत निर्दोष रूप से आया हुआ धन धर्म तथा आनन्द प्रदान करेगा।

७५५. दया एवं प्रेम सहित न आये हुए धन-वैभव से प्रसन्न न होकर उसे अस्वीकार करो।

७५६. स्वयमेव अथवा चुंगी द्वारा प्राप्त तथा शत्रु-दमन के पश्चात् संग्रहीत धन सम्राट् का होता है।

७५७. स्नेह से उत्पन्न दया नामक शिशु, धन नामक धाय से पोषित होता है।

७५८. अपना धन हाथ में रखकर कर्म करना टीले पर चढ़कर हाथी की लड़ाई देखने के समान होता है।

८५९. धन-संग्रह करो। शत्रु के अहंकार को काटनेवाला उससे तेज शस्त्र और कोई नहीं है।

७६०. महत्तम धन का अधिक संग्रह करनेवाले को इतर दोनों पुरुषार्थ—धर्म एवं काम—एक साथ सरलता से प्राप्त होंगे।

5. படையியல்

77. படை மாட்சி

761. உறுப்புஅமைந்து ஊறுஅஞ்சா வெல்படை வேந்தன்
வெறுக்கையுள் எல்லாம் தலை.

762. உலைவிடத்து ஊறுஅஞ்சா வன்கண் தொலைவிடத்துத
தொல்படைக்கு அல்லால் அரிது.

763. ஒலித்தக்கால் என்னும் உவரி எலிப்பகை
நாகம் உயிர்ப்பக் கெடும்.

764. அழிவின்று அறைபோகாது ஆகி வழிவந்த
வன்கண் அதுவே படை.

765. கூற்றுஉடன்று மேல்வரினும் கூடி எதிர்நிற்கும்
ஆற்றல் அதுவே படை.

766. மறம்மானம் மாண்ட வழிச்செலவு தேற்றம்
எனநான்கே ஏமம் படைககு.

767. தார்தாங்கிச் செல்வது தானை தலைவந்த
போர்தாங்கும தன்மை அறிந்து.

768. அடல்தகையும் ஆற்றலும் இல்எனினும் தானை
படைததகையால பாடு பெறும்.

769. சிறுமையும் செல்லாத் துனியும் வறுமையும்
இலலாயின் வெலலும் படை.

770. நிலைமக்கள் சால உடைததுஎனினும் தானை
தலைமககள் இல்வழி இல்.

५. सैन्य

७७. सैन्य - सौष्ठव

७६१. विभिन्न अंगों से पुष्ट, बाधाओं से अविचलित विजयप्रद सेना सम्राट् की सम्पत्तियों में सर्वश्रेष्ठ होती है।

७६२. निर्बल पड़ते समय भी बाधाओं से निर्भय रहकर स्वयं प्रहार सहने का शौर्य परम्परागत सेना के अतिरिक्त अन्यत्र असम्भव है।

७६३. चूहों के सैन्य-सागर के गर्जन से क्या हो सकता है? काले नाग के श्वास मात्र से उसका सर्वनाश हो जायगा।

७६४. क्षतिग्रस्त हुए विना शत्रुओं की वंचना में न आकर परम्परागत शौर्य से युक्त हो तो वही सेना उत्तम है।

७६५. स्वयं यम के सक्रोध आक्रमण करने पर भी संघटित हो सामना करने के शौर्य से युक्त हो तो वही उत्तम सेना है।

७६६. शौर्य, सम्मान, श्रेष्ठ व्यावहारिकता तथा उत्साहवर्द्धन—ये चारों ही सैन्य के लिए श्रेष्ठ रक्षक हैं।

७६७. अपने पर चढ़ आये हुए सैन्य को रोककर उसकी चाल से अवगत हो उस सेना के सम्मुख अग्रसर होनेवाली सेना ही उत्तम सेना है।

७६८. संहारक हाथ तथा शौर्य के अभाव में भी सेना अपने आलंकारिक प्रदर्शन मात्र से प्रशंसा प्राप्त करती है।

७६९. क्षीणता, स्थाई घृणा एवं निर्धनता न हो तो सेना की विजय निश्चित है।

७७०. स्थाई वीर अनेक होने पर भी सेना का नायक न हो तो वह सेना ही नहीं हैं।

78. படைச் செருக்கு

771. என்னைமுன் நில்லன்மின் தெவ்விர் பலர்என்னை
முன்நின்று கல்நின் றவர்.

772. கான முயல்எய்த அம்பினில யானை
பிழைததவேல் ஏந்தல் இனிது.

773. பேராண்மை என்ப தறுகண்ஒன்று உற்றககால்
ஊராண்மை மற்றுஅதன் எஃகு.

774. கைவேல் களிற்றொடு போக்கி வருபவன்
மெய்வேல் பறியா நகும்.

775. விழித்தகண் வேல்கொணடு எறிய அழித்துஇமைப்பின்
ஓட்டன்றோ வன்க ணவாக்கு.

776. விழுப்புண் படாதநாள் எல்லாம் வழுக்கினுள்
வைககும்தன் நாளை எடுத்து.

777. சுழலும் இசைவேணடி வேண்டா உயிரார்
கழல்யாப்புக காரிகை நீாத்து.

778. உறின்உயிா அஞ்சா மறவர் இறைவன்
செறினும்சீா குன்றல இலர்

779. இழைத்தது இகவாமைச் சாவாரை யாரே
பிழைதததது ஒறுககிற பவர்.

780. புரநதார்கண் நீர்மலகச சாகிறபின் சாககாடு
இரநதுகோள தக்கது உடைதது.

७८. सैन्य-शौर्य

७७१. मेरे सेनापति के सम्मुख न डटो ; उनके सम्मुख डट कर अनेक पत्थर बन चुके हैं ।

७७२. जंगली ख़रगोश पर अचूक बाण प्रहार करने की अपेक्षा हाथी पर चूकते हुए भी भाला प्रयोग करना श्रेयस्कर है ।

७७३. शत्रु पर की गयी निर्दयता को महान पौरुष कहते हैं । उन पर कोई दु:ख आ पड़ने पर उनकी सहायता करना उस पौरुष की प्रखरता है ।

७७४. (विकट युद्ध के समय) अपने हाथ के भाले को हाथी पर प्रहार करके लौटनेवाला वीर (शत्रु पर प्रहार करने के लिए) अपनी छाती पर चुभे हुए भाले को प्राप्त करके प्रसन्न होता है ।

७७५. शत्रु को सरोष देखते हुए (निर्निमेष) नेत्र उसके शूल प्रयोग पर बन्द होते हुए झपकें तो, क्या वह शूरवीर की हार नहीं है ?

७७६. (वीर अपने गत दिवसों की गणना करते हुए) जिन दिनों में शरीर पर बड़े घाव न लगे हों, उन्हें व्यर्थ मानकर हटाकर रख देता है ।

७७७. स्थाई विशद प्रशंसा के निमित्त जीवन को तुच्छ माननेवाले योद्धा के पैर में कड़े आभूषण सदृश हैं ।

७७८. प्राण त्याग से निर्भीक योद्धा सम्राट् के क्रुद्ध होने पर भी अपनी वीर प्रतिष्ठा में कमी न आने देंगे ।

७७९. प्रतिज्ञात कर्म को पूर्णत: करके (आवश्यकता हो तो) मरण के लिए भी प्रस्तुत रहनेवाले वीर के दोषों का विचार कौन करता है ?

७८०. अपने सम्राट् के नेत्रों में भी अश्रु लानेवाली मृत्यु प्राप्त हो तो वह मृत्यु वस्तुत: मर कर भी प्राप्त करने योग्य है ।

6. நட்பியல்

79. நட்பு

781. செயற்குஅரிய யாவுள நட்பின் அதுபோல
வினைக்குஅரிய யாவுள காப்பு.

782. நிறைநீர நீரவர் கேண்மை பிறைமதிப்
பின்நீர பேதையார் நட்பு.

783. நவில்தொறும் நூல்நயம் போலும் பயில்தொறும்
பண்புடை யாளர் தொடர்பு.

784. நகுதற் பொருட்டன்று நட்டல் மிகுதிக்கண்
மேற்சென்று இடித்தற் பொருட்டு.

785. புணர்ச்சி பழகுதல் வேண்டா உணர்ச்சிதான்
நட்பாம் கிழமை தரும்.

786. முகம்நக நட்பது நட்புஅன்று நெஞ்சத்து
அகம்நக நட்பது நட்பு.

787. அழிவி னவைநீக்கி ஆறுஉய்த்து அழிவின்கண்
அல்லல் உழப்பதாம் நட்பு

788. உடுக்கை இழந்தவன் கைபோல ஆங்கே
இடுக்கண் களைவதாம் நட்பு.

789. நட்பிற்கு வீற்றிருக்கை யாதெனின் கொட்புஇன்றி
ஒல்லும்வாய் ஊன்றும் நிலை.

790. இனையர் இவர்எமக்கு இன்னம்யாம் என்று
புனையினும் புல்லென்னும் நட்பு.

६. मैत्री

७९. मित्रता

७८१. मित्रता के समान अद्भुत कर्म कौन-सा है, और उसके समान कर्म का अनुपम रक्षक भी कौन है?

७८२. बुद्धिमानों की मित्रता बढ़ते हुए बालचन्द्र के समान, तथा मूर्खों की मित्रता घटते हुए पूर्णचन्द्र के समान होता है।

७८३. अधिकाधिक अध्ययन के साथ जिस प्रकार काव्य-सौष्ठव के रसाद्बोधन में वृद्धि होती जाती है, उसी प्रकार अधिकाधिक सम्पर्क में आने पर सज्जनों की मित्रता भी अधिक आनन्दप्रद होती जाती है।

७८४. मित्रता का उद्देश्य हँस कर आनन्दित होने के लिए नहीं, अपितु सीमोल्लंघन होने पर आगे बढ़कर डाँटने के लिए है।

७८५. सम्बन्ध व सम्पर्क नहीं, अपितु भावावेग ही मित्रता का अधिकार प्रदान करता है।

७८६. मुख को ही हँसानेवाली मित्रता कोई मित्रता नहीं है; हृदय को आनंदित करनेवाली मित्रता ही मित्रता है।

७८७. (मित्र के) विनाशकारी तत्त्वों को हटाकर अच्छे मार्ग में लाते हुए, विनाश काल में उसके साथ दुखित होना ही मित्रता है।

७८८. (ओढ़े हुए) वस्त्र के खुलने पर हाथ के तुरन्त वहाँ पहुँचने के समान मित्र के दुःख का तुरन्त निवारण करना मित्रता है।

७८९. मित्रता की महत् अवस्था है कभी विलग न होना, और यथासम्भव सहायता करते रहना।

७९०. 'मेरे ये मित्र ऐसे सहायक हैं और हम उनके ऐसे हैं'—इस प्रकार यदि गौरवान्वित करते हुए कह भी डाला तो मित्रता की महिमा मन्द पड़ जाती है।

80. நட்பாராய்தல்

791. நாடாது நட்டலின் கேடுஇல்லை நட்டபின்
வீடுஇல்லை நட்புஆள் பவர்க்கு.

792. ஆய்ந்துஆய்ந்து கொள்ளாதான் கேண்மை கடைமுறை
தான்சாம் துயரம் தரும்

793, குணனும் குடிமையும் குற்றமும் குன்றா
இனனும் அறிந்தியாக்க நட்பு.

794 குடிப்பிறந்து தன்கண் பழிநாணு வானைக்
கொடுத்தும் கொளல்வேண்டும் நட்பு.

795. அழச்சொல்லி அல்லது இடித்து வழக்குஅறிய
வல்லார்நட்பு ஆய்ந்து கொளல்.

796. கேட்டினும் உண்டுஓர் உறுதி கிளைஞரை
நீட்டி அளப்பதோர் கோல்.

797. ஊதியம் என்பது ஒருவற்குப் பேதையார்
கேண்மை ஒரீஇ விடல்.

798. உள்ளற்க உள்ளம் சிறுகுவ கொள்ளற்க
அல்லற்கண் ஆற்றுஅறுப்பார் நட்பு.

799. கெடுங்காலைக் கைவிடுவார் கேண்மை அடுங்காலை
உள்ளினும் உள்ளம் சுடும்.

800. மருவுக மாசற்றார் கேண்மைஒன்று ஈத்தும்
ஒருவுக ஒப்பிலார் நட்பு.

८०. मित्रता का विवेचन

७९१. मित्र बनने के पश्चात् स्नेहपूर्ण व्यक्ति के लिए स्वतन्त्रता नहीं रहती। अतः विवेचन के बिना मित्र बनने से बुरा और कुछ नहीं है।

७९२. पूर्ण विवेचन के बिना मित्रता स्थापित करना अन्त में मृत्यु की ही कारण-भूत बाधा उपस्थित करेगा।

७९३. गुण, वंश, दोष, तथा स्थाई बन्धुओं के स्वभाव को समझकर मित्रता करनी चाहिए।

७९४. जिसने उच्च कुल में जन्म लिया हो, और जो अपने दोषों पर लज्जित होता हो उसके साथ धन देकर भी मित्रता कर लेनी चाहिए।

७९५. (आवश्यकता पड़ने पर) रुलाकर अथवा डाँट-डपटकर लोक-रीति का ज्ञान करानेवाले व्यक्ति की मित्रता को सद्-विवेचन से सदा ग्रहण करो।

७९६. विनाश में भी एक प्रयोजन निहित है। वह मित्र के स्वभाव की विशालता का माप-दण्ड है।

७९७. मूर्ख की मित्रता छोड़ उससे पृथक होना मनुष्य के लिए विशिष्ट आय है।

७९८. उत्साह को विदीर्ण करनेवाले कर्मों का विचार न करो। और विषम परिस्थिति में साथ छोड़ बैठनेवाले की मित्रता से दूर रहो।

७९९. पतन के समय साथ छोड़ बैठनेवाले की मित्रता का मृत्यु-काल में स्मरण आने पर हृदय तप्त हो उठेगा।

८००. निर्मल स्वभाववाले व्यक्ति की मित्रता प्राप्त करो। कुछ देकर ही सही, असम्बद्ध व्यक्ति की मित्रता को छोड़ो।

81. பழைமை

801. பழைமை எனப்படுவது யாதுஎனின் யாதும்
கிழமையைக கீழ்ந்திடா நட்பு.

802. நட்பிறகு உறுப்புக கெழுதகைமை மற்றுஅதற்கு
உப்பாதல் சான்றோ கடன்.

803. பழகிய நட்புஎவன் செய்யும் கெழுதகைமை
செயதாங்கு அமையாக் கடை.

804. விழைதகையான் வேண்டி இருப்பர் கெழுதகையான்
கேளாது நட்டார செயின்.

805. பேதைமை ஒன்றோ பெருங்கிழமை என்றுஉணர்க
நோதக்க நட்டார செயின்.

806. எல்லைக்கண் நின்றா துறவார் தொலைவிடத்தும
தொல்லைக்கண் நின்றார் தொடர்பு.

807. அழிவந்த செய்யினும் அன்புஅறா அன்பின்
வழிவநத கேண்மை யவர்.

808. கேள்இழுககம் கேளாக் கெழுதகைமை வல்லாரக்கு
நாளஇழுக்கம் நடடார் செயின்.

809. கெடாஅ வழிவநத கேண்மையார கேண்மை
விடாஅர விழையும உலகு.

810. விழையார விழையப படுப பழையார்கண்
பண்பின் தலைப்பிரியா தார.

८१. चिर-परिचय

८०१. चिर-परिचय उसे कहते हैं कि जो साधिकार किये हुए किसी कर्म को नीचे न गिरा कर स्वीकार करनेवाली मित्रता हो ।

८०२. मित्रता का लक्षण है अधिकारयुक्त कर्म । उसको स्वीकार करना बुद्धिमान का कर्त्तव्य है ।

८०३. चिर-परिचित मित्रता से क्या प्रयोजन यदि (मित्र के) अधिकारपूर्ण किये हुए कर्म को स्वयं किया हुआ जैसा न माना ?

८०४. विना पूछे मित्र साधिकार कोई काम करे तो उसे अपनी इच्छा के अनुकूल किया हुआ मानकर स्वीकार कर लेंगे ।

८०५. मित्र कोई दुःखप्रद कर्म कर बैठे तो उसका कारण अज्ञान अथवा विशिष्ट अधिकार समझें ।

८०६. (अधिकारपूर्ण मित्रता की) सीमा में स्थिर रहनेवाली विषम परिस्थिति में भी चिर-परिचित स्थाई सम्बन्ध को न छोड़ेंगे ।

८०७ स्नेह की परम्परा से युक्त मित्रतावाले व्यक्ति अपने मित्र द्वारा किसी दुःखप्रद कर्म के बन पड़ने पर उससे स्नेहच्युत न होंगे ।

८०८. अनन्य मित्र के दोष को न सुननेवाले अधिकारपूर्ण व्यक्ति के लिए, उसका मित्र किसी दिन कोई दोष कर बैठे तो वह दिन सप्रयोजन हो होगा ।

८०९. अधिकारपूर्ण चिर-परिचित मित्र की मित्रता को न छोड़नेवाले की प्रशंसा संसार में बढ़ेगी ।

८१०. शत्रु भी उसको चाहेंगे जो चिर-परिचित मित्र से (उनके दोषों पर भी) अपने सदाचरण के आधार पर कभी पृथक नहीं होते ।

82. தீ நட்பு

811. பருகுவார் போலினும் பண்புஇலார் கேண்மை
பெருகலின் குன்றல் இனிது.

812. உறின்நட்டு அறின்ஒரூஉம் ஒப்புஇலார் கேண்மை
பெறினும் இழப்பினும என்.

813. உறுவது சீர்தூககும் நட்பும் பெறுவது
கொள்வாரும் கள்வரும் நேர்.

814. அமரகத்து ஆற்றுஅறுக்கும் கல்லாமா அன்னார்
தமரின் தனிமை தலை.

815. செய்துஏமம் சாராச் சிறியவா புன்கேண்மை
எய்தலின் எய்தாமை நன்று.

816. பேதை பெருங்கெழீஇ நட்பின் அறிவுடையார்
ஏதின்மை கோடி உறும்.

817. நகைவகையர் ஆகிய நட்பின் பகைவரால
பத்துஅடுத்த கோடி உறும்.

818. ஒல்லும் கருமம் உடற்று பவர்கேண்மை
சொல்லாடார் சோர விடல்.

819. கனவினும் இன்னாது மன்னோ வினைவேறு
சொல்வேறு பட்டார் தொடர்பு.

820. எனைததும் குறுகுதல் ஓம்பல் மனைகெழீஇ
மன்றில் பழிப்பார் தொடர்பு.

८२. निकृष्ट मित्रता

८११. प्रेममग्न-सा प्रतीत होने पर भी असभ्य व्यक्ति की मित्रता का घनिष्ट होने से शिथिल पड़ना रुचिकर होता है।

८१२. अपना कुछ बनते समय मित्र होकर, अन्यथा बिछुड़ जानेवाली असम्बद्ध मित्रता की प्राप्ति से क्या लाभ, और टूट जाने से क्या हानि?

८१३. स्वलाभ को मापनेवाले मित्र, धनाश्रित वेश्याएँ और लुटेरे समान हैं।

८१४. युद्ध-क्षेत्र में योद्धा को गिराकर भाग जानेवाले मूढ़ अश्व जैसे व्यक्ति की मित्रता की अपेक्षा एकाकी रहना श्रेयस्कर है।

८१५. रक्षा करने पर भी रक्षित न रहनेवाले तुच्छ व्यक्तियों की निकृष्ट मैत्री का होने से न होना अच्छा है।

८१६. मूढ़ की अति अनिष्ठ मैत्री की अपेक्षा बुद्धिमान की शत्रुता करोड़ गुना लाभदायक है।

८१७. वाह्यतः हँसमुख रहनेवाले की मित्रता की अपेक्षा शत्रुओं की घृणा दस करोड़ गुना लाभदायक है।

८१८. सम्भव कर्म को भी असम्भव बना डालनेवालों की मित्रता को विना उनसे कहे ही शिथिल पड़ने दो।

८१९. करनी कुछ और कथन कुछ होनेवाले का सम्बन्ध स्वप्न में भी नहीं रुचेगा।

८२०. घर में अकेले में मित्रता प्रकट करके भरी सभा में निन्दा करनेवाले का सम्पर्क तनिक भी न रहने दो।

83. கூடா நட்பு

821. சீரிடம் காணின் எறிதற்குப் பட்டடை
நேரா நிரந்தவர் நட்பு.

822. இனம்போன்று இனமல்லார் கேண்மை மகளிர்
மனம்போல வேறு படும்.

823. பலநல்ல கற்றக் கடைத்தும் மனம்நல்லர்
ஆகுதல் மாணார்க்கு அரிது.

824. முகத்தின் இனிய நகாஅ அகத்துஇன்னா
வஞ்சரை அஞ்சப் படும்

825. மனத்தின் அமையா தவரை எனைத்துஒன்றும்
சொல்லினால் தேறற்பாற்று அன்று.

826. நட்டார்போல் நல்லவை சொல்லினும் ஒட்டார்சொல்
ஒல்லை உணரப் படும்.

827. சொல்வணக்கம் ஒன்னார்கண் கொள்ளற்க வில்வணக்கம்
தீங்கு குறித்தமை யான்.

828. தொழுதகை உள்ளும் படைஒடுங்கும் ஒன்னார்
அழுதகண் ணீரும் அனைத்து.

829. மிகச்செய்து தம்எள்ளு வாரை நகச்செய்து
நட்பினுள் சாப்புல்லற் பாற்று.

830. பகைநட்பாம் காலம் வருங்கால் முகம்நட்டு
அகநட்பு ஒரீஇ விடல்

८३. झूठी मित्रता

८२१. हृदय से दूरस्थ पर वाह्यतः अभिन्न मैत्री अनुकूल अवसर पर आघात करने के लिए निहाई है।

८२२. वाह्यतः वन्धु बने रह कर हृदय से जो वन्धु नहीं होते उनकी मित्रता वेश्याओं के मन के समान अस्थिर होती है।

८२३. अनेक सद्ग्रन्थों के अध्ययन पर भी सुन्दर मन से युक्त होना शत्रु-स्वभाववालों के लिए असम्भव होता है।

८२४. मुख पर मधुर हास्य सहित रह कर मन में वंचना से युक्त रहनेवाले व्यक्तियों से सतर्क रहना चाहिए।

८२५. जिससे मन न मिले उसके शव्दों को मान कर किसी भी विषय पर विश्वास न लाना चाहिए।

८२६. मित्र के समान (लाभप्रद व) अच्छे विपयों को कहने पर भी शत्रुओं के वचन तुरन्त पकड़े जायेंगे।

८२७. धनुष का झुकाव विघ्न-सूचक होने के कारण विरोधियों के विनम्र शव्दों के वश में न पड़ो।

८२८. शत्रु के विनय-सम्पन्न कर में शस्त्र छिपा रह सकता है, और उसी प्रकार उसके रुदन के अश्रु भी होते हैं।

८२९. वाह्यतः अति मैत्री अभिव्यक्त करके हृदय में निन्दा का भाव रखने वालों को हँसा कर अपना सम्वन्ध उनके साथ रहकर ही समाप्त कर डालो।

८३०. शत्रु के मित्र वनाने का समय आवे तो हृदय रहित मुख-मैत्री रख कर (पुनः) उसे भी तजो।

84. பேதைமை

831. பேதைமை என்பதுஒன்று யாதெனின் ஏதங்கொண்டு
ஊதியம் போக விடல்.

832. பேதைமையுள் எல்லாம் பேதைமை காதன்மை
கையல்ல தன்கண் செயல்.

833. நாணாமை நாடாமை நாரின்மை யாதொன்றும்
பேணாமை பேதை தொழில.

834 ஓதி உணர்ந்தும் பிறர்க்குஉரைத்தும் தான்அடங்காப்
பேதையின் பேதையார் இல்.

835. ஒருமைச் செயலாற்றும் பேதை எழுமையும்
தான்புக்கு அழுந்தும் அளறு.

836. பொய்படும் ஒன்றோ புனைபூணும் கையறியாப்
பேதை வினைமேல் கொளின்.

837. ஏதிலார் ஆரத் தமர்பசிப்பர் பேதை
பெருஞ்செல்வம் உற்றக் கடை.

838. மையல் ஒருவன் களித்தற்றால் பேதைதன்
கைஒன்று உடைமை பெறின்.

839. பெரிதுஇனிது பேதையார் கேண்மை பிரிவின்கண்
பீழை தருவதுஒன்று இல்.

840. கழாஅக்கால் பள்ளியுள் வைத்தற்றால் சான்றோர்
குழாஅத்துப் பேதை புகல்.

८४. मूढ़ता

८३१. मूढ़ता एक वह (दुर्गण) है जो हानिप्रद को ग्रहण करके लाभप्रद को छोड़ बैठता है।

८३२. मूढ़ताओं में सब से बड़ी मूढ़ता है सदाचरण के प्रतिकूल कर्म की अभिलाषा करना।

८३३. निर्लज्जता, लापरवाही, निर्दयता, किसी को साध कर न रखना— ये हैं मूढ़ के व्यवहार।

८३४. अध्ययन, मनन एवं अध्यापन के पश्चात् भी स्वयं उसके अनुकूल आचरण न बरतनेवाले मूढ़ के समान और कोई मूढ़ नहीं होता।

८३५. मूढ़ एक ही जन्म में सात जन्मों की नरक वेदना का अधिकार अपने लिए सृजन कर लेने की क्षमता रखता है।

८३६. सदाचरण को न जाननेवाला मूढ़ यदि किसी कर्म को उठावेगा तो वह अपूर्ण ही रह जायगा, अन्यथा उसके हाथों में बेड़ी चढ़ेगी।

८३७ मूढ़ को अधिक सम्पत्ति प्राप्त हो तो उसके अपने तो भूखे रहेंगे और दूसरे लाभान्वित होंगे।

८३८. मूढ़ के हाथों कोई वस्तु लगे तो उसकी अवस्था उसके समान होगी जो पीकर मस्ती में रहता है।

८३९. मूढ़ के साथ मित्रता बड़ी मधुर होती है। वह टूटने पर कोई दुःख नहीं देती।

८४०. मल लगे पैर को धोये बिना शयन पर रखने के समान होता है बुद्धिमानों के संघ में मूढ़ का प्रवेश।

85. புல்லறிவாண்மை

841. அறிவுஇன்மை இன்மையுள் இன்மை பிறிதுஇன்மை
இன்மையா வையாது உலகு.

842 அறிவிலான் நெஞ்சுஉவந்து ஈதல் பிறிதுயாதும்
இல்லை பெறுவான் தவம்.

843. அறிவிலார் தாம்தம்மைப் பீழிக்கும் பீழை
செறுவார்க்கும் செய்தல் அரிது.

844. வெண்மை எனப்படுவது யாதுஎனின் ஒண்மை
உடையம்யாம் என்னும் செருக்கு.

845. கல்லாத மேற்கொண்டு ஒழுகல் கசடுஅற
வல்லதூஉம் ஐயம் தரும.

846. அற்றம் மறைத்தலோ புலலறிவு தம்வயின்
குற்றம் மறையா வழி.

847. அருமறை சோரும் அறிவிலான் செய்யும்
பெருமிறை தானே தனக்கு.

848. ஏவவும் செய்கலான் தான்தேறான் அவ்வுயிர்
போஒம் அளவும்ஓர் நோய்.

849. காணாதான் காட்டுவான் தான்காணான் காணாதான்
கண்டானாம் தான்கண்ட வாறு.

850. உலகத்தார் உண்டுஎன்பது இல்என்பான் வையத்து
அலகையா வைக்கப் படும்.

८५. अहंकारयुक्त तुच्छ बुद्धि

८४१. अभावों में अभाव है बुद्धि का अभाव। दूसरे अभावों को संसार अभाव नहीं मानता।

८४२. बुद्धिहीन के प्रसन्न मन से कुछ देने का कारण और कुछ नहीं है। प्राप्त करनेवाले का सौभाग्य ही है।

८४३. बुद्धिहीन स्वयं बाधा-स्वरूप होकर अपने लिए जितनी हानि पहुँचाता है उतनी शत्रु भी उसे नहीं पहुँचा सकते।

८४४. बुद्धिहीनता कहते हैं उस निश्चितता को जो इस भावना से उत्पन्न होती है कि हम बुद्धिमान हैं।

८४५. जिसका अध्ययन न हो उस पर अपना अधिकार व्यक्त करना उसके खूब अध्ययन किये हुए विषयों पर भी दूसरों में सन्देह उत्पन्न करेगा।

८४६ अपने दोषों को छिपा न पाने पर (वस्त्र से) उन्हें छिपाने का प्रयत्न करना ही, क्या बुद्धिहीनता है?

८४७. अति रहस्यपूर्ण विषयों की रक्षा किये बिना उन्हें व्यक्त कर डालनेवाला बुद्धिहीन अपने लिए स्वयं अत्यधिक हानि उत्पन्न कर लेगा।

८४८. जो समझाने पर भी न करे और स्वयं भी न समझे वह प्राण विसर्जन तक एक व्याधि ही बना रहेगा।

८४९. बुद्धिहीन को समझानेवाला स्वयं नहीं समझ पावेगा। बुद्धिहीन अपनी बुद्धि के अनुसार ही समझेगा।

८५०. लोग जिसे उपस्थित कहते हैं उसे अनुपस्थित कहनेवाला संसार में प्रेत समझा जायगा।

86. இகல்

851. இகல்என்ப எல்லா உயிர்க்கும் பகல்என்னும்
பண்புஇன்மை பாரிக்கும் நோய்.

852. பகல்கருதிப் பற்றா செயினும் இகல்கருதி
இன்னாசெய் யாமை தலை.

853. இகல்என்னும் எவ்வநோய் நீக்கின் தவல்இல்லாத்
தாவில் விளக்கம் தரும்.

854. இன்பத்துள் இன்பம் பயக்கும் இகல்என்னும்
துன்பத்துள் துன்பம் கெடின்.

855. இகல்எதிர் சாய்ந்துஒழுக வல்லாரை யாரே
மிகல்ஊக்கும் தன்மை யவர்.

856. இகலின் மிகல்இனிது என்பவன் வாழ்க்கை
தவலும் கெடலும் நணித்து.

857. மிகல்மேவல் மெய்ப்பொருள் காணார் இகல்மேவல்
இன்னா அறிவி னவர்.

858. இகலிற்கு எதிர்சாய்தல் ஆக்கம் அதனை
மிகல்ஊக்கின் ஊக்குமாம் கேடு

859. இகல்காணான் ஆக்கம் வருங்கால் அதனை
மிகல்காணும் கேடு தரற்கு.

860 இகலான்ஆம் இன்னாத எல்லாம் நகலான்ஆம்
நன்னயம் என்னும் செருக்கு.

८६. विरोध

८५१. सभी जीवों में बैर भाव के दुराचरण की वृद्धि करनेवाले ज्वर को विरोध कहते हैं।

८५२. सहमत न होने के फलस्वरूप किसी के अनिष्ट करने पर भी, विरोध के कारण उसे दुखित न करो।

८५३. विरोध नामक दुखद ज्वर को हटा दें तो वह अमिट व निर्दोष यश प्रदान करेगा।

८५४. दुखों में (सब से भयंकर) विरोध नामक दुःख का नाश हो जाय तो सुखों में (सब से श्रेष्ठ) सुख की प्राप्ति होगी।

८५५. विरोध के प्रभाव से हटकर कर्म करने की शक्ति जिसमें हो, उस पर विजय प्राप्त करने की शक्ति किस में हो सकती है?

८५६. विरोध की जीत को मधुर माननेवालों का जीवन शीघ्र ही सदोष व नाशमान होगा।

८५७. विरोध से युक्त दुर्बुद्धिवाले व्यक्ति को वृद्धि-सम्पन्न तत्वार्थ के दर्शन असम्भव हैं।

८५८. विरोध के सामने से हटना ही विकासप्रद होता है, और उसी को बढ़ाते गये तो नाश विकसित होता जाता है।

८५९. वृद्धि का समय आवे तो व्यक्ति विरोध को नहीं देखता; पतनोन्मुख करने के लिए उसी का बढ़ा हुआ रूप उसे दृष्टिगोचर हो जाता है।

८६०. विरोध से सभी दुःख आ पड़ते हैं; सौहार्द से शुभ नीति नामक सम्पत्ति की सम्प्राप्ति होती है।

87. பகைமாட்சி

861. வலியார்க்கு மாறுஏற்றல் ஓம்புக ஓம்பா
மெலியார்மேல் மேக பகை

862. அன்பிலன் ஆன்ற துணையிலன் தான்துவ்வான்
என்பரியும் ஏதிலான் துப்பு.

863. அஞ்சும் அறியான் அமைவுஇலன் ஈகலான்
தஞ்சம் எளியன் பகைக்கு

864. நீங்கான் வெகுளி நிறையிலன் எஞ்ஞான்றும்
யாங்கணும் யார்க்கும் எளிது.

865. வழிநோக்கான் வாய்ப்பன செய்யான் பழிநோக்கான்
பண்பிலன் பற்றார்க்கு இனிது.

866. காணாச் சினத்தான் கழிபெருங் காமத்தான்
பேணாமை பேணப் படும்.

867. கொடுத்தும் கொளல்வேண்டும் மன்ற அடுத்துஇருந்து
மாணாத செய்வான் பகை

868. குணன்இலனாய்க் குற்றம் பலவாயின் மாற்றார்க்கு
இனன்இலனாம் ஏமாப்பு உடைத்து.

869. செறுவார்க்குச் சேண்இகவா இன்பம் அறிவுஇலா
அஞ்சும் பகைவர்ப் பெறின்.

870. கல்லான் வெகுளும் சிறுபொருள் எஞ்ஞான்றும்
ஒல்லானை ஒல்லாது ஒளி.

८७. शत्रुता की उग्रता

८६१. अपने से बलवान का सामना न करो; निर्बल पर शत्रुत निरन्तर बनाये रखो।

८६२. स्थाई आश्रय तथा निज बल से रहित स्नेहहीन व्यक्ति शत्रु के बल को कैसे मिटा सकता है?

८६३. डरपोक, बुद्धिहीन, असम्बद्ध तथा निर्दय व्यक्ति शत्रु के लिए निर्बल व अति साधारण होता है।

८६४. जो क्रोध को नहीं छोड़ता और मन में सन्तुलन नहीं रखता वह सभी काल, स्थान व व्यक्ति के लिए अति साधारण व सहज-सुलभ होता है।

८६५. सन्मार्ग को न देखनेवाला, अवसर पर कर्म न करनेवाला, दोष पर ध्यान न देनेवाला दुराचारी व्यक्ति शत्रुओं के लिए भला होता है।

८६६. बिना समझे क्रोधित होनेवाले अति तीव्र कामी की शत्रुता जान-बूझकर मोल लेनी चाहिए।

८६७. साथ रहकर असन्तुलित कार्य करनेवाले की शत्रुता कुछ देकर भी प्राप्त करनी चाहिए।

८६८. गुणहीन व अनेक दोषों से युक्त व्यक्ति शत्रु के लिए निराश्रय होता है, और यही स्थिति शत्रुओं के लिए सहायक भी होती है।

८६९. बुद्धिहीन व डरपोक शत्रु मिलें तो उनके शत्रुओं से श्रेष्ठ सुख दूर नहीं ठहरे रहेंगे।

८७०. अनपढ़ से शत्रुता उत्पन्न कर लेने की लघु क्षमता न होनेवाले के पास यश भी कभी नहीं पहुँचता।

88. பகைத்திறம் தெரிதல்

871. பகைஎன்னும் பண்புஇ லதனை ஒருவன்
நகையேயும் வேண்டற்பாற்று அன்று.

872. வில்லேர் உழவர் பகைகொளினும் கொள்ளற்க
சொல்லேர் உழவர் பகை.

873. ஏமுற் றவரினும் ஏழை தமியனாய்ப்
பல்லார் பகைகொள் பவன்.

874. பகைநட்பாக் கொண்டொழுகும் பண்புடை யாளன்
தகைமைக்கண் தங்கிற்று உலகு.

875. தன்துணை இன்றால் பகைஇரண்டால் தான்ஒருவன்
இன்துணையாக் கொள்கஅவற்றின் ஒன்று.

876. தேறினும் தேறா விடினும் அழிவின்கண்
தேறான் பகாஅன் விடல்.

877. நோவற்க நொந்தது அறியார்க்கு மேவற்க
மென்மை பகைவர் அகத்து.

878. வகைஅறிந்து தற்செய்து தற்காப்ப மாயும்
பகைவர்கண் பட்ட செருக்கு.

879. இளைதாக முள்மரம் கொல்க களையுநர்
கைகொல்லும் காழ்த்த இடத்து.

880. உயிர்ப்ப உளர்அல்லர் மன்ற செயிர்ப்பவர்
செம்மல் சிதைக்கலா தார்

८८. शत्रु बल का बोध

८७१. शत्रुता नामक असभ्य व्यवहार की इच्छा कोई हास्य में भी न करे।

८७२. धनुष रूपी हल से युक्त कृषक से भले ही शत्रुता कर ले, पर शब्द रूपी हल से युक्त कृषक (ज्ञानी व बुद्धिमान) से कभी शत्रुता न करे।

८७३. स्वयं अकेले ही अनेक व्यक्तियों की शत्रुता को मोल लेनेवाला विक्षिप्तों से भी मन्दबुद्धिवाला होता है।

८७४. शत्रुता को भी मित्रता में लाकर व्यवहार करनेवाले सभ्य व्यक्तियों की महानता पर संसार आधारित है।

८७५. जब अपना सहायक कोई न हो, शत्रु दो हों और स्वयं अकेले पड़ जाओ तो उन दो में से एक को अपना सहायक बना लो।

८७६. किसी शत्रु का पूर्ववत् बोध हो या न हो, पर विनाश के समय उससे न शत्रुता रक्खो और न मित्रता ही।

८७७. तुम्हारे दुःख जिसे ज्ञात न हों उससे उन्हें मत कहो, और न अपने शत्रु से अपनी निर्बलता।

८७८. नियमानुसार बल प्राप्त करके अपनी सुरक्षा कर ली जाय तो शत्रु के अहंकार का स्वतः नाश हो जायगा।

८७९. काँटेदार वृक्ष को छोटा रहते ही काट फेंको, अन्यथा वह बढ़ गया तो काटनेवाले के हाथ का ही अन्त कर देगा।

८८०. शत्रु के अहंकार को जो त्रस्त नही कर पाता, उसे जीवित रहने पर भी मृत ही समझो।

89. உட்பகை

881. நிழல்நீரும் இன்னாத இன்னா தமர்நீரும்
இன்னாவாம் இன்னா செயின்.

882. வாளபோல பகைவரை அஞ்சற்க அஞ்சுக
கேள்போல பகைவர் தொடாபு.

883. உள்பகை அஞ்சித்தற் காகக உலைவிடத்து
மண்பகையின் மாணத் தெறும்.

884. மனமாணா உள்பகை தோன்றின் இனமாணா
ஏதம் பலவும் தரும்.

885. உறல்முறையான் உட்பகை தோன்றின் இறல்முறையான்
ஏதம் பலவும் தரும.

886. ஒன்றாமை ஒன்றியார் கட்படின் எஞ்ஞான்றும்
பொன்றாமை ஒன்றல் அரிது.

887. செப்பின் புணர்ச்சிபோல் கூடினும் கூடாதே
உள்பகை உற்ற குடி.

888. அரம்பொருத பொன்போலத் தேயும் உரம்பொருது
உள்பகை உற்ற குடி.

889. எட்பகவு அன்ன சிறுமைத்தே ஆயினும்
உள்பகை உள்ளதாம் கேடு.

890. உடம்பாடு இலாதவர் வாழ்க்கை குடங்கருள்
பாம்பொடு உடன்உறைந் தற்று

८९. अन्तःवैर

८८१. छाया और जल भी हानिप्रद हो तो बुरे ही होते हैं। उसी प्रकार बन्धुओं के व्यवहार भी दुखद हों तो वे भी बुरे ही होंगे।

८८२. खड्ग जैसे (व्यक्त) शत्रु से न डरो, पर बन्धु जैसा होकर भी जो शत्रु हो उसके सम्पर्क से अवश्य डरो।

८८३. अन्तःवैर से सतर्क रहकर अपनी रक्षा करो, (अन्यथा) जरा सुस्त पड़ते समय मिट्टी के पात्र को काटनेवाले अस्त्र के समान (यह तुम्हारा) निस्सन्देह नाश करेगा।

८८४. अपरिवर्त्तनशील अन्तःवैर किसी में उत्पन्न हो जाय तो वह बन्धुओं का विनाश करनेवाले अनेकानेक दोषों का सृजन करेगा।

८८५. बन्धुत्व के साथ अन्तःवैर उत्पन्न हो गया तो वह मृत्युजनक अनेकानेक दोषों का सृजन करेगा।

८८६. शत्रुता किसी के अधीनस्थ व्यक्तियों में उत्पन्न हो जाय तो उसका स्थायित्व सदा के लिए असम्भव हो जाता है।

८८७. डब्बे और ढक्कन के मेल के समान संयुक्त रहने पर भी अन्तःवैर जिस कुटुम्ब में हो वह कभी एक होकर नही रह सकता।

८८८ अन्तःवैर जिस कुटुम्ब में हो वह रेती से घिसते जानेवाले लोहे के समान छीजता चला जायगा।

८८९. तिल के एक टुकड़े के समान छोटा होने पर भी अन्तःवैर नाशकारक होता है।

८९०. समरसता से रहित जीवन एक कुटी में सर्प के साथ रहने के समान होता है।

90. பெரியாரைப் பிழையாமை

891. ஆற்றுவார் ஆற்றல் இகழாமை போற்றுவார்
போற்றலுள் எல்லாம் தலை.

892. பெரியாரைப் பேணாது ஒழுகின் பெரியாரால்
பேரா இடும்பை தரும்.

893. கெடல்வேண்டின் கேளாது செய்க அடல்வேண்டின்
ஆற்று பவர்கண் இழுக்கு.

894. கூற்றத்தைக் கையால் விளித்தற்றால் ஆற்றுவார்க்கு
ஆற்றாதார் இன்னா செயல்.

895 யாண்டுச்சென்று யாண்டும் உளராகார் வெந்துப்பின்
வேந்து செறப்பட் டவர்.

896. எரியால் சுடப்படினும் உய்வுண்டாம் உய்யார்
பெரியார்ப் பிழைத்தொழுகு வார்.

897. வகைமாண்ட வாழ்க்கையும் வான்பொருளும் என்னும்
தகைமாண்ட தக்கார் செறின்.

898. குன்றன்னார் குன்ற மதிப்பின் குடியொடு
நின்றன்னார் மாய்வர் நிலத்து.

899. ஏந்திய கொள்கையார் சீறின் இடைமுரிந்து
வேந்தனும் வேந்து கெடும்.

900. இறந்துஅமைந்த சார்புடையர் ஆயினும் உய்யார்
சிறந்துஅமைந்த சீரார் செறின்.

९०. बड़ों का अपमान न करना

८९१. कर्मठ की कार्यतत्परता की निन्दा न करना सब विघ्नों से अपनी रक्षा चाहनेवाले का सर्वश्रेष्ठ बचाव है।

८९२. बड़ों का सम्मान न करना उन्हीं बड़ों के द्वारा अत्यधिक हानि उत्पन्न करेगा।

८९३. जो अपना नाश चाहे वह, बिना पूछे, उनसे विरोध उत्पन्न कर ले जो तुल जाने पर किसी का नाश करके ही छोड़ते हैं।

८९४. शक्तिमान को शक्तिहीन का हानि पहुँचाना अपने हाथों यम को आवाहन करना है।

८९५. महान सम्राट् से कटु विरोध मोल लेकर कोई चाहे कहीं चला जाय, उसकी रक्षा नहीं हो सकती।

८९६. आग से जलने पर भी कोई बच सकता है, परन्तु बड़ों का अपमान करनेवाले का कहीं कोई बचाव नहीं है।

८९७. यदि कोई गुण-सम्पन्न व्यक्ति का क्रोध-भाजन हो गया तो विविध ऐश्वर्यों से युक्त जीवन एवं अत्यधिक धन से उसे क्या लाभ?

८९८. पर्वत सदृश व्यक्ति यदि किसी का नाश चाहेंगे तो स्थिर जीवन व्यतीत करनेवाले भी सकुटुम्ब नष्ट हो जायेंगे।

८९९. श्रेष्ठ सिद्धान्तों के व्यक्ति क्रोधित हुए तो सम्राट् भी बीच से टूट कर राज्य-नाश को प्राप्त होगा।

९००. यदि श्रेष्ठ तपस्वी किसी पर रुष्ट हो गये तो अति विशिष्ट सहायता प्राप्त व्यक्ति भी बच नहीं सकता।

91. பெண்வழிச் சேறல்

901. மனைவிழைவார் மாண்பயன் எய்தார் வினைவிழைவார்
வேண்டாப் பொருளும் அது.

902. பேணாது பெண்விழைவான் ஆக்கம் பெரியதோர்
நாணாக நாணுத் தரும்.

903. இல்லாள்கண் தாழ்ந்த இயல்புஇன்மை எஞ்ஞான்றும்
நல்லாருள் நாணுத் தரும்.

904. மனையாளை அஞ்சும் மறுமைஇ லாளன்
வினைஆண்மை வீறுஎய்தல் இன்று.

905. இல்லாளை அஞ்சுவான் அஞ்சுமற்று எஞ்ஞான்றும்
நல்லார்க்கு நல்ல செயல்.

906. இமையாரின் வாழினும் பாடுஇலரே இல்லாள்
அமையார்தோள் அஞ்சு பவர்.

907. பெண்ஏவல் செய்தொழுகும் ஆண்மையின் நாண்உடைப்
பெண்ணே பெருமை உடைத்து.

908. நட்டார் குறைமுடியார் நன்றுஆற்றார் நல்நுதலாள்
பெட்டாங்கு ஒழுகு பவர்.

909. அறவினையும் ஆன்ற பொருளும் பிறவினையும்
பெண்ஏவல் செய்வார்கண் இல்

910. எண்சேர்ந்த நெஞ்சத்து இடன்உடையார்க்கு எஞ்ஞான்றும்
பெண்சேர்ந்தாம் பேதைமை இல்.

९१. स्त्री का अनुसरण करना

९०१. पत्नी के वचनों पर चलनेवाले (जीवन के) विशिष्ट लाभ प्राप्त न करेंगे। यह (अर्थात् पत्नी के वचनों पर चलना) वही वस्तु है जिसे कर्त्तव्य-प्रेमी पसन्द नहीं करता।

९०२. कर्त्तव्यच्युत होकर स्त्री के वचनों पर चलनेवाले की समृद्धि अत्यधिक लज्जास्पद हो उसे लज्जान्वित कर देगी।

९०३. गृहिणी से दबकर रहने की प्रकृति सज्जनों के बीच सदा लज्जाप्रद सिद्ध होगी।

९०४. पत्नी से भयभीत, मुक्ति के अनधिकारी व्यक्ति के पौरुषपूर्ण कार्य कभी श्रेष्ठ सिद्ध नहीं होंगे।

९०५. गृहिणी से भयभीत व्यक्ति सज्जनों के लिए शुभ कार्य करते सदा डरेगा।

९०६. अपलक नेत्रवालों (अर्थात् देवताओं) के समान जीने पर भी वे लोग जो गृहिणी की बाँस जैसी बाँहों (के आलिंगन) से डरते हैं, सम्मानित नहीं होंगे।

९०७. स्त्री की आज्ञा के अनुसार कर्म करनेवाले पुरुष की अपेक्षा लज्जावती स्त्री ही श्रेष्ठ है।

९०८. सुन्दर ललाटवाली स्त्री की इच्छा के ही अनुसार चलनेवाले न तो मित्रों की कमियों की पूर्ति कर सकते हैं, न और कुछ भला ही कर सकते हैं।

९०९. धर्मोक्त कर्म, अत्यधिक धन तथा अन्यान्य (शुभ) कर्म स्त्री के आज्ञा-पालकों में नहीं होते।

९१०. विचारशील दृढ़-हृदय व्यक्ति में कभी स्त्री के अनुचर बनने का अज्ञान नहीं हो सकता।

92. வரைவின்மகளிர்

911. அன்பின் விழையார் பொருள்விழையும் ஆய்தொடியார்
இன்சொல் இழுக்குத் தரும்.

912. பயன்தூக்கிப் பண்புஉரைக்கும் பண்புஇல் மகளிர்
நயன்தூக்கி நள்ளா விடல்.

913. பொருட்பெண்டிர் பொய்ம்மை முயக்கம் இருட்டறையில்
ஏதில பிணந்தழீஇ யற்று.

914. பொருட்பொருளார் புன்னலம் தோயார் அருட்பொருள்
ஆயும் அறிவி னவர்.

915. பொதுநலத்தார் புன்னலம் தோயார் மதிநலத்தின்
மாண்ட அறிவி னவர்.

916. தந்நலம் பாரிப்பார் தோயார் தகைசெருக்கிப்
புன்னலம் பாரிப்பார் தோள்.

917. நிறைநெஞ்சம் இல்லவர் தோய்வர் பிறநெஞ்சில்
பேணிப் புணர்பவர் தோள்.

918. ஆயும் அறிவினர் அல்லார்க்கு அணங்குஎன்ப
மாய மகளிர் முயக்கு.

919. வரைவுஇலா மாணிழையார் மென்தோள் புரையிலாப்
பூரியர்கள் ஆழும் அளறு.

920. இருமனப் பெண்டிரும் கள்ளும் கவறும்
திருநீக்கப் பட்டார் தொடர்பு.

९२. बिकाऊ स्त्री (वेश्या)

९११. प्रेम की इच्छा न रखकर धन की इच्छा रखनेवाली चतुर स्त्रियों के मधुर बोल अन्त में दुखद ही होते हैं।

९१२. स्वलाभ को तौल कर मीठा बोलनेवाली आचरणहीन स्त्री से सोच-समझ कर अलग ही रहना चाहिए।

९१३. धन-लोलुप स्त्रियों का झूठा आलिंगन अँधेरे कमरे में अपरिचित शव के आलिंगन के समान ही होता है।

९१४. केवल धन (रुपये-पैसे) को धन माननेवाली स्त्रियों के तुच्छ सौन्दर्य का स्पर्श कर्मों की पवित्रता के ज्ञाता कदापि न करेंगे।

९१५. ज्ञान-सम्पन्न विशिष्ट बुद्धिमान सामान्य स्त्री के तुच्छ सौन्दय का स्पर्श न करेंगे।

९१६. अपने शुभ की रक्षा करनेवाले नृत्य-गान के अहंकार से युक्त तुच्छ सौन्दर्य की रक्षा में लीन वेश्याओं के कन्धों का आलिंगन कभी न करेंगे।

९१७. जो दृढ़ हृदय नहीं होते वे ही उन स्त्रियों का आलिंगन करेंगे जो दूसरों का प्रेम हृदय में रखकर शरीर सुख प्राप्त करती हैं।

९१८. मायाविनी स्त्रियों का सम्भोग उनके लिए मोहिनी का जाल माना जाता है जिनमें विवेचना बुद्धि नहीं होती।

९१९. आचरणहीन सामान्य स्त्री का कोमल कंधा अज्ञानी पतितों के डूबने का नरक होता है।

९२०. लक्ष्मी से परित्यक्त व्यक्ति का सम्बन्ध उभय हृदयवाली स्त्री, मद्य तथा जुए से होता है।

93. கள்ளுண்ணாமை

921. உட்கப் படாஅர் ஒளிஇழப்பா எஞ்ஞான்றும
கட்காதல் கொண்டொழுகு வார்.

922. உண்ணறக களளை உணில்உண்க சான்றோரான்
எண்ணப் படவேண்டா தார.

923. ஈன்றாள முகத்தேயும் இன்னாதால் என்மற்றுச்
சான்றோர் முகத்துக் களி.

924. நாணஎன்னும் நல்லாள் புறம்கொடுக்கும் கள்என்னும்
பேணாப் பெருங்குற்றத தார்ககு.

925. கைஅறி யாமை உடைததே பொருள்கொடுதது
மெய்அறி யாமை கொளல்.

926 துஞசினார் செததாரின வேறுஅல்லர் எஞ்ஞான்றும்
நஞசுஉண்பார் களஉண் பவர்.

927. உள்ஒற்றி உள்ளூர் நகப்படுவர் எஞ்ஞான்றும்
கள்ஒற்றிக கணசாய் பவா.

928. களித்தறியேன் என்பது கைவிடுக நெஞ்சத்து
ஒளித்ததூஉம் ஆங்கே மிகும

929. களிததானைக காரணம காட்டுதல் கீழ்நீர்க
குளித்தானைத் தீததுரீஇ யற்று.

930. களஉண்ணாப் போழ்தில் களிததானைக் காணுங்கால்
உள்ளான்கொல் உண்டதன் சோர்வு.

९३. मद्य-निषेध

९२१. मद्य-प्रेमियों से शत्रु कभी नहीं डरेंगे। वे (मद्य-प्रेमी) अपना यश भी खो बैठेंगे।

९२२. मद्यपान कोई न करे। चाहें तो वे पान करें जो बड़ों के सम्मान की इच्छा नहीं करते।

९२३. मद्यपान माता के मुख को ही अप्रसन्न कर देता है, तो बड़ों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा?

९२४. 'लज्जा' नामक अच्छी महिला 'मद्य' नामक अशुभ व भयंकर दोष से युक्त व्यक्ति के सामने नहीं आवेगी।

९२५. धन देकर (मद्यपान के द्वारा) अपने शरीर की विस्मृति को मोल लेना अपने कर्मों की अज्ञानता ही है।

९२६. निद्रित व्यक्ति मृत व्यक्ति से भिन्न नहीं है। मद्यपान करनेवाले वस्तुत: ज़हर पीनेवाले ही हैं।

९२७. चोरी-चोरी मद्यपान करनेवाले नगर के लोगों द्वारा ज्ञात होकर सदा छिपे-छिपे हँसे जायेंगे।

९२८. (मद्यपान करनेवाला) यह कहना छोड़ दे कि मुझे मद्यपान का अनुभव नहीं है (क्योंकि उससे) हृदय में छिपी हुई बात भी स्पष्टत: व्यक्त हो जाती है।

९२९. पिये हुए व्यक्ति को कारण दिखा कर ठीक मार्ग पर लाने का प्रयत्न करना पानी के नीचे डूबे हुए व्यक्ति को दीपक लेकर ढूँढ़ने के समान होता है।

९३०. पिये हुए व्यक्ति को बिना पिये कोई देखे तो क्या वह पीने पर होनेवाली बुरी दशा का विचार नहीं करेगा?

94. சூது

931. வேண்டற்க வென்றிடினும் சூதினை வென்றதூஉம்
தூண்டில்பொன் மீன்விழுங்கி யற்று

932. ஒன்றுஎய்தி நூறுஇழக்கும் சூதர்க்கும் உண்டாம்கொல்
நன்றுஎய்தி வாழ்வதுஓர் ஆறு.

933. உருள்ஆயம் ஓவாது கூறின் பொருளாயம்
போஒய்ப் புறமே படும்

934. சிறுமை பலசெய்து சீர்அழிக்கும் சூதின்
வறுமை தருவதுஒன்று இல்.

935. கவறும் கழகமும் கையும் தருக்கி
இவறியார் இல்ஆகி யார்.

936. அகடுஆரார் அல்லல் உழப்பர்சூது என்னும்
முகடியான் மூடப்பட் டார்

937. பழகிய செல்வமும் பண்பும் கெடுக்கும்
கழகத்துக் காலை புகின்.

938 பொருள்கெடுத்துப் பொய்மேல் கொளீஇ அருள்கெடுத்து
அல்லல் உழப்பிக்கும் சூது.

939. உடைசெல்வம் ஊண்ஒளி கல்விஎன்று ஐந்தும்
அடையாவாம் ஆயம் கொளின்.

940. இழத்தொறூஉம் காதலிக்கும் சூதேபோல் துன்பம்
உழத்தொறூஉம் காதற்று உயிர்.

९४. जुआ

९३१. विजय ही क्यों न प्राप्त हो, जुए की इच्छा न रक्खो, क्योंकि वह विजय बन्सी के लोहे को मछली के निगलने के समान होती है।

९३२. एक प्राप्त करके सौ खोनेवाले जुआरी के लिए सफल जीवन व्यतीत करने का कोई मार्ग भी है क्या?

९३३. कोई लुढ़कनेवाले पाँसे से प्राप्त होनेवाले धन की सदा चर्चा छेड़ता रहे तो धन उसे छोड़ शत्रु के ही हाथ जा लगेगा।

९३४. अनेक बाधाएँ पहुँचाकर सम्मान को नष्ट करनेवाले जुए से बढ़कर दरिद्रता उत्पन्न करनेवाला और कोई नहीं है।

९३५. पांसा, जुआ-घर तथा अपने हाथ (के द्यूत-कौशल) के अभिमान को न छोड़नेवाले निर्धन होकर रहेंगे।

९३६. जुआ नामक दुर्भाग्य से आवृत्त व्यक्ति उदर-क्षुधा से व्यथित होंगे।

९३७. जुआ-घर में पैर रखना पैतृक सम्पत्ति एवं सदाचार का नाश करेगा।

९३८. जुआ धन का नाश करके असत्य भाषण कराकर हृदय को भी भ्रष्ट करके विपत्तियों को ला देगा।

९३९. वस्त्र, धन, भोजन, यश और विद्या—ये पाँचों जुए में हाथ डालनेवाले के पास नहीं फटकेंगे।

९४०. धन-विसर्जन के साथ साथ मोह की वृद्धि करनेवाले जुए के ही समान, विपत्ति के आधिक्य के साथ साथ प्रियतर होते जाते हैं प्राण।

95. மருந்து

941. மிகினும் குறையினும் நோய்செய்யும் நூலோர்
வளிமுதலா எண்ணிய மூன்று.

942. மருநதுஎன வேண்டாவாம் யாககைக்கு அருந்தியது
அறறது போற்றி உணின்.

943. அறறுல அளவுஅறிந்து உண்க அஃதுஉடம்பு
பெற்றுன் நெடிதுஉயககும் ஆறு.

944. அற்றது அறிந்து கடைப்பிடித்து மாறல்ல
துய்க்க துவரப் பசித்து.

945. மாறுபாடு இல்லாத உண்டி மறுத்துஉண்ணின்
ஊறுபாடு இல்லை உயிர்க்கு.

946. இழிவுஅறிநது உண்பான்கண இன்பம்போல் நிற்கும்
கழிபேர் இரையான்கண் நோய்.

947. தீஅளவு அன்றித தெரியான் பெரிதுஉண்ணின்
நோய்அள வின்றிப் படும.

948. நோய்நாடி நோயமுதல் நாடி அதுதணிக்கும்
வாய்நாடி வாய்ப்பச் செயல்.

549. உற்றுன் அளவும் பிணிஅளவும காலமும்
கற்றுன் கருதிச செயல.

950. உற்றவன் தீரபபான் மருந்துஉழைச் செல்வான்என்று
அப்பால்நால் கூற்றே மருந்து.

९५. औषधि

९४१. विश्लेषण करके वैद्यों के द्वारा बताये हुए वात, पित्त, कफ़—इन तीनों में से कोई अधिक अथवा कम होने पर भी बीमारी करेगा।

९४२. शरीर को दिये हुए भोजन की पची हुई स्थिति का ध्यान रखकर आगे भोजन किया जाय तो औषधि की आवश्यकता न हो।

९४३. भूख हो तो मात्रा का ध्यान रखकर भोजन करो। वही शरीर प्राप्त व्यक्ति के लिए दीर्घजीवी होने का मार्ग है।

९४४. भूख का विचार करके सोच-समझकर उपयुक्त पदार्थों का सेवन खूब भूख लगने पर करो।

९४५. मात्रा का ध्यान रखकर उपयुक्त भोजन किया जाय तो प्राण के लिए किसी प्रकार का भय नहीं है।

९४६. मित-भोजन करनेवाले के पास रहनेवाले स्वास्थ्य-सुख के समान अति भोजन करनेवाले के पास बीमारी रहती है।

९४७. क्षुधाग्नि की मात्रा को न समझकर अधिक भोजन करने से असीम बीमारी बाधित करेगी।

९४८. बीमारी का पता लगाकर उसके कारण को समझकर उसके निग्रह का उपाय खोजकर अनुकूल उपचार करना चाहिए।

९४९. वैद्य को रोगी की आयु, रोग की मात्रा तथा काल का ध्यान रखकर उपचार करना चाहिए।

९५०. रोगी, वैद्य, औषधि तथा उसे देनेवाला—इन चार विभागों का विश्लेषण ही वैद्यक-शास्त्र में होता है।

7. குடியியல்

96, குடிமை

951. இல்பிறந்தார் கண்அல்லது இல்லை இயல்பாகச்
செப்பமும் நாணும் ஒருங்கு.

952 ஒழுக்கமும் வாய்மையும் நாணும்இம் மூன்றும்
இழுககார் குடிப்பிறந் தார்.

953. நகைஈகை இன்சொல் இகழாமை நான்கும்
வகைஎன்ப வாய்மைக் குடிக்கு

954. அடுககிய கோடி பெறினும் குடிப்பிறந்தார்
குன்றுவ செய்தல இலா.

955. வழங்குவது உள்வீழ்நதக கண்ணும் பழம்குடி
பண்பில் தலைப்பிரிதல இன்று.

956. சலம்பற்றிச சால்புஇல செய்யார்மாசு அற்ற
குலம்பற்றி வாழ்தும்என் பார்.

957. குடிப்பிறந்தா கண்விளங்கும் குற்றம் விசும்பின்
மதிககண் மறுப்போல் உயர்ந்து.

958 நலததின்கண் நார்இன்மை தோன்றின் அவனைக
குலத்தின்கண் ஐயப் படும்.

959. நிலத்தில கிடந்தமை கால்காட்டும் காட்டும
குலத்தில் பிறந்தார்வாய்ச் சொல்.

960. நலமவேண்டின் நாணஉடைமை வேண்டும குலமவேண்டின்
வேணடுக யார்க்கும் பணிவு.

७. वंश

९६. कुलीनता

९५१. ईमान एवं लज्जा का स्वाभाविक संयोग कुलीनों के अतिरिक्त औरों में नहीं होता।

९५२. सदाचार, सत्य एवं लज्जा—इन तीनों से कुलीन कभी नहीं फिसलते।

९५३. कुलीन व्यक्ति में प्रसन्न मुख, दान, मधुर बोल तथा दूसरों की निन्दा न करना—ये चारों गुण स्वाभाविक होते हैं।

९५४. करोड़ों रुपये प्राप्त होते रहने पर भी कुलीन व्यक्ति क्षुद्र कर्म कभी न करेंगे।

९५५. धन में कमी आ पड़ने पर भी परम्परागत कुलीन व्यक्ति अपने सदाचरण से च्युत न होगा।

९५६. अपने निर्दोष कुल के नाम को बनाये रखने के इच्छुक धोखे से पूर्ण अनुचित व्यवहार कभी न करेंगे।

९५७. कुलीन का दोष आकाश के चन्द्र में उपस्थित कलंक के समान स्पष्टतः सब लोगों की दृष्टि में पड़ता है।

९५८. सदाचरण के मध्य में निर्दयता व्यक्त हो तो उसकी कुलीनता में सन्देह होने लगता है।

९५९. भूमि के गुण को अंकुर दिखाता है। उसी प्रकार कुल के गुण को दिखाती है कुलीन की वार्त्ता।

९६०. शुभ की अभिलाषा हो तो सलज्ज होना आवश्यक है। कुल के सुनाम की अभिलाषा हो तो सविनय व्यवहार की आवश्यकता है।

97. மானம்

961. இன்றி அமையாச் சிறப்பின ஆயினும்
குன்ற வருப விடல்.

962. சீரினும் சீர்அல்ல செய்யாரே சீரொடு
பேராண்மை வேண்டு பவர்

963. பெருக்கத்து வேண்டும் பணிதல் சிறிய
சுருக்கத்து வேண்டும் உயர்வு.

964. தலையின் இழிந்த மயிர்அனையர் மாந்தா
நிலையின் இழிந்தக் கடை.

965. குன்றின் அனையாரும் குன்றுவர் குன்றுவ
குன்றி அனைய செயின்.

966. புகழ்இன்றால் புத்தேள்நாட்டு உய்யாதால் என்மற்று
இகழ்வாரபின் சென்று நிலை.

967. ஒட்டார்பின் சென்றுஒருவன் வாழ்தலின் அந்நிலையே
கெட்டான் எனப்படுதல் நன்று.

968. மருநதோமற்று ஊன்ஓம்பும் வாழ்ககை பெருந்தகைமை
பீடுஅழிய வந்த இடத்து.

969. மயிர்நீப்பின் வாழாக் கவரிமா அன்னார்
உயிர்நீப்பர் மானம் வரின்.

970. இளிவரின் வாழாத மானம் உடையார்
ஒளிதொழுது ஏத்தும் உலகு.

९७. सम्मान

९६१. श्रेष्ठता के लिए, अनिवार्य होने पर भी, अपने व्यक्तित्व को गिरानेवाले कर्मों को सर्वथा त्याग दो।

९६२. सुयश एवं सम्मान के इच्छुक सुयश प्राप्त होने पर भी अगौरवपूर्ण कर्म कभी न करेंगे।

९६३. धन अधिक होने पर नम्रता धारण करो, और ज़रा कम पड़ने पर अपना सिर ऊँचा बनाये रखो।

९६४. सम्मान-युक्त स्थिति से च्युत व्यक्ति की दशा सिर से गिरे हुए बालों जैसी होती है।

९६५. पर्वत जैसे श्रेष्ठ व्यक्ति भी अपने तिल जैसे क्षुद्र कर्म के कारण निम्न गिने जाते हैं।

९६६. निन्दकों के पीछे चलने से क्या प्रयोजन, जब उससे न यश प्राप्त हो सकता है और न स्वर्ग ही सधता है?

९६७. निन्दकों के पीछे चलकर जीवन बनाये रखने से अच्छा है वैसा न करके जीवन को ही समाप्त कर देना।

९६८. विशिष्ट आत्म-सम्मान का ही नाश होते समय इस शरीर मात्र का जीवित रहना, क्या मृत्यु से बचने की कोई औषधि है?

९६९. सम्मान के च्युत होते ही प्राण त्यागनेवाले, बालों के गिरने पर प्राण छोड़नेवाले 'कवरिमान' (एक प्रकार का मृग) के समान होते हैं।

९७०. अपयश आ पड़ने पर प्राणार्पण करनेवाले मान-युक्त व्यक्ति के यश की लोग पूजा करके प्रशंसा करेंगे।

98. பெருமை

971. ஒளிஒருவற்கு உள்ள வெறுக்கை இளிஒருவற்கு
அஃதுஇறந்து வாழ்தும் எனல்.

972. பிறப்பொக்கும் எல்லா உயிர்க்கும் சிறப்பொவ்வா
செய்தொழில் வேற்றுமை யான்.

973. மேல்இருந்தும் மேல்அல்லார் மேல்அல்லர் கீழ்இருந்தும்
கீழல்லார் கீழ்அல் லவர்.

974. ஒருமை மகளிரே போலப் பெருமையும்
தன்னைத்தான் கொண்டொழுகின் உண்டு.

975. பெருமை உடையவர் ஆற்றுவார் ஆற்றின்
அருமை உடைய செயல்.

976. சிறியார் உணர்ச்சியுள் இல்லை பெரியாரைப்
பேணிக்கொள் வேம்என்னும் நோக்கு.

977. இறப்பே புரிந்த தொழிற்றாம் சிறப்புந்தான்
சீர்அல் லவர்கண் படின்.

978. பணியுமாம் என்றும் பெருமை சிறுமை
அணியுமாம் தன்னை வியந்து.

979. பெருமை பெருமிதம் இன்மை சிறுமை
பெருமிதம் ஊர்ந்து விடல்.

980. அற்றம் மறைக்கும் பெருமை சிறுமைதான்
குற்றமே கூறி விடும்.

९८. महानता

९७१. व्यक्ति की श्रेष्ठता उसकी महत्वाकांक्षा ही है। इस भाव के बिना रहने का विचार ही उसका नाश है।

९७२. सभी का जन्म एक जैसा ही होता है। कर्म-भेद के आधार पर उनकी महानता एक जैसी नहीं होती।

९७३. ऊँची स्थिति में होने पर भी उच्च आचरण न हो तो वह श्रेष्ठ नहीं होता। नीची स्थिति में होने पर भी निम्न आचरण न हो तो वह नीचा नहीं होता।

९७४. एक ही पुरुष का विचार रखनेवाली स्त्री के समान अपने आप को आचरण के अन्दर रखने पर ही महानता भी ठहरती है।

९७५. असाधारण कार्य उचित रीति से वे कर दिखायेंगे जो महानता के गुणों से युक्त होंगे।

९७६. महान व्यक्ति का सप्रेम आदर करने का विचार (उनकी महानता से अनभिज्ञ) तुच्छ व्यक्तियों में नहीं होता।

९७७. श्रेष्ठता भी आचरणहीन तुच्छ व्यक्ति के हाथ पड़ जाय तो वह उसका दुष्प्रयोग ही करेगा।

९७८. महानता सदा विनय-सम्पन्न होती है। तुच्छता अपने आपको श्रेष्ठ मानकर सदा गर्दन ऊँचा किये रहती है।

९७९. महानता अहंकार रहित होती है। तुच्छता अहंकार की सीमा पर पहुँच जाती।

९८०. महानता दूसरों के दोषों को छिपाती है। तुच्छता दूसरों के दोषों को ही निकाल कर कह डालती है।

99 சான்ருண்மை

981. கடன்என்ப நல்லவைஎல்லாம் கடன்அறிந்து
சான்ருண்மை மேற்கொள பவர்க்கு.

982. குணநலம் சான்ருேர் நலனே பிறநலம்
எநநலதது உள்ளதூஉம் அன்று.

983. அன்புநாண் ஒப்புரவு கண்ணேட்டம் வாய்மையொடு
ஐந்துசால்பு ஊன்றிய தூண்.

984. கொல்லா நலத்தது நோன்மை பிறர்தீமை
சொல்லா நலத்தது சால்பு.

985. ஆற்றுவார் ஆற்றல் பணிதல் அதுசான்ருேர்
மாற்ருரை மாற்றும் படை.

986. சால்பிற்குக் கட்டளை யாதுஎனின் தோல்வி
துலைஅல்லார் கண்ணும் கொளல்.

987. இன்னு செய்தார்க்கும் இனியவே செய்யாககால்
என்ன பயத்ததோ சால்பு.

988. இன்மை ஒருவற்கு இளிவுஅன்று சால்புஎன்னும்
திணமைஉண் டாகப் பெறின்.

989. ஊழி பெயரினும் தாம்பெயரா சான்ருண்மைக்கு
ஆழி எனப்படு வார்.

990. சான்றவர் சான்ருண்மை குன்றின் இருநிலந்தான்
தாங்காது மன்னே பொறை.

९९. सर्वगुण-सम्पन्नता

९८१. कर्त्तव्य-बोध-युक्त सर्वगुण-सम्पन्न व्यक्ति के लिए सभी शुभ विषय स्वाभाविक कर्त्तव्य कहे जाते हैं।

९८२. गुण-सौन्दर्य को ही बुद्धिमान लाभप्रद मानते हैं। अन्य सौन्दर्यों को वे, चाहे कितने की लाभप्रद क्यों न हों, महत्त्व नहीं देते।

९८३. प्रेम, लज्जा, सद्योग, दयार्द्रता तथा सत्य वचन—ये पाँच शान्ति के स्तम्भ हैं।

९८४. अहिंसा ही तप है, और दूसरों के दोषों को न कहने में शान्ति उपस्थित है।

९८५. बलवान का बल उसकी विनयशीलता में है। शत्रुओं को परिवर्त्तित करने के लिए बुद्धिमान का शस्त्र यही है।

९८६. शान्ति की कसौटी वस्तुतः अपने से छोटों से हार मान लेने में है।

९८७. दुःख पहुँचानेवाले को सुख नहीं पहुँचाया तो सद्गुणों से क्या प्रयोजन ?

९८८. सद्गुण नामक शक्ति प्राप्त होने पर निर्धनता कोई अगौरव का विषय नहीं है।

९८९. सर्वगुण-सम्पन्नता के कारण समुद्र माने जानेवाले व्यक्ति प्रलयकाल में भी अपना सद्स्वभाव न तजेंगे।

९९०. सर्वगुण-सम्पन्न की गुण-गरिमा में क्षति आ जाय तो यह विशाल पृथ्वी भी अपना भार न उठा पायेगी।

100. பண்புடைமை

991. எண்பதத்தால் எய்தல் எளிதுஎன்ப யார்மாட்டும்
பண்புஉடைமை என்னும் வழக்கு.

992. அன்புஉடைமை ஆன்ற குடிப்பிறத்தல் இவ்இரண்டும்
பண்புஉடைமை என்னும் வழக்கு.

993. உறுப்புஒத்தல் மக்கள்ஒப்பு அன்றால் வெறுத்தக்க
பண்புஒத்தல் ஒப்பதாம் ஒப்பு.

994. நயனொடு நன்றி புரிந்த பயனுடையார்
பண்புபா ராட்டும் உலகு.

995. நகையுள்ளும் இன்னாது இகழ்ச்சி பகையுள்ளும்
பண்புஉள பாடறிவார் மாட்டு.

996. பண்புஉடையார்ப் பட்டுஉண்டு உலகம் அதுஇன்றேல்
மண்புக்கு மாய்வது மன்.

997. அரம்போலும் கூர்மையர் ஏனும் மரம்போல்வர்
மக்கட்பண்பு இல்லா தவர்.

998. நண்புஆற்றார் ஆகி நயம்இல செய்வார்க்கும்
பண்புஆற்றார் ஆதல் கடை.

999. நகல்வல்லர் அல்லார்க்கு மாயிரு ஞாலம்
பகலும்பாற் பட்டன்று இருள்.

1000. பண்புஇலான் பெற்ற பெருஞ்செல்வம் நன்பால்
கலந்தீமை யால்திரிந் தற்று.

१००. शिष्टाचार

९९१. कहते हैं कि सविनय वार्त्ता से शिष्टाचार नामक सदाचरण की प्राप्ति सहज हो जाती है।

९९२. स्नेह-सम्पन्नता एवं श्रेष्ठ-कुल-जन्म—ये दोनों शिष्टाचर नामक सदाचरण (के अंग) हैं।

९९३. शरीरांग-साम्य बन्धुजन-मेल नहीं है। स्थिर शिष्टाचार का मेल ही वास्तविक मेल है।

९९४. न्याययुक्त कृतज्ञ हित-चिन्तक के शिष्टाचार का लोक सम्मान करेगा।

९९५. हास्य में भी निन्दा नहीं रुचती। शत्रुता में भी व्यवहार-कुशल में एक शिष्टता रहती है।

९९६. शिष्ट व्यक्तियों के सम्पर्क के कारण लोक टिका हुआ है; अन्यथा वह मिट्टी में मिल जाता।

९९७. मानवीय-शिष्टता से रहित व्यक्ति, आरी के समान तीक्ष्ण बुद्धि से युक्त होने पर भी, वृक्ष के समान होते हैं।

९९८. मैत्री को बनाये न रखनेवाले हानिप्रद व्यक्ति के साथ भी शिष्टाचार न करना अगौरव की बात है।

९९९. जो प्रसन्नचित नहीं रहता उसके लिए विशाल संसार दिन में भी अन्धकार से पूर्ण रहता है।

१०००. अशिष्ट व्यक्ति को प्राप्त बड़ी सम्पत्ति कलश-दोष के फलस्वरूप स्वच्छ दूध के बिगड़ने के समान होती है।

101. நன்றியில் செல்வம்

1001. வைத்தான்வாய் சான்ற பெரும்பொருள் அஃதுஉண்ணான்
செத்தான் செயக்கிடந்தது இல்.

1002. பொருளான்ஆம் எல்லாம்என்று ஈயாது இவறும்
மருளான்ஆம் மாணாப் பிறப்பு.

1003. ஈட்டம் இவறி இசைவேண்டா ஆடவர்
தோற்றம் நிலக்குப் பொறை.

1004. எச்சம்என்று என்எண்ணுங் கொல்லோ ஒருவரால்
நச்சப் படாஅ தவன்.

1005. கொடுப்பதூஉம் துய்ப்பதூஉம் இல்லார்க்கு அடுக்கிய
கோடிஉண் டாயினும் இல்.

1006. ஏதம் பெரும்செல்வம் தான்துவ்வான் தக்கார்க்குஒன்று
ஈதல் இயல்புஇலா தான்.

1007. அற்றார்க்குஒன்று ஆற்றாதான் செல்வம் மிகுநலம்
பெற்றாள் தமியள்மூத் தற்று.

1008. நச்சப் படாதவன் செல்வம் நடுஊருள்
நச்சு மரம்பழுத் தற்று.

1009. அன்புஒரீஇத் தற்செற்று அறம்நோக்காது ஈட்டிய
ஒண்பொருள் கொள்வார் பிறர்.

1010. சீருடைச் செல்வர் சிறுதுனி மாரி
வறங்கூர்ந் தனையது உடைத்து.

१०१. प्रयोजनहीन सम्पत्ति

१००१. संग्रह की हुई बड़ी सम्पत्ति का भोग किये बिना मृत्यु प्राप्त व्यक्ति उससे कर ही क्या सका?

१००२. सम्पत्ति से सब कुछ सम्भव मानकर, दिये बिना उसे पकड़े रखने की मादकता के फलस्वरूप तुच्छ जन्म प्राप्त होगा।

१००३. धन संग्रह में मस्त, यश की इच्छा से रहित व्यक्ति का जन्म पृथ्वी के लिए भार है।

१००४. (किसी की सहायता न करने के कारण) जो किसी का प्रिय न रहा हो, वह (अपनी मृत्यु के पश्चात् भी) शेष रहनेवाली किस वस्तु का विचार करेगा?

१००५. जो देता और भोगता नहीं है, उसके पास करोड़ों क्यों न संग्रहित हों, सब व्यर्थ ही हैं।

१००६. जो स्वयं भी न भोगे और उपयुक्त व्यक्ति को भी कुछ न दे, वह विशाल सम्पत्ति के लिए एक व्याधि है।

१००७. निर्धन को कुछ भी धन न देनेवाले की सम्पत्ति एक अति सुन्दर रमणी का एकाकी रहकर वृद्ध होने के समान होता है।

१००८. (किसी की सहायता न करने के कारण) अप्रिय व्यक्ति की सम्पत्ति नगर के मध्य में विष वृक्ष के फलने के समान होता है।

१००९. (कृपणता के फलस्वरूप) दूसरों से प्रेम करना छोड़, अपने को कष्ट देकर धर्म का भी अनुसरण न करनेवाले की संग्रहित सम्पत्ति का भोग दूसरे ही करेंगे।

१०१०. यशस्वी धनवान की लघु निर्धनता में भी वर्षा की अत्यधिक कमी के समान गुण होता है।

102. நாணுடைமை

1011. கருமத்தான் நாணுதல் நாணுத் திருநுதல்
நல்லவர் நாணுப் பிற

1012. ஊண்உடை எச்சம் உயிர்க்குஎல்லாம் வேறுஅல்ல
நாண்உடைமை மாந்தர் சிறப்பு.

1013. ஊனைக் குறித்த உயிர்எல்லாம் நாண்என்னும்
நன்மை குறித்தது சால்பு.

1014 அணிஅன்றோ நாண்உடைமை சான்றோர்க்கு அஃதுஇன்றேல்
பிணிஅன்றோ பீடு நடை.

1015. பிறர்பழியும் தம்பழியும் நாணுவார் நாணுக்கு
உறைபதி என்னும் உலகு.

1016. நாண்வேலி கொள்ளாது மன்னோ வியன்ஞாலம்
பேணலர் மேலா யவர்.

1017. நாணால் உயிரைத் துறப்பர் உயிர்ப்பொருட்டால்
நாண்துறவார் நாண்ஆள் பவர்.

1018. பிறர்நாணத் தக்கது தான்நாணான் ஆயின்
அறம்நாணத் தக்கது உடைத்து.

1019. குலம்சுடும் கொள்கை பிழைப்பின் நலம்சுடும்
நாண்இன்மை நின்றக் கடை.

1020 நாண்அகத்து இல்லார் இயக்கம் மரப்பாவை
நாணால் உயிர்மருட்டி யற்று.

१०२. लज्जाशीलता

१०११. अनुचित कर्म के कारण लज्जित होना ही लज्जा है। सुमुखियों की स्वाभाविक लज्जा कुछ और है।

१०१२. भोजन, वस्त्र तथा शेष विषय मानवमात्र के लिए एक-से हैं। लज्जाशील होना श्रेष्ठ मानव की विशेषता है।

१०१३. सभी जीव सशरीर होते हैं। लज्जा नामक गुण-गरिमा में ही गौरव निहित है।

१०१४. लज्जाशीलता मानव का अलंकार है! बुद्धिमान में यह न हो तो मान सहित चलना भी एक व्याधि है।

१०१५. संसार कहेगा कि दूसरों की और अपनी निन्दा से लज्जित होनेवाला लज्जा के टिकने का एक स्थल है।

१०१६. श्रेष्ठ व्यक्ति लज्जा की मेड़ लगाये बिना विशाल संसार के जीवन की इच्छा नहीं करते।

१०१७. लज्जाशील व्यक्ति लज्जा से अपने प्राण का त्याग तो कर देंगे, पर प्राण के हेतु लज्जा का त्याग न करेंगे।

१०१८. दूसरे जिससे लज्जित होते हों उससे जो लज्जित नहीं होता, धर्म लज्जित हो उसका त्याग कर बैठेगा।

१०१९. सिद्धान्त से च्युत होना कुल को कलंकित करता है। निर्लज्जता स्थाई हो जाय तो सभी अच्छाइयों का सर्वनाश कर देती है।

१०२०. निर्लज्ज हृदयवाले व्यक्ति की उपस्थिति कटपुतली को रस्सी से खींचकर सप्राण होने के भ्रम में डालने के समान है।

103. குடிசெயல்வகை

1021. கருமம் செயஒருவன் கைதூவேன் என்னும்
பெருமையின் பீடுஉடையது இல்.

1022. ஆள்வினையும் ஆன்ற அறிவும் எனஇரண்டின்
நீள்வினையால் நீளும் குடி.

1023. குடிசெய்வல் என்னும் ஒருவற்குத் தெய்வம்
மடிதற்றுத் தான்முந் துறும்.

1024. சூழாமல் தானே முடிவுஎய்தும் தம்குடியைத
தாழாது உஞற்று பவர்க்கு.

1025 குறறம இலனாய்க் குடிசெய்து வாழ்வானைச்
சுற்றமாச் சுற்றும் உலகு.

1026. நல்லாண்மை என்பது ஒவருவற்குத் தான்பிறநத
இல்லாண்மை ஆக்கிக கொளளல்.

1027. அமரகதது வன்கண்ணர் போலத தமரகததும்
ஆறறுவாா மேற்றே பொறை.

1028. குடிசெய்வார்கக இல்லை பருவம் மடிசெய்து
மானம் கருதக் கெடும்.

1029. இடும்பைக்கே கொளகலங் கொல்லோ குடும்பத்தைக்
குற்றம் மறைபபான் உடம்பு.

1030. இடுக்கணகால் கொன்றிட வீழும் அடுததுஊன்றும்
நல்லாள் இலாத குடி.

१०३. वंश चलाने की रीति

१०२१. 'कर्तव्य पालन से कभी पीछे न हटूंगा' में निहित गौरव से श्रेष्ठ और कोई नहीं है।

१०२२. उग्र परिश्रम एवं विशाल बुद्धि——इन दोनों से युक्त अटूट कर्म से वंश की वृद्धि होगी।

१०२३. 'अपगे वंश को विकसित करूँगा'——ऐसा कहनेवाले के हितार्थ देवता स्वयं धोती कसकर आगे आ डटेंगे!

१०२४. अपने वंश को पतनोन्मुख हुए बिना उन्नतिशील बनानेवाले के कर्म उसके जाने विना पूर्ण हो जायेंगे।

१०२५. निर्दोष गृहस्थ को सारा संसार अपना बन्धु मानकर घेरे रहेगा।

१०२६. जन्मे हुए कुटुम्ब के गौरव को अपना बना लेना ही किसी के लिए वास्तविक गौरव है।

१०२७. समर क्षेत्र के वीर योद्धा के समान अपने कुटुम्ब के गौरव को बनाये रखनेवाले पर ही उसका उत्तरदायित्व रहता है।

१०२८. सद्-गृहस्थ के लिए काल-विशेष कोई नहीं होता। सुस्त हो मान - हानि का विचार करनेवाले के वंश का गौरव नष्ट हो जायगा।

१०२९ अपने कुटुम्ब पर आनेवाले दोष को रोकनेवाले का शरीर, क्या दु:ख का ही निवास स्थान है?

१०३०. विपत्तियों को सहनेवाला सज्जन जिस वंश में नहीं होता, वह विषम परिस्थिति के समय (विपत्तियों की कुल्हाड़ी से) कटकर गिर पड़ेगा।

104. உழவு

1031. சுழன்றும்ஏர்ப் பின்னது உலகம் அதனால்
உழந்தும் உழவே தலை.

1032. உழுவார் உலகத்தார்க்கு ஆணிஅஃது ஆற்றாது
எழுவாரை எல்லாம் பொறுத்து.

1033. உழுதுஉண்டு வாழ்வாரே வாழ்வார்மற்று எல்லாம்
தொழுதுஉண்டு பின்செல் பவர்.

1034. பலகுடை நீழலும் தங்குடைக்கீழ்க் காண்பர்
அலகுடை நீழ லவர்.

1035. இரவார் இரப்பார்க்குஒன்று ஈவர் கரவாது
கைசெய்துஊண் மாலை யவர்.

1036. உழவினார் கைம்மடங்கின் இல்லை விழைவதூஉம்
விட்டேம் என்பார்க்கு நிலை.

1037. தொடிப்புழுதி கஃசா உணக்கின் பிடித்தெருவும்
வேண்டாது சாலப் படும்.

1038. ஏரினும் நன்றால் எருஇடுதல் கட்டபின்
நீரினும் நன்றுஅதன் காப்பு.

1039. செல்லான் கிழவன் இருப்பின் நிலம்புலந்து
இல்லாளின் ஊடி விடும்.

1040 இலம்என்று அசைஇ இருப்பாரைக் காணின்
நிலம்என்னும் நல்லாள் நகும்.

१०४. कृषि

१०३१. संसार कुछ भी करता फिरे, हल के पीछे ही (आश्रित) है। अतएव दुखद होने पर भी कृषि-कर्म ही श्रेष्ठ है।

१०३२. कृषक सारे संसार के लिए किल्ली के समान है, क्योंकि वही अन्य सभी का भार-वहन कर रहा है।

१०३३. कृषकों का जीवन ही जीवन है । अन्य सब दूसरों की वन्दना करके भोजन पाकर उनके पीछे चलनेवाले ही हैं।

१०३४ अन्न की फली की छाया में रहनेवाला कृषक अनेक छत्रों की छाया (से युक्त सम्राटों) को भी अपने छत्र के नीचे पावेगा।

१०३५. हाथ से काम करके भोजन करने का स्वभाव रखनेवाले याचना नहीं करेंगे, और याचना करनेवाले को बिना छिपाये कुछ देंगे।

१०३६. कृषक हाथ मोड़ ले तो सभी इच्छाओं का त्यागी कहलानेवाले का भी अस्तित्व नहीं रहेगा।

१०३७. सेर भर मिट्टी को (खूब जोतकर) पाव भर धूल बनाकर सुखा डाले तो हाथ भर खाद के बिना भी अच्छी फलस होगी।

१०३८. जोतने की अपेक्षा खाद डालना अच्छा है, और घास-पात उखाड़ने के पश्चात् खेत की सिंचाई से अधिक आवश्यक है उसकी सुरक्षा।

१०३९. भूस्वामी अपनी भूमि (खेत) को चलकर न देखे तो वह भूमि घृणा करके इसकी पत्नी के समान मान कर बैठेगी।

१०४०. 'अपने हाथ में कुछ नहीं है'—ऐसा मान कर जो सुस्त बैठा रहता हो उसे देखकर भूमि रूपी सुन्दर स्त्री मन ही मन हँसेगी।

105. நல்குரவு

1041. இனமையின் இன்ருதது யாதுஎனின் இன்மையின்
இன்மையே இன்ரு தது.

1042. இன்மை எனஒரு பாவி மறுமையும்
இம்மையும் இன்றி வரும்.

1043. தொல்வரவும் தோலும் கெடுக்கும் தொகையாக
நல்குரவு என்னும் நசை.

1044 இற்பிறந்தார் கணணேயும் இன்மை இளிவந்த
சொற்பிறக்கும் சோர்வு தரும்.

1045. நல்குரவு என்னும் இடும்பையுள பல்குரைத்
துன்பங்கள் சென்று படும்.

1046. நற்பொருள நன்குணர்ந்து சொல்லினும் நல்கூர்ந்தார
சொற்பொருள் சோர்வு படும்

1047. அறம்சாரா நல்குரவு ஈன்றதா யானும்
பிறனபோல நோக்கப் படும.

1048. இன்றும் வருவது கொல்லோ நெருநலும்
கொன்றது போலும் நிரப்பு.

1049. நெருப்பினுள துஞசலும் ஆகும் நிரப்பினுள்
யாதொன்றும் கண்பாடு அரிது.

1050. துப்புரவு இல்லாா துவரத துறவாமை
உப்பிற்கும் காடிக்கும கூற்று.

१०५. दरिद्रता

१०४१. यदि पूछा जाय कि दरिद्रता के समान दुखद वस्तु क्या है तो कहना होगा, दरिद्रता के समान दुखद वस्तु दरिद्रता ही है।

१०४२. दरिद्रता नामक पापी आगामी तथा इस जन्म के सुखों का लोप करता हुआ ही आवेगा।

१०४३. दरिद्रता नामक (दोष की) इच्छा परम्परागत कुलाचरण एवं यश को एक साथ नाश कर देगी।

१०४४. दरिद्रता कुलीन में भी निन्दाजनक शब्दों को उत्पन्न करानेवाली सुस्ती उत्पन्न कर देगी।

१०४५. दरिद्रता नामक दुखद अवस्था में अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ स्वयं आ उपस्थित होंगी।

१०४६. अच्छे विषय को विशिष्ट चिन्तन के पश्चात् कहने पर भी दरिद्र का कथन निष्प्रभाव ही ठहरेगा।

१०४७. धर्म विरुद्ध दरिद्रताग्रस्त व्यक्ति अपनी माता से भी अन्य व्यक्ति के समान देखा जायगा।

१०४८. प्राणों को हरनेवाली-सी कल की दरिद्रता, क्या आज भी आ पड़ेगी? (दरिद्र के लिए यह प्रतिदिन का विषम प्रश्न है।)

१०४९. आग में कोई सो भी सकता है, परन्तु दरिद्रता में कोई किसी प्रकार भी आँख मूँदकर सो नहीं सकता।

१०५०. वह दरिद्र जिसके पास कोई भोग्य वस्तु न हो, पूर्णतः संन्यास इसलिए नहीं ले पाता कि नमक और सूखी रोटी के लिए वह यम है।

106. இரவு

1051. இரக்க இரத்தக்கார்க் காணின் கரப்பின்
அவர்பழி தம்பழி அன்று.

1052. இன்பம் ஒருவற்கு இரத்தல் இரந்தவை
துன்பம் உறாஅ வரின்.

1053. கரப்பிலா நெஞ்சின் கடன்அறிவார் முன்நின்று
இரப்புமோர் ஏஎர் உடைத்து.

1054. இரத்தலும் ஈதலே போலும் கரத்தல்
கனவிலும் தேற்றாதார் மாட்டு.

1055. கரப்புஇலார் வையகத்து உண்மையால் கண்ணின்று
இரப்பவர் மேற்கொள் வது.

1056. கரப்புஇடும்பை இல்லாரைக் காணின் நிரப்புஇடும்பை
எல்லாம் ஒருங்கு கெடும்.

1057. இகழ்ந்துஎள்ளாது ஈவாரைக் காணின் மகிழ்ந்துஉள்ளம்
உள்ளுள் உவப்பது உடைத்து.

1058. இரப்பாரை இல்லாயின் ஈர்ங்கண்மா ஞாலம்
மரப்பாவை சென்றுவந் தற்று.

1059. ஈவார்கண் என்னுண்டாம் தோற்றம் இரந்துகோள்
மேவார் இலாஅக் கடை.

1060. இரப்பான் வெகுளாமை வேண்டும் நிரப்புஇடும்பை
தானேயும் சாலும் கரி.

१०६. याचना

१०५१. याचना करो उनसे जब याचना के योग्य व्यक्ति दिखें; यदि वे छिपावें तो निन्दा के पात्र वे हैं, न कि तुम।

१०५२. याचित वस्तु बिना दुख दिये प्राप्त हो तो याचना एक के लिए आनन्दप्रद होती है।

१०५३. खुले हृदयवाले व कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति के सम्मुख खड़े होकर याचना करने में एक सौन्दर्य होता है।

१०५४. जिन्हें स्वप्न में भी छिपाना अज्ञात है उनसे याचना करना भी दान देने के समान (सुखद) होता है।

१०५५. खुले हृदयवाले संसार में होने के कारण उनके सम्मुख खड़े हो याचना करनेवाले उस (याचना) प्रवृत्ति में लीन हैं।

१०५६. छिपाने के बुरे स्वभाव से रहित व्यक्ति के देखने पर याचकों का सारा दुःख एक साथ नष्ट हो जायगा।

१०५७ निन्दा किये बिना दान देनेवाले को देखने पर याचकों का हृदय प्रसन्न हो अन्दर ही अन्दर आनन्दित होता है।

१०५८. याचक न होने से शीतल स्थलों से युक्त यह महान लोक केवल कठपुतली के खेल के समान होता।

१०५९. याचना करनेवाले ही न हों तो दानियों को यश कैसे प्राप्त हो?

१०६०. या[illegible] क्रोधित न हो। दारिद्र्य का दुःख [illegible]
[illegible]

107. இரவச்சம்

1061. கரவாது உவந்துஈயும் கண்ணன்னார் கண்ணும்
இரவாமை கோடி உறும்.

1062. இரந்தும் உயிர்வாழ்தல் வேண்டின் பரந்து
கெடுக உலகுஇயற்றி யான்.

1063. இன்மை இடும்பை இரந்துதீர் வாம்என்னும்
வன்மையின் வன்பாட்டது இல்.

1064. இடமெல்லாம் கொள்ளாத் தகைத்தே இடம்இல்லாக்
காலும் இரவுஒல்லாச் சால்பு

1065. தெண்ணீர் அடுபுற்கை ஆயினும் தாள்தந்தது
உண்ணலின் ஊங்குஇனியது இல்

1066. ஆவிற்கு நீர்என்று இரப்பினும் நாவிற்கு
இரவின் இளிவந்தது இல்

1067. இரப்பன் இரப்பாரை எல்லாம் இரப்பின்
கரப்பார் இரவன்மின் என்று.

1068 இரவுஎன்னும் ஏமாப்புஇல் தோணி கரவுஎன்னும்
பார்தாக்கப் பக்கு விடும்

1069. இரவுஉள்ள உள்ளம் உருகும் கரவுஉள்ள,
உள்ளதூஉம் இன்றிக் கெடும்.

1070. கரப்பவர்க்கு யாங்குஒளிக்கும் கொல்லோ இரப்பவர்
சொல்லாடப் போஒம் உயிர்.

१०७. याचना की भयंकरता

१०६१. छिपाये बिना सप्रसन्न देनेवालों से भी याचना न करना (याचना करने से) करोड़ों गुना श्रेष्ठ है।

१०६२. याचना करके भी जीवित रहना पड़े तो लोकस्रष्टा (याचकों के समान) मारे-मारे फिरकर नाशवान होवे।

१०६३. दरिद्रता के दुःख को याचना से दूर करने के अज्ञान से बढ़कर अज्ञान और कोई नहीं है।

१०६४. (जीवन के लिए) कहीं स्थान न होने पर भी याचना न करने का सद्गुण सम्पूर्ण पृथ्वी की विशालता से भी श्रेष्ठ है।

१०६५. चाहे सूखी रोटी ही क्यों न हो, परिश्रम के स्वार्जित भोजन से मधुर और कुछ नहीं होता।

१०६६. चाहे गाय के लिए जल की ही याचना क्यों न हो, जिह्वा के लिए याचना से बढ़कर निन्दास्पद और कुछ नहीं है।

१०६७. याचना करने पर जो अपनी वस्तु को छुपाता है उससे कोई किसी वस्तु की याचना न करे।

१०६८. याचना नामक आश्रयहीन नाव छिपाव नामक चट्टान से टकराने पर टूट जायगी।

१०६९. याचना के विचार से हृदय द्रवीभूत होगा, और छिपाव के विचार से हृदय प्राप्त-वस्तु भी खोकर विदीर्ण हो जायगा।

१०७०. 'नहीं' कहे जाने मात्र से याचक के प्राण चले जाते हैं, तो छिपाकर 'नहीं' कहनेवाले के प्राण कहाँ छिपे रहेंगे ?

108. கயமை

1071. மககளே போல்வர் கயவா அவரன்ன
ஒப்பாரி யாம்கண்டது இல்.

1072. நன்றுஅறி வாரின் கயவர் திருவுடையர்
நெஞ்சதது அவலம இலர்

1073. தேவா அணையர் கயவர் அவரும்தாம்
மேவன செய்துஒழுக லான்.

1074. அகப்பட்டி ஆவாரைக் காணின் அவரின்
மிகப்பட்டுச் செம்மாக்கும் கீழ்.

1075. அச்சமே கீழ்களது ஆசாரம் எசசம்
அவாஉண்டேல் உண்டாம சிறிது.

1076. அறைபறை அன்னர் கயவர்தாம் கேட்ட
மறைபிறர்கு உய்த்துஉரைக்க லான்.

1077. ஈாங்கை விதிரார் கயவர் கொடிறுஉடைக்கும்
கூன்கையர் அல்லா தவாக்கு.

1078. சொலலப் பயன்படுவர் சான்றோ கரும்புபோல்
கொல்லப் பயன்படும் கீழ்.

1079. உடுப்பதூஉம் உண்பதூஉம் காணின் பிறர்மேல்
வடுக்காண வற்றாகும் கீழ்.

1080. எற்றிறகு உரியர் கயவர்ஒன்று உற்றக்கால்
விற்றறகு உரியர் விரைந்து

१०८. नीचता

१०७१. मनुष्य जैसे ही होते हैं नीच; ऐसी समानता हमने और कहीं नहीं देखी है।

१०७२. शुभ का ज्ञान रखनेवालों से अधिक धनी नीच ही होते हैं, क्योंकि इन्हें हृदय में किसी बात की चिन्ता नहीं रहती।

१०७३. नीच देवता के समान होते हैं, क्योंकि वे भी अपनी इच्छा के अनुसार ही कार्य करते हैं।

१०७४. नीच अपने से पतित व्यक्ति देखता है तो अपने को उससे श्रेष्ठ मानकर गर्व का अनुभव करता है।

१०७५. भय में ही नीचों का सदाचार निहित है, इसके अतिरिक्त इच्छा-पूर्ति के हेतु भी थोड़ा रहता है।

१०७६. पिटनेवाले ढोल के समान होते हैं नीच, क्योंकि स्वयं सुनी हुई गुप्त बात को दूसरों से कह बैठते हैं।

१०७७. दाँतों को तोड़नेवाली मुट्टी जिनकी नहीं होती, उन्हें हाथ का जूठन भी नीत नहीं देंगे।

१०७८. कथन मात्र से लाभप्रद सिद्ध होंगे बुद्धिमान, और गन्ने के समान निचोड़े जाने पर ही लाभप्रद सिद्ध होता है नीच।

१०७९. नीच किसी का वस्त्र-धारण और भोजन करना देखे तो उसका उद्देश्य दोषान्वेषण ही होता है।

१०८०. किसी विपत्ति के समय शीघ्र बिकने के अतिरिक्त नीच और किस काम के योग्य होते हैं?

3. இன்பம்

३. काम

I. களவியல்

109. தகையணங்குறுத்தல்

1081. அணங்குகொல் ஆய்மயில் கொல்லோ கனங்குழை
மாதர்கொல் மாலுமென் நெஞ்சு.

1082. நோக்கினாள் நோக்கெதிர் நோக்குதல் தாக்கணங்கு
தானைக்கொண் டன்னது உடைத்து.

1083. பண்டறியேன் கூற்றென் பதனை இனியறிந்தேன்
பெண்டகையால் பேரமர்க் கட்டு.

1084. கண்டார் உயிருண்ணும் தோற்றத்தான் பெண்டகைப்
பேதைக்கு அமர்த்தன கண்.

1085. கூற்றமோ கண்ணோ பிணையோ மடவரல்
நோக்கம்இம் மூன்றும் உடைத்து.

1086. கொடும்புருவம் கோடா மறைப்பின் நடுங்கஞர்
செய்யல மன்இவள் கண்.

1087. கடாஅக் களிற்றின்மேல் கட்படாம் மாதர்
படாஅ முலைமேல் துகில்.

1088. ஒண்ணுதற்கு ஓஒ உடைந்ததே ஞாட்பினுள்
நண்ணாரும் உட்குமென் பீடு.

1089. பிணையேர் மடநோக்கும் நாணும் உடையாட்கு
அணியெவனோ ஏதில தந்து.

1090. உண்டார்கண் அல்லது அடுநறாக் காமம்போல்
கண்டார் மகிழ்செய்தல் இன்று.

१. गुप्ते-प्रेम (पूर्वराग)

१०९. सौन्दर्य की चोट

१०८१. सुरबाला है या सुघर मयूर? कहीं स्वर्ण-कुण्डल-भूषिता मानवी ही तो नहीं है? विभ्रमित हो रहा है मेरा हृदय।

१०८२. निहारते हुए उसके नयनों के समक्ष हो उसे निहारना मानो सबल सैन्य से युक्त सुरबाला से स्वयं संग्राम करना है।

१०८३. यम मुझे अज्ञात था, पर अब ज्ञात हुआ कि वह स्त्री वेश धारी युद्धरत विशालाक्षी होता है।

१०८४. देखनेवाले के प्राणों को केवल देखकर खाने के कारण स्त्रीत्वयुक्त इस सरला के नेत्र कुछ विभिन्न ही हैं।

१०८५. यम है या नेत्र या हरिणा? इस बाला की दृष्टि में इन तीनों के गुण उपस्थित हैं।

१०८६. इसकी वक्र भृकुटी और न झुककर छाँह करती रहे तो इसके नेत्र मुझे प्रकम्पित करनेवाली बाधा न पहुँचायेंगे।

१०८७. बाला के उभरे हुए उरोजों पर पड़ा हुआ वस्त्र मदमत्त गयन्द के शिरोभूषण सदृश है।

१०८८. समर भूमि में शत्रु को भी भय-कम्पित करनेवाला मेरा बल इस बाला के उज्ज्वल माथे के सम्मुख परास्त हो गया।

१०८९. हिरणी की जैसी यौवन दृष्टि तथा लज्जा से युक्त इस बाला को किसने और क्यों गहने पहनाये?

१०९०. पान करनेवालों के अतिरिक्त तीखा मद्य काम के समान देखनेवालों में उन्मत्तता नहीं उत्पन्न करता।

110. குறிப்பறிதல்

1091. இருநோக்கு இவள்உண்கண் உள்ளது ஒருநோக்கு
நோய்நோக்குஒன் றந்நோய் மருந்து.

1092. கண்களவு கொள்ளும் சிறுநோக்கம் காமத்தின்
செமபாகம் அன்று பெரிது.

1093. நோக்கினாள் நோக்கி இறைஞ்சினாள் அஃதுஅவள்
யாப்பினுள் அட்டிய நீர்.

1094. யான்நோக்கும் காலை நிலன்நோக்கும் நோக்காக்கால்
தான்நோக்கி மெல்ல நகும்.

1095. குறிக்கொண்டு நோக்காமை அல்லால் ஒருகண்
சிறக்கணித்தாள் போல நகும்.

1096. உறாஅ தவர்போல் சொலினும் செறாஅர்சொல்
ஒல்லை உணரப் படும்.

1097. செறாஅச் சிறுசொல்லும் செற்றார்போல் நோக்கும்
உறாஅர்போன்று உற்றார் குறிப்பு.

1098. அசையியற்கு உண்டுஆண்டுஓர் ஏஎர்யான் நோக்கப்
பசையினள் பைய நகும்.

1099. ஏதிலார் போலப் பொதுநோக்கு நோக்குதல்
காதலார் கண்ணே உள.

1100. கண்ணொடு கண்ணிணை நோக்கொக்கின் வாய்ச்சொற்கள்
என்ன பயனும் இல.

११०. संकेत-परिचय

१०९१. इसके अंजन-रंजित नयनों में दो प्रकार की दृष्टि है । एक ज्वर उत्पन्न करनेवाली है और दूसरी उस ज्वर की औषधि ।

१०९२. गुप्त नेत्रों की उस संकोच युक्त दृष्टि में (निहित आनन्द) काम भोग का अर्ध भाग नहीं, अपितु उससे कहीं अधिक है ।

१०९३. देखा ; देखकर (मेरे देखते ही) सिर झुका लिया । यह है अपनी प्रेम-लता के लिए उसके द्वारा सिंचित नीर ।

१०९४. जब मैं उसकी ओर देखूँ तो वह पृथ्वी की ओर दृष्टि डालती है, अन्यथा वह मेरी ओर देखकर मन्द-मन्द मुस्कराती है ।

१०९५. मुझे सीधे तो देखती नहीं है, परन्तु एक नेत्र सिकोड़ती हुई-सी मुस्कराती है ।

१०९६. अपरिचित जैसे बोलने पर भी, स्नेह-सम्पृक्त वचन का बोध शीघ्र हो ही जायगा ।

१०९७. उसके मधुर व कठोर वचन तथा शत्रुओं की-सी दृष्टि बाह्यतः अपरिचित से लगने पर भी वस्तुतः सस्नेह होने के संकेत हैं ।

१०९८. मै देखता हूँ तो वह स्नेहिनी स्मित-हास करती है । तब उस कोमलांगी में एक अनुपम सौन्दर्य छा जाता है ।

१०९९. अपरिचित जैसे सामान्य दृष्टि से देखना मानो कामुक नेत्रों का ही गुण है ।

११००. नयनों से नयन मिलकर एक हो गये तो मुख के बोलों से कोई प्रयोजन नहीं ।

111. புணர்ச்சி மகிழ்தல்

1101. கண்டுகேட்டு உண்டுஉயிர்த்து உற்றுஅறியும் ஐம்புலனும்
ஒண்டொடி கண்ணே உள.

1102. பிணிக்கு மருந்து பிறமன் அணியிழை
தன்நோய்க்குத் தானே மருந்து.

1103. தாம்வீழ்வார் மென்தோள் துயிலின் இனிதுகொல்
தாமரைக் கண்ணான் உலகு.

1104. நீங்கின் தெறூஉம் குறுகுங்கால் தண்என்னும்
தீயாண்டுப் பெற்றாள் இவள்.

1105. வேட்ட பொழுதின் அவையவை போலுமே
தோட்டார் கதுப்பினாள் தோள்.

1106. உறுதோறு உயிர்தளிர்ப்பத் தீண்டலான் பேதைக்கு
அமிழ்தின் இயன்றன தோள்.

1107. தம்இல் இருந்து தமதுபாத்து உண்டற்றால்
அம்மா அரிவை முயக்கு.

1108. வீழும் இருவர்க்கு இனிதே வளியிடை
போழப் படாஅ முயக்கு

1109. ஊடல் உணர்தல் புணர்தல் இவைகாமம்
கூடியார் பெற்ற பயன்.

1110. அறிதோறு அறியாமை கண்டற்றால் காமம்
செறிதோறும் சேயிழை மாட்டு

१११. मिलन का सुख

११०१. रूप, शब्द, रस, गन्ध, स्पर्श—इन पाँचों का इन्द्रिय-सुख एकत्रित हो प्रकाशपूर्ण चूड़ियों से भूषित इस बाला में समाया हुआ है।

११०२. ज्वर की औषधि कोई अन्य वस्तु होती है, परन्तु इस भूषण-भूषिता जनित ज्वर की औषधि यह बाला स्वयं है।

११०३. कमल-नयन का लोक, क्या कभी अपनी प्रेमिका के सुकोमल स्कन्धों के आलिंगन से अधिक सुमधुर हो सकता है?

११०४. पृथक होने पर जलानेवाली और निकट पहुँचने पर ठण्डक पहुँचानेवाली अग्नि इस बाला ने कहाँ से प्राप्त की?

११०५. पुष्प-गुंथित केश से युक्त इस बाला के स्कन्ध इच्छित पदार्थों का विचार करने पर उन्हीं का-सा आनन्द प्रदान करते हैं।

११०६. प्रत्येक स्पर्श प्राणों को नव-स्फूर्ति प्रदान करने के कारण इस अबला के स्कन्ध सुधा से सृजित हैं।

११०७. इस सुवर्ण सुन्दर बाला का आलिंगन, अपने घर में अपने पदार्थ को बाँटकर भोजन करने के समान है।

११०८. ऐसा आलिंगन कि मध्य में वायु भी न रह सके, प्रेमी-प्रेमिका दोनों को सुमधुर होता है।

११०९. प्रणय-कलह, परिज्ञान, परिरम्भन—ये प्रेम-सम्पृक्त द्वारा प्राप्त पारितोषिक हैं।

१११०. अधिकाधिक अध्ययन से अवगत अज्ञान-बोध के समान है वह प्रेम का परिज्ञान जो प्रत्येक बार इस सुवर्णाभरण-भूषिता के परिरम्भन से होता है।

112. நலம் புனைந்துரைத்தல்

1111 நன்னிரை வாழி அனிசசமே நின்னினும்
மெனனீரள யாம்வீழ பவள்.

1112. மலாகாணின் மையாததி நெஞ்சே இவள்கண்
பலாகாணும் பூவொககும் என்று

1113. முறிமேனி முததம் முறுவல் வெறிநாற்றம்
வேலஉணகண வேயததோ ளவட்கு.

1114. காணின குவளை கவிழநது நிலன்நோக்கும்
மாணஇழை கணஒவவேம என்று.

1115. அனிசசப்பூக கால்களையாள் பெய்தாள் நுசுப்பிற்கு
நலல படாஅ பறை.

1116. மதியும் மடந்தை முகனும அறியா
பதியின சலஙகிய மீன.

1117. அறுவாய நிறைநத அவிாமதிககுப் போல
மறுஉண்டோ மாதா முகதது.

1118. மாதா முகம்போல் ஒளிவிட வல்லையேல்
காதலை வாழி மதி.

1119. மலாஅன்ன கண்ணாள முகம் ஒத்தியாயின்
பலாகாணத தோனறல மதி.

1120. அனிசசமும் அன்னத்தின் தூவியும் மாதர்
அடிககு நெருஞ்சிப் பழம்.

११२. सौन्दर्य की सुप्रशंसा

११११. (न्यूनतम भार से युक्त तथा मृदुलतम) हे अनिच्चम पुष्प! धन्य है तू और तेरी कोमलता; परन्तु हम जिसे आलिंगन करते हैं वह प्रणयिनी तुझ से भी कहीं अधिक कोमल है।

१११२. हे हृदय! सब लोग देखनेवाले सुमनों के सदृश अपनी प्रेमिका के नेत्रों को मानकर स्वयं सुन्दर पुष्प देखो तो क्यों व्याकुल होते हो?

१११३. बाँस जैसी बाँहवाली इस बाला के लिए कोंपल ही शरीर, मोती ही दाँत, सुगन्धि ही गन्ध तथा शूल ही अंजन-रजित नेत्र हैं

१११४. कुमुदिनी देख ले तो इस बाला के नेत्रों की तुलना में अपने को तुच्छ मानकर नत-मस्तक हो पृथ्वी की ओर निहारने लगेगी।

१११५. उसने अपने को बिना डण्ठल तोड़े अनिच्चम से आभूषित कर डाला; अतः क्षीण लंक पर सुललित वाद्य न बजेंगे। (अर्थात् कमर टूट गयी)

१११६. चन्द्रमा तथा इस कन्या के मुख में अभेद के भ्रम में पड़कर नक्षत्र आकाश में विचलित हो उठे हैं।

१११७. अपूर्ण मे शनै-शनैः पूर्णता को प्राप्त उस चन्द्र के समान इस कन्या के मुख पर कोई कलंक है?

१११८. हे चन्द्र! युग-युग जियो। यदि तुम इस कन्या के मुख के समान प्रकाश प्रस्फुटित करो तो तुम्हें मेरा प्रेम प्राप्त हो।

१११९. हे चन्द्र! यदि तुम सुमन सदृश नेत्रवाली मेरी सुन्दरी के मुख की समानता चाहो तो सब के नेत्रों में मत पड़ो (केवल मुझे दिखो)।

११२०. अनिच्चम तथा हंस-पंख इस कोमलांगी के पदों के लिए कंटकपूर्ण गोखरू हैं।

113. காதற் சிறப்புரைத்தல்

1121. பாலொடு தேன்கலந் தற்றே பணிமொழி
வால்எயிறு ஊறிய நீர்.

1122. உடம்பொடு உயிரிடை என்ன மற்றுஅன்ன
மடந்தையொடு எம்மிடை நட்பு.

1123. கருமணியிற் பாவாய்நீ போதாய்யாம் வீழும்
திருநுதற்கு இல்லை இடம்.

1124. வாழ்தல் உயிர்க்குஅன்னள் ஆயிழை சாதல்
அதற்குஅன்னள் நீங்கும் இடத்து.

1125. உள்ளுவன் மன்யான் மறப்பின் மறப்புஅறியேன்
ஒள்அமர்க் கண்ணாள் குணம்.

1126. கண்ணுள்ளின் போகார் இமைப்பின் பருவரார்
நுண்ணியர்எம் காத லவர்.

1127. கண்ணுள்ளார் காத லவர்ஆகக் கண்ணும்
எழுதேம் கரப்பாக்கு அறிந்து.

1128. நெஞ்சத்தார் காத லவர்ஆக வெய்துஉண்டல்
அஞ்சுதும் வேபாக்கு அறிந்து.

1129. இமைப்பின் கரப்பாக்கு அறிவல் அனைத்திற்கே
ஏதிலர் என்னும்இவ் ஊர்.

1130. உவந்துஉறைவர் உள்ளத்துள் என்றும் இகந்துஉறைவர்
ஏதிலர் என்னும்இவ் ஊர்.

११३. प्रेम की महिमा

११२१. मधुरभाषिणी (प्रेमिका) के विशुद्ध दाँतों से उत्पन्न नीर मधु-मिश्रित क्षीर के समान है।

११२२. शरीर और प्राण का जैसा सम्बन्ध प्रेमिका और मेरे स्नेह में है।

११२३. मेरी आँख में उपस्थित हे पुतली! ज़रा अपना स्थान रिक्त कर। मेरी प्रेमिका के लिए अन्य कोई उपयुक्त स्थान नहीं है।

११२४. सुन्दर भूषणों से युक्त मेरी प्रेमिका संयोग में मेरे प्राण के लिए जीवन के समान तथा वियोग में मृत्यु के समान है।

११२५. स्मरण तब करूँ यदि मै भूलूँ, पर युद्ध-रत नेत्रोंवाली अपनी प्रेमिका के गुणों को भूलना मैं जानता ही नहीं।

११२६. प्रियतम नेत्रों से नहीं निकलेंगे, सूक्ष्म इतने हैं कि पलकों के चलने पर भी दुखित नहीं होते।

११२७. प्रियतम नेत्रों के अन्दर हैं; अतः उनमें काजल भी नहीं लगाती कि वे कहीं छिप न जायँ।

११२८. प्रियतम हृदय में हैं; अतः गरम वस्तु खाने से डरती हूँ कि कहीं उसका ताप उन्हें न सतावे।

११२९. मैं पलकें भी नहीं मारती कि कही वहाँ उपस्थित प्रियतम छिप न जायँ; इतने ही पर पुरवासी उन्हें हृदयहीन कहते हैं।

११३०. मेरे हृदय में सदा प्रियतम सानन्द निवास करते हैं; परन्तु पुरवासी उनकी निन्दा करते हैं कि वे हृदयहीन हैं।

114. நாணுத் துறவுரைத்தல்

1131. காமம் உழந்து வருநதினுர்ககு ஏமம்
மடல்அல்லது இல்லை வலி.

1132. நோனு உடம்பும உயிரும மடலஏறும்
நாணினை நீககி நிறுதது.

1133. நாணொடு நல்லாண்மை பண்டுஉடையேன் இன்றுஉடையேன்
காமுற்றுர் ஏறும் மடல்.

1134. காமக் கடும்புனல் உய்ககுமே நாணொடு
நல்ஆணமை என்னும் புணை

1135 தொடலைக் குறுநதொடி தந்தாள் மடலொடு
மாலை உழககும் துயர்.

1136. மடலூர்தல யாமததும் உள்ளுவேன் மன்ற
படல்ஒலலா பேதைககுஎன் கண்.

1137. கடல்அனன காமம் உழந்தும் மடல்ஏருப்
பெண்ணிற பெருநதககது இல்

1138. நிறைஅரியா மன்அளியா என்ளுது காமம்
மறைஇறநது மன்று படும்.

1139. அறிகிலாா எல்லாரும் என்றேஎன் காமம்
மறுகின் மறுகும் மருண்டு.

1140. யாமகண்ணின் காண நகுப அறிவில்லார்
யாம்பட்ட தாம்படா வாறு.

११४. लज्जा का त्याग

११३१. काम की असह्य वेदना से दुखित व्यक्ति के लिए अन्तिम सहारा 'मडल'* से अधिक सबल और कोई है ही नहीं।

११३२. वियोग-सहन में असमर्थ शरीर एवं प्राण लज्जा को दूर हटाकर मडल-आरोहण का निश्चय कर चुके हैं।

११३३. लज्जा एवं धैर्य युक्त था पूर्व, पर आज मेरे पास प्रेमियों के चढ़ने का मडल है।

११३४. काम की भयंकर बाढ़ लज्जा एवं धैर्य की मेरी नाव को बहा ले जाती है।

११३५. माला जैसी शृंखलाबद्ध चूड़ियाँ पहनी हुई मेरी प्रेमिका ने मुझे मडल के साथ सायंकालीन दुःख भी दिया।

११३६. मध्य निशा में भी मडल पर चढ़ने का विचार अवश्य करता हूँ; मेरी बेचारी आँखें निद्रा रहित हैं।

११३७. समुद्र सदृश काम से पीड़ित होने पर भी मडल पर चढ़े बिना दुःख को सहनेवाली स्त्री के समान और कोई नहीं है।

११३८. वे मनस्थिति के पारखी नहीं हैं या श्रेष्ठ प्रेमी हैं, इसका विचार किये बिना काम बन्धन को भूलकर समाज में प्रकट हो जाता है।

११३९. ऐसा ही मानकर कि मेरे गुप्त-प्रेम से सब अपरिचित हैं, काम मस्त होकर खुले मार्ग में फिर रहा है।

११४०. मेरे समान प्रेम की पीर को न भुगतने के कारण बुद्धिहीन मेरी आँखों के सामने ही हँसते हैं।

---

* ताड के पत्तों का बना घोडा जिस पर चढकर प्रेमी आत्म-हत्या की बहिरंग घोषणा करता है।

115. அலர் அறிவுறுத்தல்

1141. அலர்எழ ஆர்உயிர் நிற்கும் அதனைப்
பலர்அறியா பாக்கியத் தால்.

1142. மலர்அன்ன கண்ணாள் அருமை அறியாது
அலர்எமக்கு ஈந்ததுஇவ் ஊர்.

1143. உறாஅதோ ஊர்அறிந்த கௌவை அதனைப்
பெறாஅது பெற்றன்ன நீர்த்து.

1144. கவ்வையால் கவ்விது காமம் அதுஇன்றேல்
தவ்வென்னும் தன்மை இழந்து.

1145. களிதொறும் கள்ளுண்டல் வேட்டற்றால் காமம்
வெளிப்படுந் தோறும் இனிது.

1146. கண்டது மன்னும் ஒருநாள் அலர்மன்னும்
திங்களைப் பாம்புகொண் டற்று.

1147. ஊரவர் கௌவை எருவாக அன்னைசொல்
நீராக நீளும்இந் நோய்.

1148. நெய்யால் எரிநுதுப்பேம் என்றற்றால் கௌவையால்
காமம் நுதுப்பேம் எனல்.

1149. அலர்நாண ஒல்வதோ அஞ்சல்ஓம்பு என்றார்
பலர்நாண நீத்தக் கடை.

1150. தாம்வேண்டின் நல்குவர் காதலர் யாம்வேண்டும்
கௌவை எடுக்கும்இவ் வூர்.

११५. प्रवाद का परिज्ञान

११४१ (गुप्त प्रेम का) प्रवाद फैलने के फलस्वरूप मेरे प्राण स्थिर हैं, परन्तु सौभाग्यवश इसे अनेक लोग नहीं जानते।

११४२. पुष्प सदृश नेत्रोंवाली मेरी प्रेमिका की विशेषता से अनभिज्ञ होने के कारण इस नगर ने मुझे प्रवाद प्रदान किया है।

११४३. नगर के सभी लोगों को ज्ञात प्रवाद क्या मेरे लिए अमूल्य नहीं है? इससे वह मुझे प्राप्त न होकर भी मानो प्राप्त हो गयी।

११४४. प्रवाद से प्रेम बढ़ता जा रहा है। अन्यथा वह अपना गुण तजकर सिकुड़ जाता।

११४५. मद के अधिकाधिक पान से मस्ती बढ़ते जाने के समान प्रवाद के अधिकाधिक फैलने पर प्रेम भी आनन्दमय होता जाता है।

११४६. प्रेमी के दर्शन केवल एक दिन ही हुए, परन्तु उससे उत्पन्न प्रवाद चन्द्र को सर्प के ग्रसने के समान सर्वत्र फैल गया।

११४७. प्रेम का यह ज्वर नगर-वासियों के प्रवाद के खाद तथा माता के क्रुद्ध वचन के जल से खूब बढ़ता जायगा।

११४८. प्रवाद से प्रेम को शाँत करने का कथन घृत से अग्नि को शाँत करने के समान है।

११४९. निर्भय रहने का आश्वासन देकर आज वे ही सब के सामने लज्जित कर मुझे छोड़ गये हैं तो इस प्रवाद से क्यों डरूँ?

११५०. मेरे इच्छित प्रवाद को नगर-वासी फैला रहे हैं। अब प्रेमी चाहें तो मेरी सहायता करेंगे।

2. கற்பியல்

116. பிரிவு ஆற்றாமை

1151. செல்லாமை உண்டேல் எனக்குஉரை மற்றுநின்
வல்வரவு வாழ்வார்க்கு உரை.

1152. இன்கண் உடைத்துஅவர் பார்வல் பிரிவஞ்சும்
புன்கண் உடைத்தால் புணாவு.

1153. அரிதரோ தேற்றம் அறிவுடையார் கண்ணும்
பிரிவுஓர் இடத்துஉண்மை யான்.

1154. அளித்துஅஞ்சல் என்றவர் நீப்பின் தெளித்தசொல்
தேறியார்க்கு உண்டோ தவறு

1155. ஓம்பின் அமைந்தார் பிரிவுஓம்பல் மற்றுஅவர்
நீங்கின் அரிதால் புணர்வு.

1156. பிரிவுஉரைக்கும் வன்கண்ணர் ஆயின் அரிதுஅவர்
நல்குவா என்னும் நசை.

1157. துறைவன் துறந்தமை தூற்றுகொல் முன்கை
இறைஇறவா நின்ற வளை.

1158. இன்னாது இனன்இல்ஊர் வாழ்தல் அதனினும்
இன்னாது இனியார்ப் பிரிவு.

1159. தொடின்சுடின் அல்லது காமநோய் போல
விடின்சுடல் ஆற்றுமோ தீ.

1160. அரிதுஆற்றி அல்லல்நோய் நீக்கிப் பிரிவுஆற்றிப்
பின்இருந்து வாழ்வார் பலா.

२. पातिव्रत्य

११६. असह्य वियोग

११५१. (हे प्रियतम!) जाना न हो तो मुझसे कहें, अन्यथा अपने द्रुत प्रत्यागमन का समाचार उनसे कहें जो तब तक जीवित रहेंगे।

११५२. पहले तो उनकी दृष्टि आनन्ददायक थी, पर अब उनका मिलन वियोग-भय-जनित दुःख से पूर्ण है।

११५३. समय-समय पर पृथक होना अवश्यम्भावी होने के कारण मेरी विरह-वेदना से परिचित प्रियतम से भी कभी पृथक न होने का दृढ़ वचन सुनकर विश्वास नहीं किया जाता।

११५४. (वियोग से) निडर रहने का दृढ़ आश्वासन देनेवाले ही छोड़कर चले जायँ तो उनके दृढ़ वचनों पर विश्वास करनेवाली का क्या दोष?

११५५. मुझे बचाना ही है तो शीघ्र उनके वियोग से बचाओ, अन्यथा वियोग के पश्चात् पुनर्मिलन असम्भव है।

११५६. वे वियोग की चर्चा उठानेवाले पत्थर-दिल हों तो लौटकर प्रेम करने की इच्छा भी व्यर्थ है।

११५७. पूर्वतः हाथ की कलाई से न उतरनेवाली मेरी चूड़ियाँ प्रियतम से मेरे वियोग को कैसे न घोषित करेंगी?

११५८. प्रिय बन्धुओं से रहित नगर का निवास दुखद होता है, पर उससे भी अधिक दुखद होता है प्रियतम का वियोग।

११५९. स्पर्श करने पर ही जलानेवाली अग्नि क्या काम-ज्वर के सदृश वियोग होने पर भी जला सकती है?

११६०. असह्य विरह के ज्वर को भी सहते हुए वियोग के पश्चात् जीवन व्यतीत करनेवाले अनेक हैं।

117. படர் மெலிந்திரங்கல்

1161. மறைப்பேன்மன் யான்இஃதோ நோயை இறைப்பவர்க்கு
ஊற்றுநீர் போல மிகும்.

1162. கரத்தலும் ஆற்றேன்இந் நோயைநோய் செய்தார்க்கு
உரைத்தலும் நாணுத் தரும்.

1163. காமமும் நாணும் உயிர்காவாத் தூங்கும்என்
நோனா உடம்பின் அகத்து

1164. காமக் கடல்மன்னும் உண்டே அதுநீந்தும்
ஏமப் புணைமன்னும் இல்.

1165. துப்பின் எவனாவர் மற்கொல் துயர்வரவு
நட்பினுள் ஆற்று பவர்.

1166. இன்பம் கடல்மற்றுக் காமம் அஃதுஅடுங்கால்
துன்பம் அதனிற் பெரிது.

1167. காமக் கடும்புனல் நீந்திக் கரைகாணேன்
யாமத்தும் யானே உளேன்.

1168. மன்னுயிர் எல்லாம் துயிற்றி அளித்துஇரா
என்அல்லது இல்லை துணை.

1169. கொடியார் கொடுமையின் தாம்கொடிய இந்நாள்
நெடிய கழியும் இரா.

1170. உள்ளம்போன்று உள்வழிச் செல்கிற்பின் வெள்ளநீர்
நீந்தல மன்னோஎன் கண்.

११७. विरहिणी का विलाप

११६१. मैं इस ज्वर को छिपा तो लूँ; परन्तु स्रोत का जल निकाले जाने पर भी पुनः भर जाने के समान यह बढ़ जाता है।

११६२. इस काम-वेदना को छिपाया भी नहीं जाता और इसे पहुँचानेवाले प्रेमी से कहने में भी लज्जा आती है।

११६३. असह्य वेदना-ग्रस्त मेरे शरीर में प्राण रूपी डण्डे के दोनों छोरों पर काम और लज्जा लटके हुए हैं।

११६४. काम-वेदना का समुद्र उपस्थित है, परन्तु उसे पार करने के लिए आवश्यक साधन रूपी नाव नहीं है।

११६५. प्रेम में ही दुःख देनेवाले, शत्रु बनने पर न जाने क्या-क्या कर बैठेंगे !

११६६. काम (संयोग के समय) आनन्द का समुद्र होता है, परन्तु (वियोग में) उसका दुःख समुद्र से भी विशाल होता है।

११६७. मैं काम के घोर प्रवाह के किनारे को तैरकर भी पा न सकी; अर्ध रात्रि में भी अकेली ही हूँ।

११६८. सम्पूर्ण जीव-राशि को अपनी गोद में सुलानेवाली इस बेचारी रात्रि के लिए यहाँ मेरे अतिरिक्त और कोई सहायक नहीं है।

११६९. निष्ठुर प्रियतम की निर्ममता से भी अधिक कठोर हैं इन दिनों की रातें जो लम्बी होकर बीत रही हैं।

११७०. मैं भी अपने हृदय के समान प्रियतम के पास जा पाती तो आँखों को अश्रु-प्रवाह में तैरने की आवश्यकता न होती।

118. கண்விதுப்பழிதல்

1171. கண்தாம் கலுழ்வது எவன்கொலோ தண்டாநோய்
தாம்காட்ட யாம்கண் டது.

1172. தெரிந்துஉணரா நோக்கிய உண்கண் பரிந்துஉணராப்
பைதல் உழப்பது எவன்.

1173. கதுமெனத் தாம்நோக்கித் தாமே கலுழும்
இதுநகத் தக்கது உடைத்து.

1174. பெயல்ஆற்றா நீர்உலந்த உண்கண் உயல்ஆற்றா
உய்வுஇல்நோய் என்கண் நிறுத்து.

1175. படல்ஆற்றா பைதல் உழக்கும் கடல்ஆற்றாக்
காமநோய் செய்தஎன் கண்.

1176. ஓஒ இனிதே எமக்குஇந்நோய் செய்தகண்
தாஅம் இதற்பட் டது.

1177. உழந்துழந்து உள்நீர் அறுக விழைந்துஇழைந்து
வேண்டி அவர்க்கண்ட கண்.

1178. பேணாது பெட்டார் உளர்மன்னோ மற்றவர்க்
காணாது அமைவில கண்.

1179. வாராக்கால் துஞ்சா வரின்துஞ்சா ஆயிடை
ஆரஞர் உற்றன கண்.

1180. மறைபெறல் ஊரார்க்கு அரிதன்றால் எம்போல்
அறைபறை கண்ணார் அகத்து.

११८. वेदनापूर्ण नेत्र

११७१. इन्हीं नेत्रों के दिखाने पर मेरे देखने से यह असह्य काम-वेदना मुझे बाधित कर रही है, तो ये नेत्र स्वयं क्यों विलाप करते हैं?

११७२. जिन कामुक नेत्रों ने पूर्व बिना विचारे देखा, वे ही अब विश्लेषण किये बिना दुःख का अनुभव क्यों करें!

११७३. उस दिन प्रियतम को नेत्रों ने स्वयं भागकर देखा था, पर आज वे स्वयं विलाप कर रहे हैं। यह वस्तुतः हास्यप्रद ही है।

११७४. असह्य व अनन्त काम-वेदना मुझ में उत्पन्न करके मेरे ये कामुक नेत्र स्वयं रो-रोकर सूख गये हैं।

११७५. समुद्र से भी विशाल असह्य काम-वेदना उत्पन्न करनेवाले मेरे ये नेत्र अब निद्राहीन हो वेदना से पीड़ित हैं।

११७६. मुझ में इस प्रकार की काम-वेदना उत्पन्न करनेवाले मेरे ये नेत्र अब दुःख से पीड़ित हैं। यह अच्छा ही हुआ।

११७७. अत्यधिक काम-वश हो प्रियतम को देखनेवाले मेरे ये नेत्र अब वेदना सह-सहकर अश्रुहीन रह जायँ!

११७८. हृदय के बिना (केवल शब्दों से ही) प्रेम दिखानेवाले हैं वे। उन्हें न देख नेत्र अशाँत हैं।

११७९. प्रियतम न आवें तो निद्रा नहीं आती; और अगर आ भी जायँ तब भी नहीं आती। इनके मध्य में मेरे ये नेत्र असह्य दुःख से पीड़ित हैं।

११८०. ढिंढोरा पीटनेवाले मेरे जैसे नेत्र जिसके हों उनके हृदय की गुप्त बातों को समझना दूसरों के लिए कठिन नहीं है।

119. பசப்புறு பருவரல்

1181. நயந்தவர்க்கு நல்காமை நேர்ந்தேன் பசந்தஎன்
பண்பியார்க்கு உரைக்கோ பிற.

1182. அவர்தந்தார் என்னும் தகையால் இவர்தந்துஎன்
மேனிமேல் ஊரும் பசப்பு

1183. சாயலும் நாணும் அவர்கொண்டார் கைம்மாறு
நோயும் பசலையும் தந்து.

1184. உள்ளுவன் மன்யான் உரைப்பது அவர்திறமால்
கள்ளம் பிறவோ பசப்பு.

1185. உவக்காண்எம் காதலர் செல்வார் இவக்காண்என்
மேனி பசப்புஊர் வது.

1186. விளக்குஅற்றம் பார்க்கும் இருளேபோல் கொண்கன்
முயக்குஅற்றம் பார்க்கும் பசப்பு

1187. புல்லிக் கிடந்தேன் புடைபெயர்ந்தேன் அவ்வளவில்
அள்ளிக்கொள் வற்றே பசப்பு.

1188. பசந்தாள் இவள்என்பது அல்லால் இவளைத்
துறந்தார் அவர்என்பார் இல்.

1189. பசக்கமன் பட்டாங்குஎன் மேனி நயப்பித்தார்
நன்னிலையர் ஆவர் எனின்.

1190. பசப்புஎனப் பேர்பெறுதல் நன்றே நயப்பித்தார்
நல்காமை தூற்றார் எனின்.

११९. पीलेपन की व्यथा

११८१. मैं स्वयं प्रियतम के बिछुड़ते समय सहमत हुई। अब अपने पीलेपन की व्यथा किससे कहूँ ?

११८२. यह पीलापन उस प्रिमतम प्रदत्त होने के अहंकार के साथ मेरे सम्पूर्ण शरीर पर फैलता जा रहा है।

११८३. मेरा लावण्य एवं लज्जा तो वे ले गये, और प्रतिफल स्वरूप विरह-वेदना और पीलापन मुझे दे गये।

११८४. मैं उनके श्रेष्ठ गुणों का ही विचार और उनका ही गुण-गान करती हूँ। तो फिर मुझ पर यह पीलापन क्यों ? यह धोखा तो नहीं है ?

११८५. वह देखो ! प्रियतम मुझे छोड़े जा रहे हैं ! यह देखो ! मेरा शरीर पीला पड़ता जा रहा है !

११८६. दीपक के लुप्त होने की प्रतीक्षा करनेवाले अन्धकार के समान मेरे प्रियतम के गाढ़ालिगन से अलग होने की प्रतीक्षा पीलापन करता रहता है।

११८७. गाढ़ालिंगन में बँधी पड़ी थी। क्षण मात्र के लिए अलग हुई कि इतने में पीलेपन ने मानो मुझे निगल ही डाल।

११८८. सब यही कहते हैं कि मैं पीली पड़ गयी। पर यह कहनेवाला कोई नहीं कि मुझे वे छोड़कर चले गये।

११८९. मना कर गये हुए मेरे प्रियतम सचमुच गुणी हैं तो मेरा शरीर ऐसा ही पीलापन लिये रहे।

११९०. यदि लोग मना कर गये हुए मेरे प्रियतम के वियोग की निन्दा न करें तो मेरे पीलेपन की वार्ता प्रिय ही होगी।

120. தனிப் படர் மிகுதி

1191. தாம்விழவார் தம்விழப் பெற்றவர் பெற்றரே
காமத்துக காழ்இல் கனி.

1192. வாழ்வாாகு வானம் பயந்தற்ருல் வீழ்வார்க்கு
வீழ்வார் அளிக்கும் அளி.

1193. வீழுநர் வீழப் படுவார்கது அமையுமே
வாழுநம் என்னும் செருக்கு.

1194. வீழப் படுவார் கெழீஇயிலர் தாம்வீழ்வார்
வீழப் படாஅர் எனின்.

1195. நாம்காதல் கொண்டார் நமககுஎவன் செய்பவோ
தாம்காதல் கொள்ளாக் கடை.

1196. ஒருதலையான் இன்னுது காமம்காப் போல
இருதலை யானும் இனிது.

1197. பருவரலும் பைதலும் காணுன்கொல் காமன்
ஒருவர்கண் நின்றுஒழுகு வான்.

1198. வீழ்வாரின் இன்சொல் பெருஅது உலகத்து
வாழ்வாரின் வன்கணுர் இல்.

1199. நசைஇயார் நல்கார் எனினும் அவர்மாட்டு
இசையும் இனிய செவிக்கு.

1200. உருஅர்க்கு உறுநோய் உரைப்பாய் கடலைச்
செருஅஅய் வாழிய நெஞ்சு.

१२०. वियोग में विरहाधिक्य

११९१. बीज रहित प्रेम-फल को वे ही प्रेमिकाएँ प्राप्त करती हैं जिनके प्रियतम भी समान प्रेम करते हैं।

११९२. जीवों के लिए मेघ-वर्षा के समान होता है प्रियतम का अपनी प्रेमिका के प्रति प्रेम।

११९३. प्रियतम का प्रेम प्राप्त प्रेमिका (वियोग में भी) अपने भावी जीवन का विचार कर अवश्य गर्व करेगी।

११९४. प्रियतम का प्रेम प्राप्त न हो तो, लोक-सम्मानित होने पर भी वे (प्रेमिकायें) सौभाग्यवती नहीं होतीं।

११९५. हम जिससे प्रेम करते हैं वह यदि स्वयं हम से प्रेम न करे तो उससे हमारा क्या काम बनेगा?

११९६. एक पक्ष का (प्रेम) निरानंद होता है; तुला के समान दोनों ओर से समान होने पर ही आनन्दप्रद होता है।

११९७. मदन (उभय प्रेमियों में से) एक के पास ही स्थिर रहने के कारण, क्या मेरे दुःख और दर्द को नहीं देखता?

११९८. प्रियतम के मधुर शब्दों को प्राप्त न करके भी संसार में जीवित रहनेवाली (मुझ जैसी) स्त्री से अधिक कठोर हृदय कोई नहीं।

११९९. लौटकर प्रियतम के प्रेम न करने पर भी उनकी प्रशंसा को सुनना मेरे कानों को मधुर प्रतीत होता है।

१२००. जियो मेरे हृदय! अपने अपार दुःख को उस प्रेमहीन से व्यक्त करते हो! अच्छा हो, यदि समुद्र को सुखाने का प्रयत्न करो (जो उससे सुलभ है)!

121. நினைந்தவர் புலம்பல்

1201 உள்ளினும் தீராப் பெருமகிழ் செய்தலால்
கள்ளினும் காமம் இனிது.

1202. எனைத்துஒன்று இனிதேகாண் காமம்தாம் வீழ்வார்
நினைப்ப வருவதுஒன்று இல்.

1203. நினைப்பவர் போன்று நினையார்கொல் தும்மல்
சினைப்பது போன்று கெடும்.

1204. யாமும் உளேம்கொல அவாநெஞ்சத்து எம்நெஞ்சத்து
ஓஒ உளரே அவர்.

1205. தம்நெஞ்சத்து எம்மைக் கடிகொண்டார் நாணார்கொல்
எமநெஞ்சத்து ஓவா வரல்.

1206. மற்றுயான் என்னுளேன் மன்னோ அவரொடுயான்
உற்றநாள் உள்ள உளேன்.

1207. மறப்பின் எவனாவன் மற்கொல் மறப்புஅறியேன்
உளளினும் உள்ளம சுடும்.

1208. எனைத்து நினைப்பினும் காயார் அனைத்துஅன்றோ
காதலர் செய்யும் சிறப்பு.

1209. விளியும்என் இன்உயிர் வேறல்லம் என்பார்
அளியின்மை ஆற்ற நினைந்து.

1210. விடாஅது சென்றாரை கண்ணினால் காணப்
படாஅதி வாழி மதி.

१२१. एकाकी में स्मरण

१२०१. स्मरण भी अनन्त आनन्दप्रद होने के कारण प्रेम मद्य से भी अधिक मधुर होता है।

१२०२. प्रियतम के स्मरण मात्र से ही (वियोग-जनित) सम्पूर्ण दुःख अगोचर हो जाते हैं। अतः प्रेम किसी भी मात्रा में मधुर ही होता है।

१२०३. छींक आती-आती रह गयी। क्या, प्रियतम मेरा स्मरण करनेवाले जैसे बन कर अब स्मरण ही नहीं करते?

१२०४. मेरे हृदय में वे अवश्य उपस्थित हैं। क्या मेरे लिए भी उनके हृदय में स्थान है?

१२०५. अपने हृदय से मुझे अलग रखनेवाले (प्रियतम) सतत मेरे हृदय में प्रवेश करते क्या लज्जित नहीं होते?

१२०६. उनके साथ मेरे संयोग के उन दिनों के स्मरण से ही मैं जीवित हूँ, अन्यथा कैसे जीवित रहती?

१२०७. विस्मरण? यह मुझे अज्ञात है। उनका स्मरण ही हृदय को उत्तप्त कर देता है तो उनके पूर्ण विस्मरण से मेरी क्या दशा होगी!

१२०८. प्रियतम का कितना ही स्मरण क्यों न करूँ, वे रुष्ट न होंगे। यह है उनका श्रेष्ठ उपकार।

१२०९. 'हम दो नहीं हैं' ऐसा कहनेवाले मेरे उस प्रियतम में प्रेम के अभाव का स्मरण करके स्नेह-युक्त मेरे प्राण सूखे जा रहे हैं।

१२१०. हे चन्द्र! अभिन्न रहकर अन्त में बिछुड़े हुए प्रियतम को मै जब तक आँखों से न देख लूँ तब तक यहीं बने रहो।

122. கனவுநிலை உரைத்தல்

1211. காதலர் தூதொடு வந்த கனவினுக்கு
யாதுசெய் வேன்கொல் விருந்து.

1212. கயலுண்கண் யான்இரப்பத் துஞ்சின் கலந்தார்க்கு
உயலுண்மை சாற்றுவேன் மன்.

1213. நனவினான் நல்கா தவரைக் கனவினான்
காண்டலின் உண்டென் உயிர்.

1214 கனவினான் உண்டாகும் காமம் நனவினான்
நல்காரை நாடித் தரற்கு.

1215. நனவினான் கண்டதூஉம் ஆங்கே கனவும்தான்
கண்ட பொழுதே இனிது.

1216. நனவுஎன ஒன்றுஇல்லை ஆயின் கனவினான்
காதலர் நீங்கலர் மன்.

1217. நனவினான் நல்காக் கொடியார் கனவினான்
என்எம்மைப் பீழிப் பது.

1218. துஞ்சுங்கால் தோள்மேல ராகி விழிக்குங்கால்
நெஞ்சத்தர் ஆவர் விரைந்து.

1219. நனவினான் நல்காரை நோவா கனவினான்
காதலாக் காணா தவர்.

1220. நனவினான் நம்நீத்தார் என்பர் கனவினான்
காணார்கொல் இவ்வூ ரவர்.

१२२. स्वप्नावस्था का वर्णन

१२११. प्रियतम का सन्देश लानेवाले उस स्वप्न का आतिथ्य मैं किस प्रकार करूँ ?

१२१२. मेरी इच्छा के अनुसार नेत्र निद्रामग्न हो जायँ तो स्वप्न में आ मिलनेवाले (प्रियतम) से अपने बचे रहने के मर्म को व्यक्त करूँ।

१२१३. जाग्रतावस्था में अप्राप्त प्रियतम को कम से कम स्वप्नावस्था में देख पाने के कारण ही मेरे प्राण टिके हुए हैं।

१२१४. स्वप्न के प्रेम-व्यवहार जाग्रतावस्था में प्रेम न करनेवाले प्रियतम को खोज लाने के लिए ही हैं।

१२१५. जाग्रतावस्था का आनन्द संयोग के समय ही रहा। स्वप्न भी देखने भर तक मधुर होता है।

१२१६. 'जाग्रत' नामक अवस्था न रहे तो स्वप्न में प्रियतम मुझसे कभी पृथक न हों।

१२१७. जाग्रतावस्था में प्रेम न करनेवाले निष्ठुर प्रियतम स्वप्न में आकर क्यों मुझे तंग करते हैं ?

१२१८. निद्रा के समय स्वप्न में स्कन्धों पर स्थित रहकर जागते ही शीघ्र हृदय में प्रविष्ट हो जाते हैं।

१२१९. स्वप्न में प्रियतम के दर्शन न करनेवाली ही जाग्रत में प्रेम न करनेवाले प्रियतम को भला-बुरा कहेंगी।

१२२०. 'जाग्रत में (प्रियतम) मुझे छोड़ गये' ऐसा कहनेवाली, क्या स्वप्न में उनके दर्शन नहीं करतीं ?

123. பொழுதுகண்டு இரங்கல்

1221. மாலையோ அல்லை மணந்தார் உயிர்உண்ணும்
வேலைநீ வாழி பொழுது.

1222. புன்கண்ணை வாழி மருள்மாலை எம்கேள்போல்
வன்கண்ண தோநின் துணை.

1223. பனிஅரும்பிப் பைதல்கொள் மாலை துனிஅரும்பித்
துன்பம் வளர வரும்.

1224. காதலர் இல்வழி மாலை கொலைக்களத்து
ஏதிலர் போல வரும்.

1225. காலைக்குச் செய்தநன்று என்கொல் எவன்கொல்யான்
மாலைக்குச் செய்த பகை.

1226. மாலைநோய் செய்தல் மணந்தார் அகலாத
காலை அறிந்தது இலேன்.

1227. காலை அரும்பிப் பகல்எல்லாம் போதாகி
மாலை மலரும்இந் நோய்.

1228. அழல்போலும் மாலைக்குத் தூதாகி ஆயன்
குழல்போலும் கொல்லும் படை.

1229 பதிமருண்டு பைதல் உழக்கும் மதிமருண்டு
மாலை படர்தரும் போழ்து.

1230. பொருள்மாலை யாளரை உள்ளி மருள்மாலை
மாயும்என் மாயா உயிர்.

१२३. सान्ध्य-वेदना

१२२१. सन्ध्या ? नहीं प्रेमियों की प्राण-भक्षिणी अन्तिम अवधि है। सन्ध्ये! तू धन्य है।

१२२२ हे मन्द-प्रभा सन्ध्ये! धन्य है! क्या तू भी मेरे समान दुखी है? तेरा सहयोगी भी क्या मेरे प्रियपम के समान निर्दय है?

१२२३. ओस-कण युक्त मन्द-प्रभा सन्ध्या अब मुझे अधिकाधिक पीड़ा देती हुई बढ़ती ही चली आ रही है?

१२२४. प्रियतम की अनुपस्थिति में सन्ध्या ऐसी आती है जैसे शूली चढ़ाने के स्थल पर जल्लाद।

१२२५. प्रातःकाल का मैंने उपकार ही क्या किया था, और दुःखदायिनी इस सन्ध्या का क्या अपकार?

१२२६. प्रियतम के साथ संयोग में रहते समय मै सन्ध्या के इस दुःखप्रद व्यवहार से अज्ञात थी।

१२२७. (प्रेम की) यह बीमारी प्रातःकाल कली-सी रहकर सम्पूर्ण दिवस क्रमशः बढ़कर सन्ध्या में पूर्णतः विकसित हो उठती है।

१२२८. अग्नि सदृश दुःखदायिनी सन्ध्या की दूती बनकर ग्वाले की मुरली मेरे लिए संहारक शस्त्र के समान है।

१२२९. बुद्धि को विकार-ग्रस्त करती हुई ढलनेवाली सन्ध्या के साथ-साथ यह नगर भी विकार-ग्रस्त हो दुखी होगा।

१२३०. धनोपार्जन के हेतु गये हुए प्रियतम का स्मरण कर (विरह में भी) बचे हुए मेरे प्राण इस विकार-ग्रस्ता सन्ध्या में कूँच कर रहे हैं।

124. உறுப்புநலன் அழிதல்

1231. சிறுமை நமகொழியச் சேண்சென்றார் உள்ளி
நறுமலர் நாணின கண்.

1232. நயந்தவர் நல்காமை சொல்லுவ போலும்
பசந்து பனிவாரும் கண.

1233. தணந்தமை சால அறிவிப்ப போலும்
மணந்தநாள் விங்கிய தோள்.

1234. பணைநீங்கிப் பைந்தொடி சோரும் துணைநீங்கித்
தொல்கவின் வாடிய தோள்.

1235. கொடியார் கொடுமை உரைக்கும் தொடியொடு
தொல்கவின் வாடிய தோள்.

1236. தொடியொடு தோள்நெகிழ நோவல் அவரைக்
கொடியர் எனக்கூறல் நொந்து.

1237. பாடு பெறுதியோ நெஞ்சே கொடியார்க்கென்
வாடுதோள் பூசல் உரைத்து.

1238. முயங்கிய கைகளை ஊக்கப் பசந்தது
பைந்தொடிப் பேதை நுதல்.

1239. முயக்கிடைத் தண்வளி போழப் பசப்புற்ற
பேதை பெருமழைக் கண்.

1240. கண்ணின் பசப்போ பருவரல் எய்தின்றே
ஒண்ணுதல் செய்தது கண்டு

१२४. अंग-सौन्दर्य की क्षति

१२३१. मुझे विरह-वेदना देकर विदेश गये हुए प्रियतम के स्मरण से (मेरे क्षीण हो जाने के कारण) नेत्र सुन्दर सुमनों के सम्मुख लज्जित हुए।

१२३२. पीली रोती हुई आँखें प्रियतम का प्रेम प्राप्त न होने की मानो घोषणा कर रहे हैं।

१२३३. संयोग के दिन फूले हुए स्कन्ध आज (ढीले पड़कर) वियोग को मानो स्पष्टतः व्यक्त कर रहे हैं।

१२३४. प्रियतम के वियोग के कारण स्कन्ध के सौन्दर्य-च्युत हो सिकुड़कर क्षीण पड़ने से चूड़ियाँ भी फिसलती जा रही हैं।

१२३५. भूतकालीन सहज सौन्दर्य से च्युत, चूड़ियों को फिसलानेवाले सिकुड़े हुए स्कन्ध निष्ठुर प्रियतम की निर्ममता को व्यक्त कर रहे हैं।

१२३६. फिसलती चूड़ियों तथा सिकुड़े स्कन्धों को देख प्रियतम को 'निष्ठुर' कहते सुनकर मैं दुखित हूँ।

१२३७. हे हृदय! उस निष्ठुर प्रियतम से मेरे सिकुड़े हुए स्कन्धों की विवशता को व्यक्त करके क्या गौरवान्वित होना चाहते हो?

१२३८. आलिंगित करों को तनिक ढीला किया कि सुन्दर चूड़ियों से भूषित उस बेचारी का माथा पीला पड़ गया।

१२३९. गाढ़ालिंगन के मध्य तनिक शीतल वायु के प्रवेश के कारण बेचारी के विशाल शीतल नेत्र तुरन्त पीले पड़ गये।

१२४०. प्रेमिका का प्रकाशपूर्ण माथा पीला पड़ते देख उस (प्रियतम) के नेत्र भी पीले हो पीड़ित हुए।

125. நெஞ்சொடு கிளத்தல்

1241. நினைத்துஒன்று சொல்லாயோ நெஞ்சே எனைத்தொன்றும்
எவ்வநோய் தீர்க்கும் மருந்து.

1242. காதல் அவர்இல ராகநீ நோவது
பேதைமை வாழிஎன் நெஞ்சு.

1243. இருந்துஉள்ளி என்பரிதல் நெஞ்சே பரிந்துஉள்ளல்
பைதல்நோய் செய்தார்கண் இல்.

1244. கண்ணும் கொளச்சேறி நெஞ்சே இவைஎன்னைத்
தின்னும் அவர்க்காணல் உற்று.

1245 செற்றார் எனக்கை விடல்உண்டோ நெஞ்சேயாம்
உற்றால் உறாஅ தவர்.

1246. கலந்துஉணர்த்தும் காதலர்க் கண்டால் புலந்துஉணராய்
பொய்க்காய்வு காய்திஎன் நெஞ்சு

1247. காமம் விடுஒன்றோ நாண்விடு நல்நெஞ்சே
யானோ பொறேன்இவ் இரண்டு.

1248. பரிந்தவர் நல்காரென்று ஏங்கிப் பிரிந்தவர்
பின்செல்வாய் பேதைஎன் நெஞ்சு.

1249. உள்ளத்தார் காத லவர்ஆக உள்ளிநீ
யாருழைச் சேறிஎன் நெஞ்சு.

1250. துன்னாத் துறந்தாரை நெஞ்சத்து உடையேமா
இன்னும் இழத்தும் கவின்.

१२५. स्वगत-संलाप

१२४१. हे हृदय! ध्यान से विचार कर इस प्रेम की बीमारी को मिटाने का कोई औषध नहीं बताओगे?

१२४२. हे हृदय! तू धन्य है! उनमें प्रेम न होते हुए भी तेरा दुखित होना केवल अज्ञान है।

१२४३. हे हृदय! मुझ में उपस्थित रहकर उनका स्मरण करके व्यथित क्यों होते हो? इस व्यथा के उत्पादक के मन में तेरे लिए सस्नेह स्मरण तक नहीं है।

१२४४. हे हृदय! नेत्रों को भी साथ ले चलो। उनके दर्शनार्थ ये मेरी जान खा रहे हैं।

१२४५. हे हृदय! हमारे प्रेम करने पर भी वे निर्मम (प्रियतम) चले गये हों तो क्या हम भी उन्हें छोड़ सकती है?

१२४६. हे हृदय! तू वस्तुतः मिथ्या क्रोध से सूख रहा है; (क्योंकि) संयोग होते ही सन्तृप्त करनेवाले प्रियतम के दर्शन मात्र से तू सारा विरोध भूल बैठता है।

१२४७. हे मेरे अच्छे हृदय! या तो प्रेम को त्याग, नहीं तो लज्जा को। मैं इन दोनों को (एक साथ) नहीं सह सकती।

१२४८. हे मेरे भोले हृदय! बिछुड़े हुए प्रियतम प्राप्त न होने के कारण सिसक-सिसक कर उन्हीं के पीछे चलते हो?

१२४९. हे मेरे हृदय! मुझ में ही उपस्थित हैं मेरे प्रियतम; उनका स्मरण करके किनके पास उन्हें खोजने जा रहे हो?

१२५०. साथ न रहकर पूर्णतः त्याग करनेवाले को हृदय में बनाये रखने पर भी हम सौन्दर्य खो बैठती हैं।

126. நிறையழிதல்

1251. காமக் கணிச்சி உடைக்கும் நிறைஎன்னும்
நாணுத்தாழ் வீழ்த்த கதவு.

1252. காமம்என ஒன்றோ கண்ணின்றுஎன் நெஞ்சத்தை
யாமத்தும் ஆளும் தொழில்.

1253 மறைப்பேன்மன் காமத்தை யானோ குறிப்புஇன்றித்
தும்மல்போல் தோன்றி விடும்.

1254 நிறையுடையேன் என்பேன்மன் யானோஎன் காமம்
மறைஇறந்து மன்று படும்.

1255. செற்றார்பின் செல்லாப் பெருந்தகைமை காமநோய்
உற்றார் அறிவதுஒன்று அன்று.

1256. செற்றவர் பின்சேறல் வேண்டி அளித்தரோ
எற்றுஎன்னை உற்ற துயர்.

1257. நாண்என ஒன்றோ அறியலம் காமத்தால்
பேணியார் பெட்ப செயின்.

1258. பல்மாயக் கள்வன் பணிமொழி அன்றோநம்
பெண்மை உடைக்கும் படை.

1259. புலப்பல் எனச்சென்றேன் புல்லினேன் நெஞ்சம்
கலத்தல் உறுவது கண்டு.

1260 நிணம்தீயில் இட்டன்ன நெஞ்சினார்க்கு உண்டோ
புணர்ந்துஊடி நிற்பேம் எனல்.

१२६. मान-भंग

१२५१. मान नामक लज्जा की चटखनी से युक्त किवाड़ों को प्रेम की कुल्हाड़ी फोड़ देती है।

१२५२. प्रेम निर्दय होता है। वह मध्य निशा में भी मेरे हृदय पर अधिकार जताता है!

१२५३. मैं प्रेम को अपने में ही छिपाने का प्रयत्न तो करती हूँ, परन्तु वह छींक के समान बिना किसी सूचना के व्यक्त हो ही जाता है।

१२५४. मैं तो अपने को सम्मान युक्त समझे बैठी थी, परन्तु मेरा प्रेम सीमा को लाँघ कर प्रकाश्य रूप से व्यक्त हो ही जाता है।

१२५५. छोड़ कर गये हुए प्रियतम के पीछे न जाने के गौरवपूर्ण व्यवहार को प्रेम-रोग से पीड़ित व्यक्ति नहीं जानते।

१२५६. मुझे व्याप्त की हुई इस पीड़ा का स्वभाव ही कैसा है कि छोड़ कर गये हुए (उस निष्ठुर प्रियतम) के ही पीछे भागता है!

१२५७. प्रियतम सप्रेम मेरे इच्छित कर्म करें तो लज्जा नामक उस एक गुण को ही भूल जाऊँ।

१२५८. अनेक मायाओं से युक्त उस (प्रियतम) चोर के दीन वचन हमारे स्त्रीत्व को भंग करनेवाली सेना ही तो है?

१२५९. मैं तो कलह करने के विचार से गयी, परन्तु हृदय उनसे मिल जाने के कारण आलिंगन कर बैठी।

१२६०. अग्नि में पिघलनेवाले मोम सदृश हृदयवाली स्त्री में संयोग होने पर भी कहीं कलह करने का स्वभाव ठहर सकता है?

127. அவர்வயின் விதும்பல்

1261. வாள்அற்றுப் புற்கென்ற கண்ணும் அவர்சென்ற
நாள்ஒற்றித் தேய்ந்த விரல்.

1262. இலங்கிழாய் இன்று மறப்பின்என் தோள்மேல்
கலங்கழியும் காரிகை நீத்து.

1263. உரன்நசைஇ உள்ளம் துணையாகச் சென்றார்
வரல்நசைஇ இன்னும் உளேன்.

1264. கூடிய காமம் பிரிந்தார் வரவுஉள்ளிக்
கோடுகொடு ஏறும்என் நெஞ்சு.

1265. காண்கமன் கொண்கனைக் கண்ணாரக் கண்டபின்
நீங்கும்என் மென்தோள் பசப்பு.

1266. வருகமன் கொண்கன் ஒருநாள் பருகுவன்
பைதல்நோய் எல்லாம் கெட.

1267. புலப்பேன்கொல் புல்லுவேன் கொல்லோ கலப்பேன்கொல்
கண்அன்ன கேளிர் வரின்.

1268. வினைகலந்து வென்றீக வேந்தன் மனைகலந்து
மாலை அயர்கம் விருந்து.

1269. ஒருநாள் எழுநாள்போற் செல்லும்சேண் சென்றார்
வருநாளை வைத்துஏங்கு பவர்க்கு.

1270. பெறின்என்னாம் பெற்றக்கால் என்னாம் உறின்என்னாம்
உள்ளம் உடைந்துஉக்கக் கால்.

१२७. संयोग की उत्कट अभिलाषा

१२६१. प्रियतम की बाट जोहते-जोहते नेत्रों की शक्ति जाती रही और उनके जाने से दिनों को अंकित करते-करते उँगलियाँ घिस गयीं।

१२६२. विरह-वेदना से व्यथित मैं आज उन्हें भूल जाऊँ तो शरीर सौन्दर्यहीन हो, स्कन्धों पर पहने हुए आभूषण भी गिर जायेंगे।

१२६३. विजय-वांछा एवं उत्साह की सहायता से गये हुए प्रियतम के आगमन के दर्शनार्थ ही अब भी जीवित हूँ।

१२६४. संयोग-सुख को त्याग कर गये हुए प्रियतम के प्रत्यागमन के स्मरण मात्र से मेरा हृदय वृक्ष की शाखा पर चढ़कर देखने लगता है। (अर्थात् फूलने लगता है।)

१२६५. आँखें भरकर प्रियतम को देखूँ। देखने पर मेरे कोमल स्कन्धों का पीलापन स्वतः दूर हो जायगा।

१२६६. मेरे प्रियतम एक दिन लौटकर आ जायँ तो मैं उन्हें (आँखें भरकर) ऐसा देखूँ कि सम्पूर्ण प्रेम-रोग उड़ जाय।

१२६७. नयन जैसे मेरे प्रियतम आ जायँ तो मैं कलह करूँगी या आलिंगन या दोनों?

१२६८. सम्राट् इस युद्ध में कर्म-रत हो विजयी होवें और मैं घर जाकर सायंकाल के समय (प्रेमिका का) आतिथ्य स्वीकार करूँ।

१२६९. प्रोषित-पतिका के लिए एक दिन सात दिनों के समान होता है।

१२७०. (विरहाधिक्य के फलस्वरूप) हृदय के विदीर्ण होने के

128. குறிப்பறிவுறுத்தல்

1271. கரப்பினும் கைஇகந்து ஒல்லாநின் உண்கண்
உரைககல் உறுவதுஒன்று உண்டு.

1272. கண்நிறைந்த காரிகைக் காம்புஏர்தோள் பேதைக்குப்
பெண்நிறைந்த நீர்மை பெரிது.

1273. மணியுள் திகழ்தரு நூல்போல் மடந்தை
அணியுள் திகழவதுஒன்று உண்டு.

1274. முகைமொக்குள் உள்ளது நாற்றம்போல் பேதை
நகைமொககுள் உள்ளதுஒன்று உண்டு.

1275. செறிதொடி செய்துஇறந்த கள்ளம் உறுதுயா
தீாகும் மருந்துஒன்று உடைத்து.

1276. பெரிதுஆற்றிப் பெட்பக் கலத்தல் அரிதுஆற்றி
அன்பின்மை சூழ்வது உடைதது.

1277. தண்ணந் துறைவன் தணந்தமை நம்மினும்
முன்னம் உணர்நத வளை,

1278. நெருநற்றுச் சென்றார்எம காதலர் யாமும்
எழுநாளேம் மேனி பசந்து.

1279. தொடிநோக்கி மென்தோளும் நோக்கி அடிநோக்கி
அஃதுஆண்டு அவள்செய் தது.

1280. பெண்ணினால் பெண்மை உடைத்துஎன்ப கண்ணினால்
காமநோய் சொல்லி இரவு.

१२८. संकेताभिव्यक्ति

१२७१. छिपाने पर भी निर्बन्ध हो सीमोल्लंघन करके तुम्हारे अपने नेत्र अभिव्यक्त करनेवाला विषय एक है।

१२७२. विशाल नेत्र एवं बाँस जैसी स्कन्धोंवाली इस बेचारी में स्त्रियोचित सरल स्वभाव अत्यधिक है।

१२७३. मणि-माला में उपस्थित सूत्र के समान प्रियतमा के सौन्दर्य में सन्निहित एक संकेत उपस्थित है।

१२७४. सुमन-मुकुल में उपस्थित सुगन्धि के समान इस सरला के स्मित हास्य में एक संकेत-विशेष उपस्थित है।

१२७५. घनी चूड़ियों से युक्त मेरी प्रेयसी के कुछ करके छिप जाने में उपस्थित संकेत मेरी हृदय-वेदना को मिटाने की औषधि से युक्त है।

१२७६. अत्यधिक प्रेम सहित उनका मिलन उनके निष्प्रेम व्यवहार का स्मरण कराता है।

१२७७. शीतल स्वभाव से युक्त प्रियतम के वियोग को हम से पूर्व हमारी चूड़ियाँ ताड़ गयीं।

१२७८. कल ही छोड़ कर गये हमारे प्रियतम, पर मैं अपने शरीर पर सात दिनों का पीलापन व्याप्त पाती हूँ।

१२७९. प्रेयसी ने चूड़ियों को देख कर कोमल स्कन्धों को देखा, और फिर चरणों को—ये थे उस समय के उसके संकेत।

१२८०. नेत्रों से प्रेम-रोग को अभिव्यक्त करके (पृथक न होने की) याचना करने में स्त्री का स्त्रीत्व-विशेष माना जाता है।

129. புணர்ச்சி விதும்பல்

1281. உள்ளக் களித்தலும் காண மகிழ்தலும்
கள்ளுக்கில் காமத்திற்கு உண்டு.

1282. தினைத்துணையும் ஊடாமை வேண்டும் பனைத்துணையும்
காமம் நிறைய வரின்.

1283. பேணாது பெட்பவே செய்யினும் கொண்கனைக்
காணாது அமையல கண்.

1284. ஊடற்கண் சென்றேன்மன் தோழி அதுமறந்து
கூடற்கண் சென்றதுஎன் நெஞ்சு.

1285. எழுதுங்கால் கோல்காணாக் கண்ணேபோல கொண்கன்
பழிகாணேன் கண்ட இடத்து.

1286. காணுங்கால் காணேன் தவறாய காணாக்கால்
காணேன் தவறல் லவை.

1287. உய்த்தல் அறிந்து புனல்பாய் பவரேபோல்
பொய்த்தல் அறிந்துஎன் புலந்து.

1288. இளித்தக்க இன்னா செயினும் களித்தார்க்குக்
கள்அற்றே கள்வநின் மார்பு.

1289. மலரினும் மெல்லிது காமம் சிலர்அதன்
செவ்வி தலைப்படு வார்.

1290. கண்ணின் துனித்தே கலங்கினாள் புல்லுதல்
என்னினும் தான்விதுப்பு உற்று.

१२९. सम्भोगाभिलाषा

१२८१. स्मरण मात्र से सुख तथा दर्शन मात्र से आनन्द प्राप्त होता है प्रेम में, न कि मदिरा में।

१२८२. ताड़ के समान प्रेम उभरकर आता हो तो तिनका भर भी कलह न करना चाहिए।

१२८३. मेरा विचार न करके अपनी मनमानी करने पर भी प्रियतम को देखे बिना मेरे ये नेत्र अशाँत रहते हैं।

१२८४. हे सखी! मैं कलह करने के विचार से गयी, परन्तु उसे भूलकर मेरा हृदय उनसे मिलन करने पहुँच गया।

१२८५. लिखते समय नेत्र लेखनी को जैसे नहीं देखते वैसे ही प्रियतम को देखते ही उनके दोष मैं नहीं देखती।

१२८६. उनको देखते समय उनके दोष नहीं दिखते, और उनको न देखते समय उनके निर्दोष-व्यवहार नहीं दिखते।

१२८७. बाढ़ के भयंकर प्रवाह को समझकर भी उसमें कूदनेवाले के समान, समझकर भी झूठमूठ उनसे कलह करने में प्रयोजन ही क्या है?

१२८८. हे वंचक! अपयशप्रद विपत्तियों को उत्पन्न करने पर भी पियक्कड़ों के लिए मदिरा के समान है तुम्हारी छतियाँ।

१२८९. पुष्प से भी मृदुल होता है प्रेम। विरले ही उसकी वास्तविकता को समझकर उससे लाभान्वित होते हैं।

१२९०. नेत्रों में तो थी कलह भावना, परन्तु (मेरे वहाँ पहुँचते ही) अस्थिर हो मुझ [illegible] धिक वही गाढ़ालिंगन करने लगी।

130. நெஞ்சொடு புலத்தல்

1291. அவர்நெஞ்சு அவர்க்குஆதல் கண்டும் எவன்நெஞ்சே
நீஎமக்கு ஆகா தது.

1292. உறாஅ தவர்க்கண்ட கண்ணும் அவரைச்
செறாஅரெனச் சேறிஎன் நெஞ்சு.

1293. கெட்டார்க்கு நட்டாரில் என்பதோ நெஞ்சேநீ
பெட்டாங்கு அவர்பின் செலல்.

1294. இனிஅன்ன நின்னொடு சூழ்வார்யார் நெஞ்சே
துனிசெய்து துவ்வாய்காண் மற்று.

1295. பெறாஅமை அஞ்சும் பெறின்பிரிவு அஞ்சும்
அறாஅ இடும்பைத்துஎன் நெஞ்சு.

1296. தனியே இருந்து நினைத்தக்கால் என்னைத
தினிய இருந்ததுஎன் நெஞ்சு.

1297. நாணும் மறந்தேன் அவர்மறக் கல்லாஎன்
மாணா மடநெஞ்சில் பட்டு.

1298. எள்ளின் இளிவாம்என்று எண்ணி அவர்திறம்
உள்ளும் உயிர்க்காதல் நெஞ்சு.

1299. துன்பத்திற்கு யாரே துணையாவார் தாம்உடைய
நெஞ்சம் துணைஅல் வழி.

1300. தஞ்சம் தமர்அல்லர் ஏதிலார் தாம்உடைய
நெஞ்சம் தமர்அல் வழி.

१३०. हृदय पर क्रोध

१२९१. हे हृदय! प्रियतम के हृदय को उनका साथ देता हुआ देखकर भी तू मेरा साथ क्यों नहीं देता?

१२९२. हे हृदय! तुझ से प्रेम न करनेवाले प्रियतम को देखते ही, यह समझकर भी कि वे विना मिले न रहेंगे, तू उनसे मिल ही जाता है।

१२९३. हे हृदय! क्या तू इच्छानुसार यह समझकर उनके पीछे चल पड़ता है कि भाग्यहीन का कोई सुहृद नहीं होता?

१२९४. हे हृदय! तू प्रणय-कलह के प्रतिफल को समझ नहीं पाता। फिर तेरे साथ ऐसा कौन करेगा?

१२९५. प्रियतम के दूर रहने पर अप्राप्ति का भय और साथ रहने पर वियोग का भय ही मुझे लगा रहता है। इस प्रकार मेरा हृदय सदा दुविधा में पड़ा रहता है।

१२९६ एकांत में मैं उनका स्मरण करूँ तो मेरा हृदय मुझे खा ही डालना चाहता है।

१२९७. उन्हें न भूलनेवाले गौरवच्युत एवं पागल हृदय के साथ मिलकर मैं अपनी (स्त्रियोचित) लज्जा भी खो बैठी।

१२९८. उनकी निन्दा में अपना ही अपयश मानकर मेरा प्राण-प्रिय हृयद उनके श्रेष्ठ गुणों का ही स्मरण करता है।

१२९९. विपत्ति के समय अपना ही हृदय अगर साथ न देता हो तो और कौन साथ देगा?

१३००. अपना ही हृदय साथ नहीं देता तो दूसरों का हमारा साथ न देना स्वाभाविक ही है।

131. புலவி

1301. புல்லாது இராஅப் புலத்தை அவர்உறும்
அல்லல்நோய் காண்கம் சிறிது.

1302. உப்புஅமைந் தற்றால் புலவி அதுசிறிது
மிக்கற்றால் நீள விடல்.

1303. அலந்தாரை அல்லல்நோய் செய்தற்றால் தம்மைப்
புலந்தாரைப் புல்லா விடல்.

1304. ஊடி யவரை உணராமை வாடிய
வள்ளி முதல்அரிந் தற்று.

1305. நலத்தகை நல்லவர்க்கு ஏஎர் புலத்தகை
பூவன்ன கண்ணார் அகத்து.

1306. துனியும் புலவியும் இல்லாயின் காமம்
கனியும் கருக்காயும் அற்று.

1307. ஊடலின் உண்டுஆங்குஓர் துன்பம் புணர்வது
நீடுவது அன்றுகொல் என்று.

1308. நோதல் எவன்மற்று நொந்தார்என்று அஃதுஅறியும்
காதலர் இல்லா வழி.

1309. நீரும் நிழலது இனிதே புலவியும்
வீழுநர் கண்ணே இனிது.

1310. ஊடல் உணங்க விடுவாரோடு என்நெஞ்சம்
கூடுவேம் என்பது அவா.

१३१. प्रणय-कलह

१३०१. प्रणय-कलह की पीड़ा (के लक्षण) उनमें ज़रा देखने के लिए आलिंगन किये बिना रहो।

१३०२. भोजन में नमक की मात्रा के समान होता है प्रणय-कलह; वह अधिक होने लगे तो बढ़ने न दो।

१३०३. अपनी उस कुपिता का तुम आलिंगन न करोगे तो दुखिया को और अधिक दुःख पहुँचाने के समान ही होगा।

१३०४. जो प्रणय-कलह किये बैठी है उसके भाव को न समझना मुरझायी हुई लता का मूलोच्छेद करने के समान है।

१३०५. सद्गुणी-सज्जन की शोभा सुमन-नयनी के मन में उत्पन्न होनेवाले प्रणय-कलह में ही है।

१३०६. छोटे-बड़े प्रणय-कलह न हों तो प्रेम अधिक पके व अधकच्चे फल के समान रह जायगा।

१३०७. प्रणय-कलह में एक दुखद आशंका यह रहती है कि मिलन-सुख कहीं अस्थाई न रह जाय।

१३०८. वेदना को समझनेवाले प्रियतम की अनुपस्थिति में मेरे दुखित होने से क्या लाभ ?

१३०९. जल भी छाया का ही मधुर होता है। प्रणय-कलह भी प्रियतम के साथ ही मधुर होता है।

१३१०. मेरे प्रणय-कलह को मुरझा जाने के लिए छोड़ बैठनेवाले के साथ मेरा हृदय मिलन का प्रयत्न करता है तो यह उसकी तीव्र इच्छा ही है।

132. புலவி நுணுக்கம்

1311. பெண்இயலார் எல்லாரும் கண்ணின் பொதுஉண்பர்
நணணேன் பரததநின் மார்பு.

1312. ஊடி இருந்தேமாத் தும்மினூ யாம்தம்மை
நிடுவாழ்க என்பாககு அறிநது.

1313. கோட்டுப்பூச சூடினும் காயும் ஒருத்தியைக்
காட்டிய சூடினிர் என்று

1314. யாரினும் காதலம் என்றேனு ஊடினுள்
யாரினும் யாரினும் என்று.

1315. இம்மைப பிறப்பில் பிரியலம் என்றேனுக
கண்நிறை நீர்கொண் டனள்.

1316. உள்ளினேன் என்றேன்மற்று என்மறந்தீர் என்றுஎன்னைப்
புல்லாள் புலத்தக் கனள்.

1317. வழுததினுள் தும்மினே னுக அழிதது அழுதாள்
யார்உள்ளித் தும்மினீா என்று.

1318. தும்முச் செறுப்ப அழுதாள் நுமர்உள்ளல்
எம்மை மறைததிரோ என்று.

1319. தன்னை உணர்த்தினும் காயும் பிறர்க்குநீர்
இந்நீரர் ஆகுதிர் என்று.

1320. நினைத்திருந்து நோக்கினும் காயும் அனைத்துநீர்
யார்உள்ளி நோக்கினீர் என்று.

१३२. प्रणय-कलह की सूक्ष्मता

१३११. हे दुराचारी! सभी स्त्रियाँ तुम्हें सामान्य मानकर नेत्रों से तुम्हारा रस-पान कर रहीं हैं। मैं तुम्हारी छाती से न लगूँगी।

१३१२. प्रणय-कलह में थी कि वे छींक* बैठे, मानो इस विचार से कि मैं उनके दीर्घ-जीवन के लिए आशिष दूँगी।

१३१३. सुमन-माला पहनूँ भी तो रुष्ट हो कहती है कि किसी और को दिखाने के लिए आपने इन्हें पहना है।

१३१४. मैंने कहा—"मुझे और किसी से प्रेम नहीं है" तो वह रुष्ट होकर पूछने लगी "और किस से, और किस से?"

१३१५. मैंने कहा—"इस जन्म में कभी अलग न होंगे", तो उसके नेत्र सजल हो उठे (कि कदाचित् आगामी जन्म में कहीं अलग न हो जायें)।

१३१६. मैंने कहा, "तुम्हारा ही स्मरण किया"। वह रूठकर "तो मुझे आप पहले क्यों भूले रहे" कहकर आलिंगन किये बिना प्रणय-कलह करती हुई अलग बैठ गयी।

१३१७. ज़रा मुझे छींक आ गयी। "बधाई!" कहकर वह रोती हुई पूछने लगी कि किसके स्मरण करने के कारण यह छींक आयी?"

१३१८. आती हुई छींक को मैंने दबा लिया। वह रोती हुई कहने लगी—"अपनी किसी प्रिया के स्मरण को मुझ से छिपाते हैं?"

१३१९. (रूठी हुई प्रेमिका को) प्रेम से समझा कर प्रसन्न करने पर भी वह और रूठकर कहने लगी—"दूसरों को आप इसी प्रकार प्रसन्न करते होंगे!"

१३२०. उसके प्रेम-व्यवहारों के स्मरण के साथ सप्रेम उसे निहारूँ तो भी वह रुष्ट हो पूछती है कि और किससे (मेरे सर्वांगों की) तुलना करने के विचार से सब को ध्यान से देख रहे हैं?"

---

* छींक आने पर माना जाता है कि किसी ने छींकनेवाले व्यक्ति का स्मरण किया है।

133. ஊடலுவகை

1321. இல்லை தவறுஅவர்க்கு ஆயினும் ஊடுதல்
வல்லது அவர்அளிக்கு மாறு.

1322 ஊடலில் தோன்றும் சிறுதுனி நல்லளி
வாடினும் பாடு பெறும்.

1323. புலத்தலின் புத்தேள்நாடு உண்டோ நிலத்தொடு
நீர்இயைந் தன்னார் அகத்து.

1324. புல்லி விடாஅப் புலவியுள் தோன்றும்என்
உள்ளம் உடைக்கும் படை.

1325. தவறுஇலர் ஆயினும் தாம்வீழ்வார் மென்தோள்
அகறலின் ஆங்குஒன்று உடைத்து.

1326. உணலினும் உண்டது அறல்இனிது காமம்
புணர்தலின் ஊடல் இனிது.

1327. ஊடலில் தோற்றவர் வென்றார் அதுமன்னும்
கூடலில் காணப் படும்.

1328. ஊடிப் பெறுகுவம் கொல்லோ நுதல்வெயர்ப்பக்
கூடலில் தோன்றிய உப்பு.

1329. ஊடுக மன்னோ ஒளிஇழை யாம்இரப்ப
நீடுக மன்னோ இரா.

1330. ஊடுதல் காமத்திற்கு இன்பம் அதற்குஇன்பம்
கூடி முயங்கப் பெறின்.

१३३. प्रणय-कलह का आनन्द

१३२१. उनमें दोष न होने पर भी प्रणय-कलह उनका प्रेम अधिक मात्रा में दिला सकता है।

१३२२. प्रेम के किंचित मात्र मुरझाने पर भी प्रणय-कलह से उत्पन्न लघु पीड़ा प्रशंसनीय ही होती है।

१३२३. पृथ्वी और जल जैसा सामंजस्य प्राप्त पति-पत्नी के लिए प्रणय-कलह से बढ़कर स्वर्ग-लोक और कोई हो सकता है?

१३२४. निरन्तन प्रेमालिंगन के साधक उस प्रणय-कलह में मेरे हृदय को टूक-टूक करनेवाला शस्त्र उपस्थित प्रतीत होता है।

१३२५. निर्दोष होने पर भी आलिंगन करनेवाली प्रेमिका के कोमल स्कन्ध (प्रणय-कलह के फलस्वरूप) अलग रहने में कुछ (अनुपम रस) होता है।

१३२६. भोजन करने से अधिक उसका पचना आनन्ददायक होता है। प्रेम में भोग से अधिक प्रणय-कलह आदन्ददायक होता है।

१३२७. प्रणय-कलह में पराजित ही विजयी होते हैं। यह पुनर्मिलन में देखा जा सकता है।

१३२८. लिलाट पर स्वेद-कण उत्पन्न करनेवाले सम्भोग से जनित लवण (रस) क्या प्रणय-कलह के फलस्वरूप पुनः प्राप्त न होगा?

१३२९. प्रकाशपूर्ण भूषणों से युक्त मेरी प्रणयिनी प्रणय-कलह करती रहे। रात लम्बी होती रहे कि मैं प्रेम-याचना करता रहूँ।

१३३०. प्रेम का आनन्द प्रणय-कलह में है, और प्रणय-कलह का आनन्द पुनः मिलकर प्रेमालिंगन होने में है।

பாட்டு முதற் குறிப்பு

(எண-பாட்டு எண்)